ISSN 2349-6614

जुलाई, 2018

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

मुफ्ती से मुक्त घाटी, दिल्ली से दबेगा 'अमन' का बटन

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 16 अंक 5 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

जीवन के उन ख़ास पलों के लिए...
शादी के सुनहरे पलों को यादगार बनाने के लिए डी.पी. ज्वेलर्स पेश करते हैं डिजाइनर वेडिंग ज्वेलरी कलेक्शन। अद्भुत कारीगरी के बेजोड़ गहने... ख़ास आपके लिए।
DESIGNER
Wedding Jewellery
www.dpjewellers.com
DP
D.P. Jewellers
A BOND OF TRUST SINCE 1940
A VENTURE OF D.P. ABHUSHAN LIMITED
RATLAM | INDORE | UDAIPUR | BHOPAL
22 कैरेट (916) की शुद्धता 22 कैरेट (916) के दाम
सर्टिफाइड डायमंड ज्वेलरी मात्र ₹5000 से शुरू
क्रेडिट/डेबिट कार्ड से ज्वेलरी खरीदने पर 0% प्रोसेसिंग चार्जेस
शुद्ध चांदी के आभूषण व बर्तन उपलब्ध
100% बाय-बैक गोल्ड/डायमंड वेल्यु पर
फ्री ज्वेलरी इंश्योरेंस की सुविधा
SWARN SAMRIDDHI SCHEME
छोटी बचत... बड़ी समृद्धि
DAZZLING DIAMOND SAVING SCHEME
Don't dream about Diamond Jewellery...Buy it!
YOUR BEST INVESTMENT IN SCINTILLATING SAVINGS
◆ रतलाम : 138, चाँदनी चौक, फोन: 07412-408899 ◆ इंदौर : राजानी भवन के पास, वाय. एन. रोड, फोन: 0731-4099996
◆ उदयपुर : 17, न्याय मार्ग, कोर्ट चौराहा, फोन: 0294-2418712/13 ◆ भोपाल : 16, मालवीय नगर, राजभवन रोड, बापू की कुटिया के सामने, फोन: 0755-3032300

Nikunj Bhatt
+919414163030
Neeraj Bhatt
+919414343555
Shiv Bartan & Caterers
■ बिस्तर, बर्तन ■ हलवाई व्यवस्था ■ गीली दाल ■ काजू की पिसाई ■ कॉफी मशीन व एक्स्ट्रा काउन्टर की व्यवस्था ■ पत्तल-दोने ■ डिस्पोजेबल आइटम ■ नेपकिन फ्यूल के विक्रेता
Sutharwara, North Ayad,
Udaipur - 313001 (Raj.)
Phone :- 0294-2410237
Tele/Fax : +91 294 2410237
Email : shivbartan@gmail.com
Website : shivbartancaterers1.getit.in

जुलाई
2018
वर्ष 16, अंक 5

प्रत्यूष

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

अन्दर के पृष्ठों पर...

8 गठबंधन

मोदी 'रथ' रोकने का 'मनोरथ'

10 उपचुनाव

कैराना की प्रयोगशाला से मिला 'टॉनिक'

14 प्रसंगवश

तेल सस्ता होने के अच्छे दिन गए

30 संघे शक्ति

प्रणब हुए मुखरजी, पिलाई 'राष्ट्रवाद' की घुट्टी

32 पलायन

गृहस्थ संत ने की खुदकुशी

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs
कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुहालका

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 2410659

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : ओम शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग बेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सरिता राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फैक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष वापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

लेटेस्ट फोटोन व मोलिक्यूलर तकनीक से सटीक डायग्नोस्टिक जांचे

अर्थ डायग्नोस्टिक्स चिकित्सा के क्षेत्र में लाया हैं नई तकनीक

डॉ. अरविन्दर सिंह (गोल्ड मेडलिस्ट) CEO एवं CMD
अर्थ डायग्नोस्टिक्स MBBS, MD, MBA (HM) Oxford U.K.

अर्थ डायग्नोस्टिक्स गंभीर बीमारियों के सफल इलाज के लिए उदयपुरवासियों के लिए मोलिक्यूलर एवं फोटोन तकनीक लाया है, जिससे शरीर के सूक्ष्म से सूक्ष्म अणु की भी जांच रिपोर्ट कुछ घंटों में आ सकेगी। इससे गंभीर बीमारियों का पता भी चल सकेगा ताकि समय पर सही इलाज हो सके। इस तकनीक से होने वाले लाभों के बारे में अर्थ डायग्नोस्टिक्स के सीईओ एवं सीएमडी एवं आईआईएम व ऑक्सफोर्ड यूके से गोल्ड मेडलिस्ट डॉ. अरविन्दर सिंह से 'प्रत्यूष' की बातचीत के प्रमुख अंश।

प्र.1 मोलिक्यूलर एवं फोटोन तकनीक से क्या मतलब है?

उत्तर : हमारा शरीर अत्यन्त सूक्ष्म कोशिकाओं से निर्मित है। उन सूक्ष्म कोशिकाओं में भी अत्यन्त सूक्ष्म अणु होते हैं। इस नई तकनीक द्वारा सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतम अणु स्तर पर होने वाली बीमारियों को गहनता से डायग्नोसिस किया जा सकता है।

प्र.2 इस तकनीक से मरीजों को क्या लाभ होगा?

उत्तर : सही इलाज के लिए सही डायग्नोसिस जरूरी है। बिना सही डायग्नोसिस के इलाज दिशाहीन हो जाता है और दवाईयों का अनावश्यक खर्चा और साइड इफेक्ट होता है। अत: यह आवश्यक है कि प्रारम्भिक स्तर पर ही बीमारियों को पकड़ा जा सके और समय पर इलाज से रोग को जड़ से ठीक किया जा सके।

प्र.3 इस तकनीक का प्रयोग कहां-कहां हो रहा है?

उत्तर : यह तकनीक विदेशों में तो पिछले दस वर्ष से प्रचलित है। भारत में बड़े सेन्टर्स जैसे कि एम्स, टाटा हॉस्पिटल, लीलावती, बीचकेन्डी और अन्य ख्यातिनाम सेन्टर्स पर उपलब्ध है। अर्थ डायग्नोस्टिक्स इस तकनीक को उदयपुर इसलिए लाया है ताकि उदयपुर व आसपास के क्षेत्रों को भी इस तकनीक से लाभान्वित किया जा सके।

प्र.4 फिर तो यह तकनीक महंगी होगी?

उत्तर : अच्छी चीज हमेशा महंगी होती है लेकिन अर्थ डायग्नोस्टिक्स में हमेशा इस बात का ध्यान रखा गया है कि बेहतर से बेहतर टेक्नोलॉजी सही कीमत में उपलब्ध कराई जाए। इसका ध्यान रखते हुए इस तकनीक के लिए किसी भी प्रकार का कोई अलग शुल्क नहीं लिया जाएगा अपितु मेट्रो व बड़े शहरों की तुलना में यह तकनीक हमारे केन्द्र पर आधी से भी कम दर में उपलब्ध कराई जाएगी।

प्र.5 'अर्थ' में मरीजों के लिए क्या विशेष है जो इसको बाकी सेन्टर्स से अलग करता है?

उत्तर : हमारे यहां ऑनलाईन रिपोर्ट, एसएमएस रिपोर्टिंग, ई-मेल रिपोर्टिंग उपलब्ध है। हमारे यहां पर खास प्रकार के हेपा फिल्टर स्थापित किये गये हैं ताकि किसी मरीज का इन्फेक्शन किसी और मरीज को फैलने से रोका जा सके।

इस प्रकार अर्थ डायग्नोस्टिक्स न सिर्फ मरीजों के हित का ध्यान रखता है अपितु डिजिटल व स्मार्ट इण्डिया के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति की ओर भी अग्रसर है।

अर्थ डायग्नोस्टिक्स के विशेषज्ञ

डॉ. परेश गुप्ता
कंसल्टेंट रेडियोलोजिस्ट
MBBS, DNB

डॉ. राजेन्द्र कच्छावा
डायरेक्टर एवं विभागाध्यक्ष
MBBS, MD
(रेडियो डायग्नोसिस)

डॉ. चन्दन के अग्रवाल
कंसल्टेंट रेडियोलोजिस्ट
MBBS, MD

डॉ. खुर्शीद अहमद
डायरेक्टर एवं कंसल्टेंट
(इम्योनोलोजी विभाग)
M.Sc. P.hd.
(भाभा एटॉमिक रिसर्च सेन्टर)

- हमें पूर्ण विश्वास है कि मोलिक्यूलर एवं फोटोन तकनीक द्वारा उदयपुरवासी स्वस्थ व निरोगी रहेंगे तथा डायग्नोसिस के क्षेत्र में यह तकनीक मील का पत्थर साबित होगी।
- अर्थ डायग्नोस्टिक्स क्वालिटी मानकों हेतु ना केवल इण्डियन काउंसिल ऑफ इण्डिया कंट्रोल से प्रमाणित है अपितु विभिन्न राज्य स्तरीय तथा उदयपुर सम्भाग में उत्कृष्ट सेवा हेतु अवार्ड्स व सम्मान प्राप्त कर चुका है।
- अर्थ डायग्नोस्टिक्स ने उदयपुरवासियों को हमेशा बेहतरीन टेक्नोलॉजी द्वारा रोगों के निदान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मोलिक्यूलर व फोटोन तकनीक उदयपुर में लाकर डायग्नोस्टिक्स के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण आयाम स्थापित किया है।

4-सी, एपेक्स चेम्बर, भारतीय लोक कला मण्डल के पीछे, मधुबन, उदयपुर

Contact : 7410980980, 7073308880, 7073818880, 7410970970, 7725992990,www.arthdiagnostics.com

क्या वास्तव में विपक्ष एक हो गया?

कर्नाटक विधानसभा के चुनाव में बहुमत से मात्र सात सीट दूर भारतीय जनता पार्टी से तीसरे पायदान पर खड़ी जेडीएस ने ताज छीन कर अपने माथे शोभायमान कर दिया। यह संभव हो पाया 'बिचौलिया' यानी कांग्रेस के सहयोग से। भाजपा का कांग्रेस मुक्त भारत का दंभ कर्नाटक में चूर-चूर हो गया। कांग्रेस ने उसे इस कदर मसला कि वह कसक भूल नहीं पायेगी। कर्नाटक में 222 सदस्यीय विधानसभा चुनाव में मात्र 37 सीटें जीतने वाली जेडीएस के कुमार स्वामी कांग्रेस के सहयोग से मुख्यमंत्री बन गए। उनके शपथ समारोह में भाजपा विरोधी मित्र दलों के नेताओं ने हाथ से हाथ मिलाकर अपनी एकजुटता के साथ भारतीय जनता पार्टी को संदेश दिया कि सन् 2019 का चुनाव उसके लिए आसान नहीं होगा। बिहार में लालू यादव-नीतीश कुमार के बीच तलवारें खिंचने के बाद खण्ड-खण्ड महागठबंधन के बिखरा को कर्नाटक मंच से सींचने की फिर से जो कोशिश शुरू हुई है, उस पर हर देशवासी दिमाग पर जोर डालकर किसी नतीजे पर पहुंचने के लिए उतावला है। वह इकट्ठा हुए राजनैतिक दलों के पुराने फेल-फितूर, आचरण, परस्पर असहयोग और अविश्वास के ताने-बाने को जोड़ता हुआ सोच रहा है कि 'क्या वास्तव में विपक्ष एक हो गया?' कर्नाटक की ही बात करें। मात्र 37 सीटों वाले कुमारस्वामी 78 सीटें जीतने वाली कांग्रेस को समर्थन देने के लिए तैयार नहीं थे, भाजपा को रोकने के लिए कांग्रेस को मन मसोस कर हाथ मिलाना पड़ा। कुमार स्वामी ने कांग्रेस को मुख्यमंत्री पद न देकर साबित कर दिया कि दोनों सिर्फ सत्ता के लिए मिले हैं। यदि कांग्रेस दो-चार सीटें पीछे होती तो यही कुमार 'कमलासन' होते दिखाई देते। जहां इनके स्वार्थ टकरायेंगे वहां ये अलग रास्ते जाने में भी देर नहीं करेंगे। हालांकि कांग्रेस को इस बात के लिए तारीफ करनी पड़ेगी कि 'देर आयद-दुरुस्त आयद' यानी कर्नाटक में बड़े भाई की भूमिका का निर्वाह कर उसने विपक्ष की एकता के अवसर का निर्माण जरूर कर दिया है। देखना यह है कि एकता की यह तस्वीर कब तक सत्ता-स्वार्थ की गर्द से बची रहती है। कालमार्क्स की जयंती के लंदन कार्यक्रम से लौटे सीताराम येचुरी ने एक इन्टरव्यू में तृणमूल कांग्रेस और भाजपा को एक ही सिक्के के दो पहलू कहा है। यही येचुरी कर्नाटक के मंच पर भी उपस्थित थे, जिसमें तृणमूल नेता व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी मौजूद थी।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि राष्ट्र निर्माण के संकल्पों की सिद्धी के लिए जिस तरह एक मजबूत सरकार की आवश्यकता होती है, उसी तरह प्रचण्ड बहुमत के मद में बौराई किसी सरकार को सर्वसत्तावादी बनने से रोकने के लिए एक मजबूत विपक्ष भी जनतंत्र की सफलता की पहली शर्त है। नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 2014 में नई भाजपा ने नए भारत के निर्माण की घोषणा के साथ न केवल केन्द्रीय सत्ता को अपने हाथ में लिया बल्कि अनेक राज्यों से कांग्रेस एवं अन्य दलों की सरकारों को चुनाव में बेदखल कर उन्हें भगवां में रंग दिया। ढेरों अप्रिय निर्णयों के बावजूद मोदी की सफलता का कारवां बढ़ता रहा और विपक्ष हाशिये पर जाता रहा। अच्छे दिनों के सपने दिखाकर ही मोदी भाजपा को सत्ता में लाने में सफल हुए थे। पिछले चार साल में कई विवादास्पद निर्णयों के बावजूद वे जनमानस में बने रहे। ऐसा इसलिए भी हुआ क्योंकि विपक्ष कमजोर था और कोई दूसरा नेता उनकी बराबरी में नहीं था। वह नीतियों और मुद्दों पर बहस से परहेज करता हुआ वैयक्तिक हमलों से सरकार की नींव को हिलाने पर आमादा था। यह पहला मौका नहीं है कि विपक्ष प्रभाहीनता के दौर में है। ऐसी स्थिति देश की आजादी के बाद हुए दो-तीन चुनावों में भी थी और ऐसे में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल ने अपनी पार्टी (कांग्रेस) के सांसदों को चेताया भी था कि - **'विपक्ष कमजोर है, इसलिए जरूरी है कि हम खुद ही अपना विपक्ष भी बनें। हममें से ही कुछ को सरकार के कामकाज पर लगातार नजर रखनी होगी, अन्यथा सरकार के उच्छृंखल होने का खतरा है। ऐसी स्थिति जनतंत्र के लिए घातक हो सकती है।'**

राजनैतिक दल मात्र सत्ता पर ही नजर गड़ाए नहीं रखें, उन्हें देश की जनता के योगक्षेम का दायित्व भी ठीक से निभाना होगा। आज यदि जनता के कुछ अनुत्तरित सवाल अथवा समस्याएं हैं तो उसका एक कारण विपक्ष का कमजोर और बटा होना भी है। तीन साल पहले विपक्षी एकता के जरिए मैदान मार लेने का जो प्रयोग बिहार विधानसभा चुनाव के दौरान हुआ था, वह आज पस्त पड़ा है।

उस समय भी गैर-भाजपाई दलों ने कर्नाटक के मंच की ही तरह एक साथ खड़े होकर भाजपा को मात देने में जो सफलता हासिल की थी, उस एकता के सूत्रधार कहें या नायक, नीतीश कुमार अब पटना में भाजपा के समर्थन से चल रही सरकार के मुख्यमंत्री हैं। ऐसे में विपक्ष की एकता की कवायद पर सवाल उठने स्वाभाविक हैं। पिछले साल अगस्त के अन्तिम सप्ताह में बिहार (पटना) में एक बार फिर महागठबंधन ने **'देश बचाओ-भाजपा भगाओ'** नारे के साथ राजद द्वारा आयोजित एक रैली में एकजुटता दिखाई थी। जिसमें भाजपा राज की अनेक विफलताओं का उल्लेख तो तृणमूल कांग्रेस की ममता बनर्जी, सपा के अखिलेश यादव, कांग्रेस के गुलाम नबी आजाद, जद (यू) के बगावती नेता शरद यादव जैसे दिग्गजों ने किया, लेकिन भ्रष्टाचार के मामले में कुछ कहने के लिए जुबान ने उनका साथ नहीं दिया। इसलिए कि रैली के आयोजक लालू यादव थे। जिनका परिवार तब भी और आज भी भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरा हुआ है। तब भी उम्मीद की गई थी कि यह एकजुटता और विपक्ष का तेवर लगातार बनता रहेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अलबत्ता हाल में कुछ विधानसभा व लोकसभा सीटों पर हुए उप चुनाव में मायावती व अखिलेश यादव की बुआ-भतीजे वाली रिश्तेदारी की चतुराई काम कर गई और भाजपा को कुछ महत्वपूर्ण सीटों पर करारी हार झेलनी पड़ी। एकता का यही प्रयोग कर्नाटक में किया गया जो सफल हो गया। लेकिन फिर सवाल यही उठता है कि यह एकता सिर्फ सत्ता की जोड़-तोड़ के लिए है अथवा उस जनता के योग क्षेम की फिक्र का भी उसमें समावेश है, जो आज भी अफसरशाही, भ्रष्टाचार, अराजकता और महंगाई की मार झेलते हुए सहज-सामान्य जीवन से दूर है।

विश्वनाथ सचदेव

टूटे रिश्ते

'महबूबा' से मुक्त हुई भाजपा

-सुनील पंडित

'जन्नत' में कायम हुआ राज्यपाल का राज

तमाम कशमकश के बाद भाजपा की ओर से जम्मू-कश्मीर में पीडीपी से अचानक समर्थन वापस लेने और सीएम महबूबा मुफ्ती के इस्तीफे के साथ ही विपरीत वैचारिक ध्रुव वाला बेमेल गठबंधन टूट गया। राज्य में 19 जून से राज्यपाल का राज कायम हो गया। गठबंधन टूटने और सीएम के इस्तीफे के बाद राज्यपाल एनएन वोहरा ने अपनी रिपोर्ट में राष्ट्रपति को सिफारिश भेजी थी, जिसे मंजूरी मिल गई। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने गृहमंत्री को राज्यपाल शासन का आदेश सुबह 6 बजे उस वक्त दिया जब वे प्लेन में थे। जम्मू-कश्मीर में पिछले 10 साल में 4 बार राज्यपाल शासन लगा। सत्तारूढ़ बीजेपी-पीडीपी के तीन साल बाद 18 जून को अलग होने से एक अध्याय का खात्मा हुआ। इसे संकट भी कह सकते हैं और समाधान की दशा में एक कदम भी। राज्य में जो हालात थे, उन्हें देखते हुए इस सरकार को आगे और घसीटने का कोई मतलब नहीं था। बेशक राष्ट्रपति शासन के मुकाबले लोकतांत्रिक सरकार की उपादेयता ज्यादा है, पर सरकार डेढ़ टांग से नहीं चल सकती। पिछले तीन साल में कई ऐसे मौके आए जब गठबंधन टूट सकता था। इतना तो साफ है कि रमजान के महीने के युद्ध विराम की विफलता के कारण वहां सरकार को हटना पड़ा। सवाल यह है कि केंद्र सरकार अब क्या करेगी? क्या कठोर कार्रवाई के रास्ते पर बढ़ेगी या बातचीत की राह पकड़ेगी? उम्मीद करें कि जो भी होगा, बेहतर होगा। सरकार से इस्तीफा देने के बाद महबूबा ने कहा कि हमारे गठबंधन का बड़ा मकसद था। हमने सब कुछ किया। हमारी कोशिश से पीएम लाहौर तक गए। हमने राज्य की विशेष स्थिति को बनाए रखा। हमने यह भी कोशिश की कि सूबे में हालात बेहतर बनें, पर यहां जोर जबर्दस्ती की नीति नहीं चलेगी। उनके इन शब्दों में बीजेपी के प्रति कटुता तो नहीं लेकिन पत्थरबाजों के प्रति सॉफ्ट कॉर्नर जरूर था। केंद्र की पहली जिम्मेदारी कानून-व्यवस्था की स्थिति को सामान्य बनाने की है। बीजेपी यदि पीडीपी के साथ सरकार में बनी रहती तो समर्थकों में नाराजगी बढ़ेगी। यह भी साफ है कि बीजेपी कश्मीर का बोझ अपने ऊपर लेकर अगला लोकसभा चुनाव नहीं लड़ना चाहती। फिलहाल अब इतना बदलाव होगा कि प्रशासन के दो स्वर नहीं होंगे। चुनाव की बेला भी करीब आ रही है। इस लिहाज से कश्मीर में कम से कम एक-डेढ़ साल का संधिकाल निर्धारित हो गया है, जो राष्ट्रपति शासन के जिम्मे रहेगा। विधानसभा का कार्यकाल दिसंबर 2020 तक है। ऐसे में वहां अगले ढाई साल तक राष्ट्रपति शासन भी उचित नहीं होगा, पर चुनाव कराने से पहले यह भी देखना होगा कि वहां चुनाव के लायक हालात हैं भी या नहीं। पत्रकार शुजात बुखारी की हत्या और नियंत्रण रेखा पर लगातार बिगड़ते हालात को देखते हुए एक बार तो सख्त कदम उठाने की जरूरत है। अमरनाथ यात्रा भी जल्दी ही शुरू होने वाली है। सेना पर सुरक्षा की जिम्मेदारी है। कश्मीर की गठबंधन सरकार अजूबा ही थी। दो विपरीत विचारधाराओं वाली पार्टियों द्वारा करीब साढ़े तीन साल तक सरकार चलाना आसान नहीं था। यह भी सच है कि निकट भविष्य में ऐसी सरकारें ही बनेंगी और कम से कम तब तक बनेंगी जब तक कोई अकेली ऐसी पार्टी सामने न आए जो जम्मू-घाटी में समान रूप से लोकप्रिय हो। भारत का सबसे बड़ा अंतर्विरोध जम्मू-कश्मीर में है। कश्मीर एक जटिल समस्या है। राज्य की जनता अलग-अलग तरह से सोचती है, पर स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव ही यहां एकमात्र विकल्प हैं।

कब-कब रहा राज्यपाल का शासन

जम्मू-कश्मीर में पिछले चार दशकों में आठ बार राज्यपाल शासन लगा

- पहला : 26 मार्च, 1977 से 9 जुलाई 1977
- दूसरा : 06 मार्च 1986 से 7 नवंबर 1986
- तीसरा : 19 जनवरी 1990 से 09 अक्टूबर 1996
- चौथा : 18 अक्टूबर 2002 से 02 नवंबर 2002
- पांचवां : 11 जुलाई 2008 से 05 जनवरी 2009
- छठा : 08 जनवरी 2015 से 01 मार्च 2015
- सातवां : 07 जनवरी 2016 से 04 अप्रैल 2016
- आठवां : 20 जून 2018 से लागू

वानी का खामियाजा पीडीपी ने भुगता

2016 ही वो साल था जब केंद्र ने जम्मू कश्मीर में उग्रवाद के खिलाफ अपने अभियान तेज किए और जुलाई में यानी महबूबा के मुख्यमंत्री बनने के तीसरे महीने में बुरहान वानी मारा गया। इसके बाद घाटी में माहौल ने हिंसक मोड़ लिया और बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए, जिनमें कई लोग मारे गए। सेना उग्रवादियों को मार तो रही थी लेकिन उनकी भर्ती पर अंकुश नहीं लग पा रहा था। अपनों को खोते देख स्थानीय लोगों में सरकार और खासकर पीडीपी के लिए काफी गुस्सा जमा होने लगा। 2018 के जनवरी में कठुआ में वीभत्स गैंगरेप हुआ जिसके बाद भाजपा के दो मंत्रियों ने आरोपियों के समर्थन में रैली

निकाली। इसके चलते भी घाटी में पीडीपी को काफी गुस्सा झेलना पड़ा। खबरें आईं कि पीडीपी इस मुद्दे पर सरकार से अलग भी हो सकती है। तब भाजपा ने अपने दोनों मंत्रियों के इस्तीफे करवा दिए लेकिन भाजपा और पीडीपी दोनों में अंदरखाने खटपट चलती रही। कुछ जानकार ये भी बताते हैं कि महबूबा लगातार भाजपा पर दबाव बना रही थीं कि केंद्र कश्मीर में एकतरफा संघर्ष विराम का ऐलान करें और पाकिस्तान व अलगाववादियों से कश्मीर मसले पर बात करे। लेकिन भाजपा इन सारे मसलों पर 'पोजीशन ऑफ स्ट्रेंथ' से डील करना चाहती है। क्योंकि उसे देश की राजनीति में अपना झंडा बुलंद रखना है। लोकसभा चुनाव सिर पर हैं और भाजपा 'राष्ट्रीय सुरक्षा' के मुद्दे पर समझौता करती नहीं दिखना चाहती थी। इससे पीडीपी और भाजपा में दूरी बढ़ती रही।

यह भी एक वजह

इस साल रमजान के दौरान 17 सालों में पहली बार घाटी में एक तरफा संघर्ष विराम का ऐलान हुआ लेकिन इस दौरान उग्रवादियों के लगातार हमले हुए। फौजी औरंगजेब को अगवा करके मारा गया और राइजिंग कश्मीर के संपादक शुजात बुखारी की दिन दहाड़े हत्या कर दी गई। इससे संघर्ष विराम के विरोधियों को उसे असफल बताने का मौका मिल गया। महबूबा मुफ्ती चाहती थी कि संघर्ष विराम चलता रहे लेकिन केंद्र ने उसे रमजान के बाद खत्म कर दिया। तभी से जम्मू कश्मीर के अलग-अलग मुद्दों पर केंद्र और भाजपा लगातार बैठकें कर रहे थे। भाजपा में ये राय बन रही थी कि कश्मीर से जुड़े मसलों में महबूबा मुफ्ती को मिला फ्री-हैंड जम्मू में भाजपा के वोटर को नाराज कर रहा है। 19 जून, 2018 को दिल्ली में 15 भाजपा नेताओं की अमित शाह के साथ एक मीटिंग हुई जिसमें जम्मू कश्मीर से चार महासचिव भी शामिल हुए थे। इस मीटिंग से बाहर आए जम्मू कश्मीर के उप-मुख्यमंत्री कविंदर गुप्ता ने मीडिया से यही कहा कि भाजपा और पीडीपी की विचारधारा में अंतर है लेकिन गठबंधन अभी खत्म नहीं किया जाएगा। लेकिन इस बयान के दो घंटे के अंदर भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव देशभर के न्यूज चैनलों पर लाइव नजर आने लगे जम्मू-कश्मीर सरकार से अलग होने का ऐलान कर रहे थे।

राम माधव ने गठबंधन टूट के ये गिनाए कारण

- गृह मंत्रालय की तरफ से जम्मू कश्मीर सरकार को सहयोग मिला लेकिन घाटी में सुरक्षा का माहौल बिगड़ा। कट्टरपंथ बढ़ा। घाटी में हालात सुधारने में सरकार का पीडीपी धड़ा विफल रहा।
- शुजात बुखारी की हत्या ने ये संदेश दिया कि राज्य में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी खतरे में है।
- लद्दाख और जम्मू संभागों में ये राय बन रही थी कि विकास के मामले में उनसे भेदभाव हो रहा है।
- रमजान के महीने में किए गए एकतरफा संघर्ष विराम को दूसरे पक्ष से अपेक्षित सहयोग नहीं मिला।

हैप्पी होम उच्च माध्यमिक विद्यालय

प्रतापनगर, उदयपुर फोन : 2491411(वि.), 2490130 (नि.)

कक्षा XII तक अंग्रेजी माध्यम से शिक्षण हेतु मान्यता प्राप्त

वर्ष-2013 से अंग्रेजी माध्यम में शिक्षण प्रारंभ

विशेषताएं

- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विविध प्रशिक्षण व प्रतियोगिताएं
- समाज के सभी वर्ग के बालक-बालिकाएं श्रेष्ठ शिक्षा ग्रहण कर सकें, इस हेतु सामान्य फीस
- अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षक
- सभी विषयों की उच्च स्तरीय प्रयोगशालाएं
- कम्प्यूटर शिक्षा हेतु पर्याप्त कम्प्यूटर्स की व्यवस्था
- शिक्षण में श्रेष्ठ नवाचारों का प्रयोग

व्यवस्थापक निदेशक
जगदीश अरोड़ा

शाखा : हैप्पी होम मा.वि. पुरोहितों की मादड़ी, उदयपुर
फोन नं. 2491383

कर्नाटक के नाटक ने बढ़ाई भाजपा की परेशानियां

धुर विरोधी कांग्रेस और जेडीएस का सत्ता मिलन, एकता का कारवां यहीं तक या आगे भी ?

मोदी 'रथ' रोकने का 'मनोरथ'

-नंदकिशोर

युद्ध प्रत्यक्ष शत्रु से लड़ा जाता है और सियासत किसी की आड़ में किसी को भी निशाना बनाकर निबटाने की एक कला है। कर्नाटक में जेडीएस के कुमार स्वामी के मुख्यमंत्री पद की ताजपोशी का कार्यक्रम इसी कला को विस्तार देने की पहल था। इसके बाद 31 मई को देशभर की 4 लोकसभा और 10 विधानसभा सीटों पर हुए चुनाव की तस्वीर साफ हुई तो यूं लगा मानो राजनीति के मोहरों पर लगी धूल अब रफ्ता-रफ्ता हटने वाली है। यह सर्वविदित है कि भाजपा ने केंद्रीय सत्ता में आने के बाद दो काल्पनिक शत्रु गढ़े थे-एक था वामपंथ जो पहले ही ढूंढो तो जाने की स्थिति में पहुंच चुका था और दूसरा था कांग्रेस। एकरंगी राजनैतिक राष्ट्रवाद की 'साधना' में लगी भाजपा के डीएनए में यह बात पहले ही मौजूद थी कि उसकी दुश्मनी कांग्रेस की अपेक्षा क्षेत्रीय दलों से ज्यादा है। कांग्रेस को इसका ज्ञान समय बीतने के साथ अब हुआ है। कुमार स्वामी के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद विपक्षी एकजुटता राजनीति के लिए अच्छा संकेत है। यह भगवा पताका लिए बढ़ रहे मोदी रथ को रोकने का मनोरथ है। हालांकि एकजुट हुए नेताओं के दिलों के बीच अभी भी हल्की-फुल्की कसक और दूरियां झलक रही थी फिर भी इसे अच्छी शुरुआत कह सकते हैं। ये राज्य में सरकार के गठन की नहीं बल्कि उससे कहीं आगे का श्रीगणेश है। चुनाव मैदान में एक-दूसरे के धुर विरोधी कांग्रेस और जेडीएस का इस तरह का मिलन सत्ता के नए समीकरण का सूत्रपात है। भाजपा के प्रतिद्वंदी दलों के लिए कर्नाटक की नई सरकार आगे का रास्ता दिखाने वाला माइल स्टोन है। जो अन्य राज्यों में 4-5 माह बाद होने वाले विधानसभा चुनाव में राह आसान कर सकता है। भले ही ऐसा प्रयोग उत्तरप्रदेश में सफल नहीं रहा लेकिन कर्नाटक में चुनाव बाद दो दलों के अप्रत्याशित मिलन ने भाजपा के विजय रथ का पहिया रोक दिया। वैसे भी भाजपा के खिलाफ महागठबंधन की परिकल्पना पहले से मौजूद है। फर्क इतना है कि उसके प्रयोग में अब तक बहुत उत्साहजनक सफलता नहीं नजर आई। इसके पीछे बहुत सी वजह है। अब भाजपा को अन्य राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए नए सिरे से रणनीति बनाने की जरूरत है। भाजपा रणनीतिकारों को यह भी समझना होगा कि सत्ता हासिल करने के लिए जल्दबाजी में लिया गया निर्णय उनके लिए परेशानी का सबब भी बन सकता है। कर्नाटक भाजपा की पराजय नहीं है बल्कि वो ठोकर है जो उन्हें भविष्य की चुनौतियों का अहसास कराती है। पीएम मोदी और पार्टी अध्यक्ष अमित शाह को समझना होगा कि आगे की राह उतनी आसान नहीं होगी जितनी उन्होंने अब तक तय की है।

फिलहाल मोदी बनाम विपक्ष की यह संभावना 2019 की चुनावी जंग को दिलचस्प बनाएगी। हालांकि विपक्ष में एकजुटता तो दिखाई दे रही है पर समानता नजर नहीं आ रही। उनके (विपक्ष) पास 'धर्मनिरपेक्ष' होने के दावे और एक ही विरोधी (बीजेपी) होने के दंभ के अलावा समानता के नाम पर ज्यादा कुछ नहीं है। सोनिया गांधी और मायावती जब परस्पर गले मिले तब उनके होठों की मुस्कान और चेहरों का खिंचाव किसी आत्मीयता की इबारत नहीं थी। केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन का पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी के साथ रूख इस बात का प्रमाण हैं कि दूरियां दिखाने के लिए मिटी हैं, जमीनी हकीकत अब भी अलग है। विपक्ष को आशा है कि ये पहल आरएसएस और भाजपा के विरुद्ध पहली सफल कोशिश सिद्ध होगी। एक बात बिल्कुल स्पष्ट है कि गुजरात विधानसभा चुनाव और उसके बाद विपक्षी दलों को चुनावी फायदा मिला है। जहां तक वोट शेयर का सवाल है तो राष्ट्रीय दलों की तुलना में क्षेत्रीय दल ज्यादा समृद्ध हैं।

राजनीति के जानकार इस बात को मानते हैं कि भले ही मतदाताओं से जुड़ाव मोदी की सबसे बड़ी ताकत या संपदा हो लेकिन यदि विपक्ष की ज्यादातर लोकसभा सीटों पर वन टू वन मुकाबले की स्थिति निर्मित करने की योजना परवान चढ़ती है तो गणित विपक्ष के पक्ष में हो सकता है। विपक्ष की रणनीति धीरे-धीरे सामने आने लगी है। कुछ दिन पहले टीआरएस के मुखिया तेलंगाना के मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव और उसके बाद ममता बनर्जी ने तीसरे मोर्चे या संघीय मोर्चे का विचार उछाला था। जिसे अब त्याग दिया गया है। एनसीपी के नेता शरद पवार के उकसावे पर अब ममता ने एक

ऐसे संयुक्त विपक्षी मोर्चे का विचार पेश किया है, जिसमें कांग्रेस भी शामिल हो। बताते हैं कि इस मुलाकात के दौरान पवार ने ममता को समझाया कि कांग्रेस को दूर रखना ठीक नहीं होगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनकी पार्टी (रांकापा) के पास महाराष्ट्र में भाजपा और शिवसेना से मुकाबले के लिए कांग्रेस गठजोड़ के सिवा कोई विकल्प नहीं है। यह एक क्षेत्रीय मजबूरी है और अन्य राज्यों में कुछ और क्षेत्रीय दलों के समक्ष भी ऐसी ही विवशता है। ममता ने उनके इस तर्क पर गौर किया और बयान दिया कि उन्हें कांग्रेस से कोई खास लगाव नहीं है। लेकिन भाजपा को सत्ता से दूर रखने के लिए 'कोई भी कुर्बानी' देने को तैयार हैं। बाद में दिल्ली से रवाना होते-होते सुर बदल चुके थे। अब वे भाजपा के खिलाफ संघीय मोर्चे के बजाय एक ऐसा व्यापक मोर्चा तैयार करना चाहती हैं, जिसमें कांग्रेस की भी भूमिका हो। एक वरिष्ठ कांग्रेसी नेता ने इंगित किया कि 1998 में भाजपा ने यही रणनीति अपनाई थी और 2004 में कांग्रेस ने भी ऐसा ही किया था। राज्यवार गठजोड़ विपक्ष के लिए वर्ष 2019 की चुनावी जंग को राष्ट्रीय चुनाव के बजाय एक सम्मिलित राज्यीय चुनावों के रूप में तब्दील करने में मददगार साबित हो सकता है। जबकि भाजपा 2014 की तरह एक बार फिर अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव की शैली में लड़ते हुए मोदी लहर के सहारे चुनावी वैतरणी पार करना चाहती है। यदि विपक्षी दल भाजपा को राज्यवार संघर्ष में उलझाने में कामयाब होते हैं तो मोदी का जादू फीका पड़ जाएगा।

ये लगातार साफ होता जा रहा है कि क्षेत्रीय दल इस वक्त 2019 में मोदी से मुकाबले की रणनीति तैयार करने के लिहाज से ड्राइवर की भूमिका में हैं। जाहिर है कि कांग्रेस को यह रास नहीं आ रहा होगा, लेकिन यदि वह 2014 में मिली करारी पराजय के बाद कुछ और राजनीतिक ताकत हासिल कर राष्ट्रीय राजनीति में पुनः अपनी पकड़ बनाना चाहती है, तो उसे क्षेत्रीय दलों से हाथ मिलाना ही होगा।

विपक्षी दल इस वक्त अपने तमाम मतभेद, कड़वाहट और दुश्मनी भुलाने (जैसे उत्तरप्रदेश में सपा व बसपा ने किया) को इसलिए आतुर हैं क्योंकि उन्हें अहसास है कि 2019 का चुनाव उनके लिए अस्तित्व का सवाल बन चुका है। ज्यादातर विपक्षी दलों को यह भय भी सताने लगा है कि मोदी को एक और कार्यकाल मिल गया तो उनका अस्तित्व ही मिट सकता है। भाजपा जिस तेजी से देश के विभिन्न राज्यों में पांव पसार रही है, उससे उसकी ताकत और अजेयता का पता चलता है। यह अजीब बात है कि भाजपा की ताकत अब एक तरह से उनकी कमजोरी भी साबित हो रही है। दरअसल उसने कुछ ज्यादा ही ताकत दिखाते हुए विपक्ष को इस कदर भयभीत कर दिया है कि अब वे एकजुट रोकने को लामबंद है।

दोस्त दुश्मन और दुश्मन दोस्त बन जाते हैं

शिवसेना और बीजेपी के बीच टकराव की स्थिति चल रही है। वहीं शपथ ग्रहण के दौरान मंच पर दिखे विपक्षी दलों में से कोई भी शिवसेना से गठबंधन करने के लिए तैयार नहीं होगा। ज्यादा से ज्यादा ये लोग शिवसेना से बाहर से समर्थन लेने के लिए तैयार हो जाएंगे। टीडीपी और टीआरएस की अपनी लड़ाई है। मुख्य रूप से वाईएसआरसीपी के साथ एक तरफ जहां जगनमोहन रेड्डी भाजपा के 'नए सहयोगी' बनने में कामयाब रहे हैं। वहीं एन चंद्रबाबू नायडू को एनडीए छोड़ने के बाद से गठबंधन को बढ़ाने की कोशिश में देखा जा रहा है। इसके अलावा जगनमोहन एनडीए के साथ जाएंगे या नहीं, इसका फैसला तेलंगाना और आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनाव में वाईएसआरसीपी के प्रदर्शन पर निर्भर करेगा।

पहचान बचाने की कोशिश

बैंगलोर में शपथ ग्रहण के साथ यदि कुछ बदला तो वह यह कि कांग्रेस ने राज्य की राजनीति में अपनी भूमिका को उलट दिया है। हालांकि ये कोई पहली बार नहीं है। इसका उदाहरण हम इससे पूर्व बिहार में भी देख चुके हैं। लेकिन कर्नाटक में अलग ये था कि यहां कांग्रेस पार्टी सत्ता में थी। अपने गठबंधन के सहयोगी की तुलना में उसने पर्याप्त संख्या में सीटें भी जीती थीं, लेकिन फिर भी सत्ता में उसे दूसरे पायदान पर रहना पड़ा। अगर ये फैसला कांग्रेस के राष्ट्रीय नेतृत्व ने लिया है तब तो ये एक प्रासंगिक कदम है। ये संकेत है कि कांग्रेस ने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि अपनी राष्ट्रीय स्थिति को बनाए रखने के लिए, उसे अपने क्षेत्रीय भागीदारों के साथ दूसरे पायदान पर रहना भी मंजूर होगा। यह राजनीतिक प्रतिष्ठा का विषय नहीं है बल्कि तेजी से बदलते राजनीतिक परिदृश्य में अपनी स्थिति को बनाए रखने की जद्दोजहद है। एक तरह से प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी विपक्ष के लिए कैटेलिस्ट यानी उत्प्रेरक का काम ही कर रहे हैं।

बीजेपी और उसके सहयोगी राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के किलों पर अपना कब्जा बनाए रखना चाहेंगे। जबकि विपक्षी इन राज्यों में भी अपनी संभावनाएं तलाशेंगे। खासतौर पर अगर संयुक्त वोट शेयर को देखें तो विपक्ष को स्पष्ट रूप से लाभ मिलने का संकेत है। लेकिन फिर भी कांग्रेस को यह नहीं भूलना चाहिए कि कर्नाटक में इसके 'मुख्य रणनीतिकार' सिद्धारामैया थे। इन्होंने बीजेपी की आक्रामकता को रोकने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा दिया था। इससे यह भी पता चलता है कि स्थानीय दिग्गजों के सहारे कांग्रेस को अधिक वोट और सीटें मिल सकती हैं।

सबके अपने सपने

कैराना की प्रयोगशाला से मिला 'टॉनिक

जगदीश सालवी

4
लोकसभा उपचुनाव में सिर्फ पालघर सीट पर जीती भाजपा

4
साल बाद उत्तर प्रदेश में विपक्षी दलों की 10 लोकसभा सीटें हुई

7
सीटें सपा, 2 कांग्रेस, 1 रालोद की सीट लोकसभा में

करीब पांच साल पहले दंगों का मैदान बने उत्तरप्रदेश के शामली, कैराना और मुजफ्फरनगर का नया चेहरा हाल ही हुए उपचुनाव में सामने आया है। साल 2014 के लोकसभा चुनावों में ध्रुवीकरण के एपीसेंटर ने 2018 में ध्रुवीकरण के फॉर्मूले को ही नकार दिया है। शामली और सहारनपुर जिलों की पांच विधानसभा सीट कैराना, शामली, थानाभवन, गंगोह और नकुड़ को मिलाकर बनने वाली कैराना लोकसभा सीट से मुस्लिम उम्मीदवार तबस्सुम हसन को राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) की उम्मीदवार बनाने के पीछे जो सियासी रणनीति थी, वह कामयाब रही। तबस्सुम हसन ने कैराना को हिंदुत्व की प्रयोगशाला बनाने वाले दिवंगत हुकुम सिंह की बेटी मृगांका सिंह को लोकसभा उपचुनाव में करारी शिकस्त दी।

बात केवल एक लोकसभा सीट की नहीं है। बात उस राजनीतिक समीकरण के पुनर्जीवन की है जो 2013 के मुजफ्फरनगर, शामली और कैराना के दंगों में दरक गया था। राजनीतिक रूप से प्रभावशाली जाति जाट और संख्या में भारी पड़ने वाले मुसलमानों के बीच एक बड़ी खाई पैदा हो गई थी। जिसके नतीजे 2014 के लोकसभा और 2017 के विधानसभा चुनावों में देखने को मिले और उनका फायदा भाजपा को भारी जीत के रूप में मिला। तब किसानों और जाटों की पार्टी मानी जाने वाली रालोद का अस्तित्व दांव पर लग गया था। लेकिन हाल के उप चुनाव के नतीजों ने पार्टी की दोनों पहचानों को जिंदा ही नहीं किया बल्कि विपक्षी गठजोड़ का रास्ता भी बना दिया है।

करीब 16 लाख मतदाताओं वाली कैराना सीट में 5.5 लाख मुसलमान और करीब 1.8 लाख जाट वोट हैं। दलितों के करीब दो लाख वोट हैं। बाकी वोटों में गुर्जर, कश्यप और उच्च वर्ग के वोट हैं। यहां मुसलमान, जाट और दलितों के साथ आने के बाद भाजपा के लिए पहले दिन से ही सीट जीतना मुश्किल लग रहा था।

कैराना और नूरपुर उपचुनाव के दौरान जाटों के अंदर एक कसक भी साफ दिखी। वह थी एक पार्टी के अस्तित्व का सिमटना। 2013 के दंगों में सबसे अधिक प्रभावित लांक, बहावड़ी, लिसाड़ और हसनपुर इस लोकसभा सीट के वे गांव हैं, जहां से हजारों लोगों के खिलाफ दंगों के केस दर्ज हुए। इस कारण लोगों में भाजपा को लेकर नाराजगी थी। जाटों ने यह तय कर लिया था कि इस बार उनका वोट रालोद को ही जाएगा। दिलचस्प बात यह है कि इन गांवों से उजड़कर दूसरे गावों में बसे मुसलमान परिवार भी स्वीकारने लगे हैं कि गलती हुई थी। लेकिन अब पुराने गिले-शिकवे दूर होने चाहिए।

सांप्रदायिक ध्रुवीकरण पर भारी सामाजिक समीकरण

भाजपा ने कैराना में सांसदों, विधायकों और मंत्रियों की फौज उतारी जिसका पूरा एजेंडा दंगों में फंसे लोगों की मदद के दावे और 2013 में जाटों के खिलाफ हुई प्रशासनिक ज्यादतियों पर ही फोकस रहा। दूसरा बड़ा दावा कानून-व्यवस्था में सुधार का था। इसके अलावा जिन्ना विवाद से लेकर आतंकवाद, पाकिस्तान, कश्मीर, पलायन जैसे मुद्दों को उठाकर सांप्रदायिक ध्रुवीकरण कराने की खूब कोशिशें की गईं। जाहिर है जाट-मुस्लिम और दलित मतों के सामाजिक समीकरण ने भाजपा के मंसूबों पर पानी फेर दिया। फूलपुर और गोरखपुर के बाद कैराना और नूरपुर की हार भाजपा के लिए बड़ा सबक है।

गोरखपुर और फूलपुर लोकसभा उपचुनाव में हारने के बाद भाजपा किसी भी कीमत पर कैराना को जीतना चाहती थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने खुद सहारनपुर के अंबेहटा और शामली में दो चुनावी सभाएं की थीं। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने लगातार यहां प्रचार किया। योगी के मुख्यमंत्री रहते लगातार तीन लोकसभा चुनाव हारना उनकी राजनीतिक छवि को फीका कर गया। वे दूसरे राज्यों में वोट बटेरू साबित हुए लेकिन अपने ही राज्य में लगातार हारना उनके लिए खतरे की घंटी है।

जिन्ना नहीं गन्ना

ध्रुवीकरण पर केंद्रित भाजपा की चुनावी रणनीति में मुद्दे गायब थे। यहां पर गन्ना मूल्य भुगतान में देरी सबसे बड़ा मुद्दा था जिससे किसान नाराज थे। कैराना सीट में पड़ने वाली पांच चीनी मिलों पर ही करीब 800 करोड़ रुपए का भुगतान बकाया था। मतदाता इस पर हर जगह सवाल उठा रहे थे जिसका जवाब भाजपा के नेता और मंत्रियों के पास नहीं था। राज्य के गन्ना विकास मंत्री सुरेश राणा का विधानसभा क्षेत्र थानाभवन भी लोकसभा सीट के अंतर्गत है। इससे लोगों का गुस्सा और अधिक बढ़ गया। राणा भुगतान में देरी की बजाय गन्ने की अधिक पैराई के फायदे की बात बता रहे थे। इसके साथ ही राज्य सरकार ने घरेलू और खेती की ट्यूबवैल के लिए बिजली की दरों में जो

बढ़ोतरी की उसको लेकर भी लोगों में भारी नाराजगी थी। रालोद ने प्रचार के केंद्र में दो बातें प्रमुखता से रखीं। पहली थी धार्मिक भाईचारे का संदेश और दूसरी गन्ना मूल्य का बकाया भुगतान और बिजली की बढ़ी दरों में वापसी।

भाजपा के लिए 'उफ चुनाव'

देश की 4 लोकसभा और 10 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनावों के नतीजे बीजेपी को फिर मायूसी दे गए। कैराना लोकसभा और नूरपुर

विधानसभा उप चुनाव भाजपा के लिए 'उफ चुनाव' बनकर आया। कैराना सीट पर आरएलडी उम्मीदवार तबस्सुम हसन ने जीत हासिल की, तो समाजवादी पार्टी से नूरपुर विधानसभा सीट बीजेपी से छीन ली। वहीं 10 विधानसभा सीटों में 3 पर कांग्रेस, 2 पर भाजपा व 5 पर अन्य दलों ने जीत हासिल की। हालांकि उत्तराखंड व महाराष्ट्र के पालघर में जरूर भाजपा की जीत हुई।

कौन, कहां से जीता

सीट	विजेता (लोकसभा सीट)
कैराना	तबस्सुम हसन, रालोद
पालघर	राजेंद्र गावित, भाजपा
भंडारा-गोदिया	मधुकर कुकड़े, एनडीपीपी
नगालैंड	तोखेयो येपथामी, एनडीपीपी
लोकीहाट, बिहार	शाहनवाज आलम, राजद
गोमिया, झारखंड	बबीता देवी, झामुमो
सिल्ली, झारखंड	सीमा महतो, झामुमो
चेंगन्नूर, केरल	सजी चेरियन, सीपीएम
पलूस कडेगांव, महाराष्ट्र	विश्वजीत कदम
नूरपुर, उत्तरप्रदेश	नईमुल हसन, सपा
महेशतला, पं. बंगाल	दुलाल दास
थराली, उत्तराखंड	मुन्नीदेवी, भाजपा
शाहकोट, पंजाब	हरदेव सिंह, कांग्रेस
अपाती, मेघालय	मियानी डी शीरा

हर 'दोस्त' है पीएम इन वेटिंग

भाजपा के विरोध के नाम पर एक साथ आने को आतुर दिख रहे सियासी दलों के लिए आने वाले दिनों में मोदी से भी बड़ी चुनौती महागठबंधन का एक नेता चुनने की है। कैराना लोकसभा चुनाव के बाद कांग्रेस ने अभी भले ही क्षेत्रीय पार्टियों के लिए खुद को पीछे की कतार में खड़ा किया हो लेकिन इतिहास गवाह है कि लंबी दूरी तक शायद वह ऐसा न कर पाए। महागठबंधन में शामिल क्षेत्रीय दलों में तृणमूल, बसपा, तेलुगु देशम पार्टी, समाजवादी पार्टी, राजद, राष्ट्रीय लोकदल, झारखंड मुक्ति मोर्चा, बीजू जनता दल, तेलंगाना राष्ट्र समिति, जनता दल सेक्यूलर और वामदलों की सियासी आकांक्षाएं पीएम की कुर्सी तक पहुंचने की है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की नरेंद्र मोदी की कुर्सी पर कितनी पैनी नजर है, ये किसी से छिपा नहीं है। दिल्ली की सत्ता पर काबिज होने की इस आकांक्षा के चलते वे कभी शरद पवार की बगल में

नजर आती है तो कभी तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव और यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री सपा मुखिया अखिलेश यादव की पीठ थपथपाती दिखती है। गत लोकसभा चुनाव में अपनी सियासी जमीन लगभग गंवा चुकी बसपा सुप्रीमो मायावती भी सपा से दोस्ती और फूलपुर, गोरखपुर और कैराना के चुनावी नतीजों के बाद खुद को पीएम का ताज पहने देखना चाहती हैं। मौजूदा समय में दक्षिण के बड़े नेताओं में शुमार और साल में एनडीए से अलग हुए टीडीपी के चंद्रबाबू नायडू की राह में सबसे बड़ा रोड़ा उत्तर भारत में उनका जनाधार न होना बनेगा। राहुल गांधी प्रधानमंत्री पद के प्रबल दावेदार हैं, लेकिन आज जो उनके साथ खड़े है, क्या वे तब भी उनके साथ रहेंगे? चार घोटाले में सजायाफ्ता लालू यादव हालांकि इस रेस से बाहर हो चुके हैं लेकिन बेटे तेजस्वी के जरिये आम चुनाव में किसी का भी खेल बिगाड़ सकते हैं। अखिलेश यादव भले ही खुद को प्रधानमंत्री की रेस से अलग होने का ऐलान कर चुके हो लेकिन उनके पिता पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव का पीएम की कुर्सी के प्रति मोह किसी से छिपा नहीं है। 1996 और 1999 में दो बार ऐसे मौके आए है, जब प्रधानमंत्री की कुर्सी के करीब जाकर मुलायम सिंह दूर हो गए। बिहार में महागठबंधन तोड़कर एनडीए में शामिल हो चुके नीतीश कुमार की राजनीति आम चुनाव आने तक किस करवट होगी, ये दावे के साथ कोई नहीं कह सकता। एनडीए को छोड़कर महागठबंधन में आना और फिर से भाजपा के साथ मिलकर सरकार बनाने वाले नीतीश का बीते दिनों मोदी सरकार की कुछेक नीतियों की आलोचना के भी सियासी मायने है। 2019 में पहले नीतीश की सियासी नीति क्या गुल खिलाती है इसको लेकर कोई भी दावा नहीं कर सकता, हालांकि राजनीति संभावनाओं का खेल है और ऐसा कुछ हुआ भी तो नीतीश बाबू को पीएम बनाने के लिए लालू यादव समर्थन के लिए मुखर कर भी सकते हैं। हालांकि ये बात शायद ही किसी के गले उतरे। वैसे राजनीति में स्थायी कुछ भी नहीं है। कब बाजी किसके हाथ से फिसल जाए और किसकी लॉटरी लग जाए ये तो आने वाला वक्त ही बता सकता है। लेकिन यह तय है कि विपक्षी एकता की राह में महत्वाकांक्षाएं जोर से हिलोरे मारेंगी। मोर्चे बनेंगे और टूटेंगे। ऐसे में मोदी के खिलाफ महागठबंधन चुनाव पूर्व और चुनाव बाद तक कायम रहें, इस पर आशंकाओं के घनघोर बादल है, कोई चमत्कार ही इन बादलों को छांट सकता है। महागठबंधन के नेतृत्व को लेकर भी तो रायता फैल सकता है।

रंग बदलू मौसम में संक्रमण का खतरा

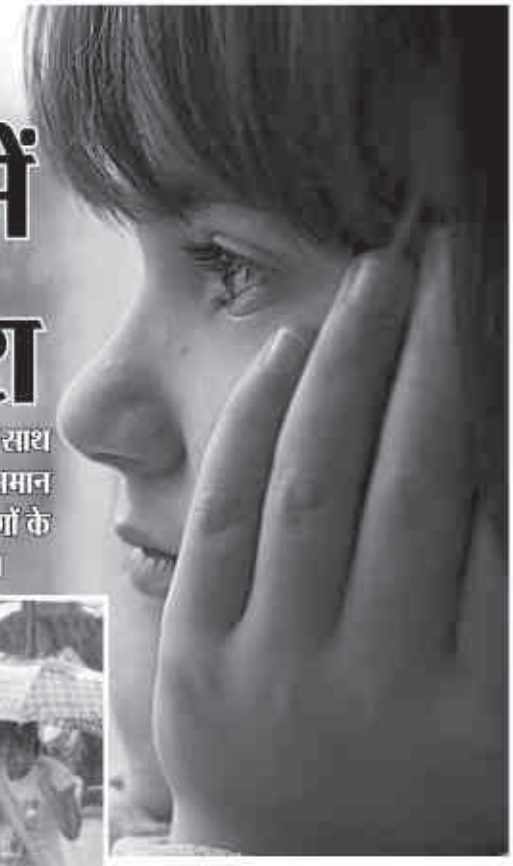

मानसून ने दस्तक दे दी है। बदलते मौसम में बीमारियां ज्यादा तीव्रता के साथ सताती हैं। कभी बादल घिर आते हैं, तो कभी कुछ देर बारिश होकर आसमान साफ हो जाता है और फिर बढ़ती है उमस। रंग बदलते इस मौसम में रोगों के संक्रमण का खतरा भी बढ़ जाता है, शरीर को सहेजना ही उपाय है।

मौसम दिन में कई-कई बार रंग बदल रहा है। कभी तेज़ धूप पड़ती है, कभी अचानक बादल घिर आते हैं, तो कभी थोड़ी-सी बारिश होकर आसमान साफ हो जाता है, फिर उमस बढ़ जाती है। एक ही दिन में हम कभी पसीने में भीगते हैं, कभी बरसात में। ऐसे मौसम में रोगों के संक्रमण का खतरा भी अधिक है।

क्या है उपाय?

पहला और सबसे कारगर उपाय है कि मौसम अनियमित है, तो हम खुद नियमित हो जाएं। अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित कर लें। मौसम असंयमित है, कभी भी, किसी भी तरह का रूप दिखा रहा है, तो हम अपने खानपान को संयमित कर लें।

यह है अनिवार्य

ऐसा करना विकल्प नहीं है, अनिवार्यता है। यदि आप सोचते हैं कि वर्षा ऋतु की उमस का मुकाबला कूलर चलाकर कर लेंगे, तो यह जान लें कि कूलर की नमी में कई तरह के रोगाणु पनपने का जोखिम भी होगा। लगे कि उमस को सह लेंगे, तो मत भूलें कि इससे पसीना बहता नज़र न आए, पर शरीर से पानी और नमक की कमी तो होगी ही। सोचें कि गर्मी से निजात पाने के लिए ढेर सारी ठंडी-ठंडी चीज़ें खा-पी लेंगे, परन्तु उसके तत्काल बाद बारिश हो जाए, तब?

अनदेखा न करें

बदलते मौसम में बीमारियां ज़्यादा तीव्रता के साथ सताती हैं, इसलिए लक्षणों को क़तई अनदेखा न करें। शरीर में पानी की कमी, उल्टी, अधिक पसीना, कमजोरी जैसे लक्षण यदि सामान्य उपायों से जल्द काबू में न आएं, तो डॉक्टर से सलाह लेने व परीक्षण कराने में कोताही न बरतें। पेट की ख़राबी, दस्त का यथाशीघ्र उपचार करवाएं।

बुख़ार, जाड़ा जैसी स्थिति में तत्काल क़दम उठाएं, इंतज़ार न करें, क्योंकि ये लक्षण मलेरिया या डेंगू के चलते भी हो सकते हैं। बारिश में एलर्जी और त्वचा सम्बन्धी समस्याओं की आशंका बढ़ जाती है, इसलिए छोटे-मोटे फोड़े-फुंसी और खुजली को नज़रअंदाज़ न करें, वरना ये अपने उग्र रूप में भी सता सकते हैं। ध्यान रहे, बारिश का पानी और उमस में उपजे पसीने को लवण युक्त नमी त्वचा रोगों के लिए माकूल होती है।

बारिश में पोषण

बारिश के मौसम में दही-मट्ठा खाने-पीने, का ज़रा भी मन नहीं करता। शेक और स्मूदी भी नहीं भाते, तो दूध भी नहीं लेते हैं हम। यानी आहार में कैल्शियम की मात्रा काफ़ी कम हो जाती है। दूसरी ओर हरी सब्ज़ियों के विकल्प भी बहुत सीमित हो जाते हैं और जो थोड़ी बहुत सब्ज़ियां मिलती भी हैं, वही-वही रोज़ खाने का मन नहीं करता। नतीजतन, इनसे मिलने वाले पोषक तत्व को भी भोजन से नदारद ही मान लें। कुछ आसान उपाय हैं, इस कम हुए पोषण की पूर्ति में मददगार हो सकते हैं.....

- रोज़ दो बादाम खाने का नियम बनाएं।
- कैल्शियम का बेहतरीन स्रोत है पनीर। घर पर दूध फाड़कर पनीर बनाएं। इसकी भुर्जी, पराठे, सब्ज़ी जो चाहें बनाएं।
- अंकुरित अनाज में विटामिन-ए और बी समूह के विटामिन, कैल्शियम, आयरन आदि महत्वपूर्ण पोषक तत्व मौजूद होते हैं, इसलिए इनका सेवन हरी सब्ज़ियों की कमी की पूर्ति कर सकता है। घर की अंकुरित दाल और चनों को नाश्ते या सलाद में इस्तेमाल कर सकते हैं।
- रोज़ाना आम, केला या पपीता, इनमें से किसी एक फल का सेवन करने का नियम बना लें।

- डॉ. ओम प्रकाश महात्मा

Nahar Singh
9414343608
8561955455

Dharmdas (Babu Bhai)
9309219718

Maha Laxmi
Food Products

Royal Star Bread

40, Math Madri
Road No. 1,
MIA, Udaipur (Raj.)
Phone No. 0294-2491295

तेल सस्ते होने के अच्छे दिन गए

डीज़ल-पेट्रोल की कीमतों ने तोड़े रिकॉर्ड, उत्पाद शुल्क में कटौती के मूड में नहीं सरकार, अंतरराष्ट्रीय कीमतों की दे रही है दुहाई

भारत कच्चे तेल का तीसरा सबसे बड़ा आयातक देश हैं। कुछ महीने पहले उम्मीद की जा रही थी अमेरिका में शैल ऑयल के बढ़ते उत्पादन के चलते विश्व में तेल की मांग गर्मियों तक काबू में रहेगी। लेकिन यह उम्मीद निरर्थक साबित हुई। इस वक्त तेल की कीमतें पिछले चार साल में उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है। दुनिया की अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं की तरह भारत के लिए भी तेल की उच्च कीमतों के प्रभाव से निपटना मुश्किल है। पिछले साल की तुलना में तेल की कीमत 50 फीसदी तक बढ़ गई हैं। लेकिन मई में जब तेल 80 डॉलर प्रति बैरल की कीमत को पार कर गया था और ये नवंबर, 2014 के बाद की सबसे ऊंची कीमत थी। ये खतरे की घंटी जैसा था। तेल की कीमतों पर नजर रखने वाले अब ये कहने लगे हैं कि सस्ते तेल के दिन लदने शुरू हो गए हैं। ईरान पर अमरीकी प्रतिबंधों के संभावित असर को कीमतों में आई छलांग की बड़ी वजह के तौर पर देखा जा रहा है। गोल्डमैन सैक्स बैंक ने हाल ही में कहा कि तेल की मांग आने वाले समय में बढ़ेगी। अमरीकी बैंक मॉर्गन स्टैनली जैसी वित्तीय संस्थाएं पहले ही कीमत बढ़ने की भविष्यवाणी कर चुकी हैं। अब दोनों बातें होती हुई दिख भी रही हैं। हालांकि तेल का बाजार हमेशा से अनिश्चितताओं से भरा रहता है। सऊदी अरब और रूस जैसे तेल बेचने वाले देश मिले-जुले इशारे देते रहे हैं। तीन कारणों से तेल सस्ते होने के अच्छे दिन आने वाले नहीं है। पहला कारण दुनिया में तेल की मांग बढ़ना, दूसरा ईरान पर अमरीकी प्रतिबंध और तीसरा कारण-वेनेजुएला में तेल उत्पादन में कमी आना है।

इधर, कच्चे तेल की कीमतों में तेजी का असर महंगाई पर पड़ने लगा है। थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) में कच्चे तेल और इसके उत्पादों का भारांक 10.4 फीसदी है। केयर रेटिंग्स की रिपोर्ट में कहा गया है कि इसमें कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस का भारांक 2.4 फीसदी है। इसलिए कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने से डब्ल्यूपीआई महंगाई पर असर होगा। राज्य के कर और शुल्क मूल्यों के अनुरूप होते हैं, इसलिए इसका असर कच्चे तेल की कीमतों में बदलाव से ज्यादा होगा। हाल ही में बढ़े तेल के भाव का सीधा असर आमजन की जेब पर पड़ा है। घर की रसोई का बजट भी गड़बड़ा गया है। ईंधन की कीमत बढ़ने से माल की आवाजाही पर खर्च बढ़ा। तेल की कीमतों में आए उबाल ने आमजन की जेब पर भार बढ़ा दिया है। फलों और सब्जियों की कीमतों पर तो इसका प्रभाव सबसे पहले देखने को मिला। किराना का बिल करीब 8-10 फीसदी बढ़ गया है। तमाम घरेलू उपकरण 4-5 फीसदी महंगे हो गए हैं। घरेलू महिला के बजट को तेल की बढ़ी हुई कीमतों ने बिगाड़कर रख दिया है।

'ओपेक' का निर्णय भी बड़ी वजह

वैश्विक तेल कीमतों में इन तीन वजहों के अलावा भी कई और वजह है इसमें सबसे प्रमुख है तेल निर्यातक देशों के संगठन 'ओपेक' का यह निर्णय है कि सदस्य देश तेल उत्पादन के उसी कोटे पर टिके रहें, जो नवंबर 2016 से निर्धारित है। इसके साथ-साथ दुनिया में तेल का सबसे बड़ा उत्पादक रूस भी तेल उत्पादन नियंत्रित करने में ओपेक देशों के साथ सहयोग कर रहा है। इसके अलावा लीबीया और वेनेजुएला जैसे देशों में मची सियासी उथल-पुथल ने भी बाजार में तेल उपलब्धता के स्तर पर असर डाला है। इसी दौरान चीन जैसे बड़े तेल आयातक देश में अर्थव्यवस्था चरमराने के साथ तेल की मांग बढ़ने लगी है। हालात सामान्य होते इसलिए भी नहीं लगते हैं कि क्योंकि अमेरिकी प्रशासन ने ईरान के साथ अपने परमाणु करार को रद्द कर दिया है। इसका मतलब है कि ईरान पर पुन: प्रतिबंध लादे जा सकते हैं। इन प्रतिबंधों में ईरान द्वारा तेल उत्पादन व विक्रय में कमी को भी शामिल किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो आने वाले महीनों में तेल की उपलब्धता में और कमी आ सकती है, जिसके कारण कीमतों में बढ़ोतरी का नया दौर शुरू हो सकता है।

पेट्रोल-डीज़ल की कीमतों में आग

बढ़ती पेट्रोल-डीजल की कीमतों पर विपक्ष का सवाल उठाना स्वाभाविक है। अगर पुराने तर्कों का सहारा लें तो इतने समय तक कीमतें न बढ़ने से सरकार और तेल कंपनियों को हज़ारों करोड़ का घाटा हो चुका होगा। यहीं कारण है कि विपक्ष सरकार को सीधे तौर पर जिम्मेदार ठहरा रही है। ऐसी स्थिति में विपक्ष सरकार की तरफ उंगली उठाने के दो कारण बता रहा है। एक देश में तेल लाकर बेचने और कीमतें तय करने का अधिकार जिन तीन कंपनियों-इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम को है। ये तीनों ही सरकारी हैं। उनमें नियुक्ति और प्रोमोशन से लेकर संचालन तक के हर काम में सरकार

और उसके कायदे कानून ही चलते हैं। दूसरा और ज्यादा बड़ा कारण गुजरात और उत्तरप्रदेश चुनाव के समय भी कीमतों का स्थिर रहना और गुजरात चुनाव के समय पहली बार करों में कमी करना है। तब सरकार ने उत्पाद शुल्क में पहली बार दो रुपए की कमी की थी। माना जा रहा है कि सरकार इस बार भी ऐसा चाहती थी, पर वित्त मंत्रालय ने इसकी स्वीकृति नहीं दी। सरकार अब तक कीमतों में उछाल के लिए अंतरराष्ट्रीय बाजार में क्रूड की कीमतें बढ़ने की दुहाई देती रही है। लेकिन जब-जब उसे अपना उल्लू सीधा करना हुआ, पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कमी लाने के लिए इन सभी कारणों को पीछे छोड़ते हुए उसने उपाय किए। पिछले कुछ सालों का ट्रेंड देखकर यह साफ होता है कि सरकार मौकापरस्त है, जो अपने फायदे के लिए कीमतों में बदलाव कर देती है।

सरकार ने 3 बार दिखाई मौकापरस्ती

- अक्टूबर 2017 में डीजल की कीमत 59.14 रुपए और पेट्रोल की कीमत 70.88 रुपए के स्तर पर पहुंच गई थी, तब सरकार ने दो रुपए उत्पाद शुल्क घटाया था। यहां यह जानना दिलचस्प है कि उसके अगले ही महीने 9 नवंबर को हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव थे और 9 दिसंबर से 14 दिसंबर तक गुजरात में विधानसभा चुनाव थे। इसको लेकर विपक्ष पेट्रोल-कीमतों में बढ़ोत्तरी को मुद्दा बना रहा था।
- इस साल का बजट पेश करते समय भी मोदी सरकार ने डीजल-पेट्रोल पर लगने वाले उत्पाद शुल्क में दिखावे वाली कटौती की। मोदी सरकार ने डीजल-पेट्रोल पर लगने वाली बेसिक एक्साइज ड्यूटी को 2 रुपए घटा दिया और 6 रुपए अतिरिक्त एक्साइज ड्यूटी को भी खत्म कर दिया। ऐसा लगा कि पेट्रोल-डीजल की कीमतों में 8 रुपए की भारी कमी आने वाली है। लेकिन लोगों की हसरत अधूरी रह गई। सरकार ने डीजल-पेट्रोल पर प्रति लीटर 8 रुपए रोड सेस लागू कर दिया। यानी जितनी कटौती की, उतना ही सेस। सब बराबर।
- अब तीसरी बार मोदी सरकार ने कर्नाटक चुनाव के दौरान अपना पैंतरा दिखाया। विपक्ष फिर डीजल-पेट्रोल के दामों को लेकर हल्ला मचा रहा था। दोनों ईंधनों की कीमतों को रोज बढ़ा रही मोदी सरकार ने 20 तक मौन धर लिया। डीजल-पेट्रोल की कीमतों में कोई कटौती नहीं की। फिर हद तब हो गई कि कर्नाटक में मतदान के अगले ही दिन पेट्रोल-डीजल की कीमतें बढ़ाने का सिलसिला शुरू हो गया जो अनवरत जारी है। हालांकि सरकार ने जनता के विरोध को देखते हुए दाम घटाए लेकिन यह राहत फोरी साबित हो रही है।

आलोक यात्रा के पथिक : श्यामजी

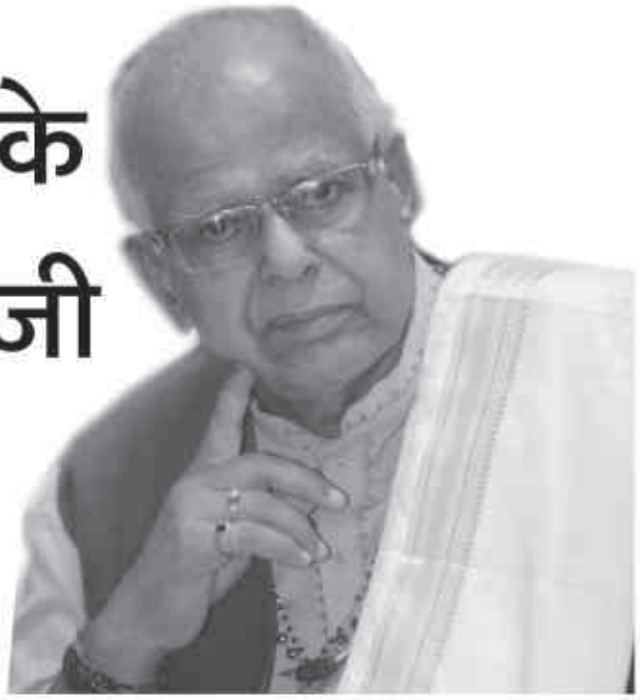

शिक्षा में नवाचार एवं सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्द्धन के लिए 1984 में तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रमुख शिक्षाविद्-मनीषी श्यामलाल कुमावत का 5 जून 2018 को देहावसान परिवार के साथ ही समाज और शिक्षा जगत की बड़ी क्षति है। उनका संस्कारोन्मुख शिक्षा के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान रहा। जुझारू एवं संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी श्यामजी का जन्म 2 अक्टूबर 1933 में उदयपुर के हेमराज-प्रतापी देवी कुमावत के साधारण परिवार में हुआ। यह परिवार आर्थिक दृष्टि से भले ही कमजोर था किन्तु संस्कारों से सम्पन्न था। उन्हीं उत्कृष्ट संस्कारों में श्यामजी पोषित हुए। दसवीं की पढ़ाई के दौरान ही रूक्मणी देवी से पाणिग्रहण हुआ। सोना तपने के बाद कंचन बनता है, इसे उन्होंने अभावों को वरदान में बदलकर सिद्ध कर दिया। देशप्रेम की भावना से अनुप्राणित श्यामजी 1953 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आव्हान पर भानुकुमार शास्त्री के साथ 6 माह जम्मू जेल में रहे। वहां से रिहाई के बाद पुनः अध्ययन में संलग्न हुए। पढ़ाई और गृहस्थी दोनों दायित्वों का बखूबी निर्वहन किया। इसी वर्ष शिक्षा भवन में शिक्षक के रूप में कार्य करते हुए शिक्षा प्रसार में ही जीवन लगा देने का संकल्प लिया। इसी दौरान राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के इस आव्हान ने इन्हें भाव-विह्वल कर दिया - 'देश हमें देता है सब कुछ। हम भी कुछ देना सीखें।' इस अपील ने उन्हें समाज-सेवा व राजनीति की ओर उन्मुख किया। सन् 1955 में उदयपुर नगर पालिका में सबसे कम उम्र के पार्षद निर्वाचित हुए। सन् 1958 में सरकारी सेवा में जयपुर चले गए किन्तु मन नहीं लगा और लेखा विभाग की नौकरी छोड़कर उससे कम वेतन पर ही शिक्षा के प्रति समर्पण के लक्ष्य से उदयपुर के विद्या निकेतन में प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए। भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर आधारित इस संस्थान में मन रम गया। इस दौरान वे एक ऐसे आदर्श शिक्षा संस्थान की स्थापना का स्वप्न भी देख रहे थे, जहां वे भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप शिक्षा के साथ अपने मौलिक नवाचारों को भी जोड़कर ऐसे विद्यार्थी तैयार कर सकें, जो संकल्प के साथ राष्ट्र निर्माण में समर्पित हो। सन् 1967 में यह स्वप्न साकार भी हुआ। माता-पिता के आशीर्वाद व संघर्षमयी जीवन संगिनी रूक्मणी देवी, ललित किशोर चतुर्वेदी, रामेश्वर प्रसाद कुमावत, वियोगी राधे-राधे के सान्निध्य में पंचवटी में 'आलोक विद्यालय' की स्थापना हुई। इस पौधे को वटवृक्ष बनने का आशीर्वाद मिला, अस्थल आश्रम के महंत मुरली मनोहर शरण शास्त्री व उदयपुर विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति डॉ. गणेश सखाराम महाजनी से। आज यह विभिन्न शाखाओं के साथ एक वृहद शिक्षा संस्थान के रूप में प्रतिष्ठित है। संस्थान की स्थापना के प्रारंभिक वर्ष बेहद कठिन व संघर्ष भरे रहे। माता-पिता ने जेवर तक बेटे के संकल्प को पूरा करने के लिए समर्पित कर दिये। श्यामजी व उनकी पत्नी कई रातों सोये नहीं, कई दिनों तक एक समय भोजन किया और निर्माण के दौरान चूना, पत्थर तक ढोया। धुन के पक्के इस श्रमवीर ने अन्ततः पंचवटी मे गुरुकुल खड़ा कर ही दिया और 180 बच्चों के प्रवेश के साथ विद्यालय लोकप्रिय भी हो गया। बेटे का संकल्प पूरा होते देख इनके पिताश्री ने स्कूल के सामने ही हनुमान मंदिर की स्थापना की। सन् 1970 में हिरणमगरी में नये परिसर का निर्माण शुरू किया। जो 1976 में पूर्ण हुआ। विद्यार्थियों को आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने के लिए सन् 1980 में विवेकानन्द संस्कार गृह की स्थापना की गई। सन् 1984 में आलोक शिक्षा की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए फतेहपुरा में भी विद्यालय स्थापित किया गया। इसी वर्ष ज्येष्ठ पुत्र प्रदीप ने एक शाखा में प्रधानाध्यापक के रूप में सहयोगी की भूमिका प्रारंभ की। डॉ. प्रदीप ने अपनी कार्यशैली, कर्मठता और शिक्षा में नव प्रयोगों के साथ ही सामाजिक सरोकारों में संस्था की भूमिका को सुनिश्चित कर आलोक को नई ऊंचाई दी। आचार्य श्यामजी ने प्रभावित होकर उन्हें प्रशासक पद पर पदोन्नत कर दिया। डॉ. प्रदीप आज समर्पित शैक्षिक व सामाजिक सेवाओं के लिए शहर और राज्य में अपनी खास पहचान रखते हैं। छोटे पुत्र मनोज भी संस्थान के प्रबन्धन में महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं। उदयपुर सहित राजसमंद व चित्तौड़ की विद्यालय शाखाओं में वर्तमान में 8-9 हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

विष्णु शर्मा हितैषी

श्यामजी विश्व हिन्दू परिषद्, भारतीय शिक्षण मण्डल, भारत विकास परिषद्, रोटरी क्लब, भारतीय जन सेवा प्रतिष्ठान, इण्डो-जापानीज कल्चरल क्लब, नववर्ष समारोह समिति, जिला लायन्स एसोसिएशन, भारत स्काउट गाइड आदि संगठनों के न केवल सदस्य रहे, अपितु उत्तरदायी पदों पर रहते हुए अन्तिम समय तक उन्हें मार्गदर्शन देते रहे। देश भर में नवसंवत्सर को समारोहपूर्वक मनाने की शुरूआत का श्रेय भी इन्हें ही जाता है। वे अपने पीछे दो पुत्रों के अलावा तीन पुत्रियां उषा अजमेरा, पुष्पा टांक, दुर्गा कुमावत, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों सहित वृहद शिष्य परिवार छोड़ गए हैं। उनका निधन अपूरणीय क्षति है, शिक्षा और समाज के लिए उनके द्वारा सम्पादित सेवा कार्य हमेशा याद किए जाएंगे।

KTS Prime Merchandise Pvt. Ltd.

101-102, Vinayak Plaza, 100 Ft. Road, Opp. Royal Raj villas,
Shobhagpura Chouraha, Udaipur (Raj.) 313001

9116116404, 9116116405 (M)

Website - www.ktsprime.com, Email - info@ktsprime.com

PROPERTY

Plot, Flat, Shops, Agriculture Land and Commercial land Sale and Purchase

98929 83520 Pushkar Nahar
90042 42328 Dharmesh Duggar

MARKETING

Ayurvedic Product, Hotel Package Discount Coupons, Health Check-up Holiday Package, Entertainment

Y. Khatri 9314948090 (M)

CLUB HOUSE

Upcoming Project A Family Club House With Full Entertainment of Gaming Zone, Pool, Restaurant

Nishit Chaplot 9829839008 (M)

I-BRAIN, MIND POWER

Mid Brain Activation, DMIT Report Vision Improvement, Speed Reading Super Memory, Mind Mapping

Gajendra Malviya 9214449605 (M)

समुद्र की हिफाजत में नायाब करंज

धरती पर 5 हजार किमी दूर तक मार करेगी 'अग्नि-5'

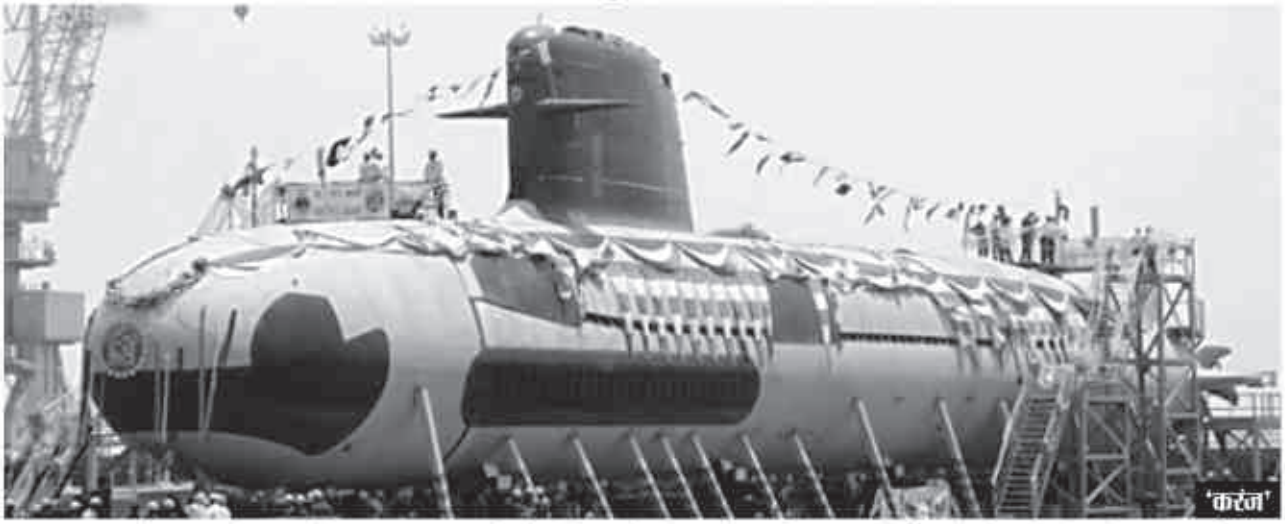
'करंज'

समुद्र में दुश्मनों का होश फाख्ता करने के लिए नौसेना में शामिल स्कॉर्पीन श्रेणी की तीसरी पनडुब्बी आईएनएस 'करंज' एक स्वदेशी पनडुब्बी है, जो 'मेक इन इंडिया' परियोजना के तहत तैयार की गई है। यह युद्ध के मैदान में दुश्मन को चकमा देकर त्वरित आधार पर बाहर निकलने में सक्षम है। इसके साथ ही 3 जून को 'अग्नि-5' मिसाइल का छठा परीक्षण भी सफल हो गया जो थल सेना के लिए बड़ी उपलब्धि है।

– शिल्पा नागदा

फ्रांस की रक्षा व ऊर्जा कम्पनी डीसीएनएस द्वारा डिजाइन की गई पनडुब्बियां भारतीय नौसेना की 'परियोजना-75' के तहत बनाई जा रही है। इसके तहत छह अगली पीढ़ी की स्वदेशी पनडुब्बियों का निर्माण होगा, 'करंज' उन्हीं में से तीसरी है। इसका जलावतरण 31 जनवरी, 2018 को मुम्बई की मझगांव गोदी में नौसेना प्रमुख सुनील लांबा की मौजूदगी में हुआ। यह घातक पनडुब्बी नजर बचाकर दुश्मन का खात्मा कर देगी।

इससे पहले 14 दिसम्बर 2017 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्कॉर्पीन श्रेणी की प्रथम पनडुब्बी आईएनएस 'कलवरी' को औपचारिक रूप से नौसेना के सुपुर्द किया अर्थात् उसे नौसेना में कमीशन मिला जबकि उसका

चीन की चुनौती

- चीन टाइप 96 पनडुब्बी का निर्माण कर कर रहा है, अभी उसके पास टाइप-095 पनडुब्बी है।
- टाइप-095 में 12 पनडुब्बी नियंत्रित मिसाइल रखने की जगह है, पोत रोधी मिसाइलें भी मौजूद।
- 533 मिमी के टारपीडो को दागने के लिए आठ टारपीडो लगे हुए हैं।
- 115 मीटर लंबाई, 12 मीटर चौड़ाई और 11 मीटर ऊंचाई है।
- 250 से 500 मीटर की गहराई पर टाइप-095 का परिचालन किया जा सकता है।
- 32 नॉटिकल मील की रफ्तार से चलती है और 115 नौसैनिक इसमें सवार हो सकते हैं।
- 80 दिन तक लगातार पानी में रहने में सक्षम।

'करंज' दुश्मन का काल क्यों ?

- राडार की पकड़ में नहीं आती, सतह पर मौजूद लक्ष्यों को आसानी से भेद सकती है।
- पारंपरिक डीज़ल-विद्युत ऊर्जा से संचालन
- 50 दिन तक पानी के भीतर रह सकती है, पनडुब्बी में ही लगा है ऑक्सीजन उत्पादन संयंत्र
- 350 मी. गहराई में भी परिचालन संभव, 8 नौसैन्य अफसरों व 35 सैनिकों के रहने का सुविधापूर्ण पर्याप्त स्थान
- 37 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से पानी में चलती है। सतह पर रफ्तार 22 किमी/घंटे
- 18 ब्लेक हॉक तारपीडो/30 पोत रोधी मिसाइलों से लैस व समुद्री सुरंग बिछाने में भी सक्षम।

भारत	
वैश्विक रैंकिंग	4
कुल जहाज	295
विमानवाहक पोत	1
युद्धपोत	14
विध्वंसक	11
लड़ाकू जलपोत	23
पनडुब्बी	15

पाकिस्तान	
वैश्विक रैंकिंग	13
कुल जहाज	197
विमानवाहक पोत	0
युद्धपोत	10
विध्वंसक	0
लड़ाकू जलपोत	0
पनडुब्बी	8

चीन	
वैश्विक रैंकिंग	3
कुल जहाज	714
विमानवाहक पोत	1
युद्धपोत	51
विध्वंसक	35
लड़ाकू जलपोत	35
पनडुब्बी	68

जलावतरण तो 28 अक्टूबर, 2015 को ही हो चुका था। नौसेना सूत्रों के अनुसार 'करंज' को दिसम्बर 2018 में ही कमीशन मिल जाने की संभावना है। इसी श्रेणी की दूसरी पनडुब्बी 'खांदेरी' का जलावतरण 12 जनवरी, 2017 को हुआ और नौसेना में इसे चालू वर्ष के मार्च में कमीशन मिला। फ्रांस की डिजाइन की गई इन 6 पनडुब्बियों पर 23,652 करोड़ की लागत आएगी।

अग्नि-5 का छठा परीक्षण

पिछली 3 जून को स्वदेश में ही विकसित लम्बी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल 'अग्नि-5' का ओडिशा तट पर सफल परीक्षण किया गया। यह मिसाइल परमाणु हथियार ले जाने और 5,000 किलोमीटर की दूरी तक मार करने में समर्थ है। परीक्षण सफल रहा। प्रक्षेपण के दौरान सभी राडारों, ट्रेकिंग, उपकरणों एवं निगरानी स्टेशनों से मिसाइल के हवा में प्रदर्शन पर नज़र रखी गई। मिशन के सभी मकसदों को हासिल कर लिया गया। 'अग्नि-5' ने छठे परीक्षण के दौरान पूरी दूरी तय की। इस का पहला परीक्षण 19 अप्रेल, 2012,

दूसरा 15 सितम्बर 2013, तीसरा 31 जनवरी 2015, चौथा 26 दिसम्बर 2016 और पांचवा परीक्षण 18 जनवरी 2018 को हुआ। सभी पांचों परीक्षण भी सफल रहे। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के अनुसार 'अग्नि-5' नौवहन एवं मार्गदर्शन, वार, हेड एवं इंजन के संदर्भ में नई प्रौद्योगिकी से लैस है।

With Best Compliments

DHL

DHL EXPRESS INDIA PVT. LTD.

53, Panchwati, Udaipur, Tel. : 0294-2414388, Tele Fax : 0294-2414388

E-mail : savvyan2006@yahoo.co.in | savvyan@sancharnet.in

नई किताब

प्रेम, उम्मीद, स्वप्न और संकल्प की कविताएं

'बच्चों की दुनिया मुस्काई' डॉ. रेनू सिरोया 'कुमुदिनी' की प्रकाशित चौथी कृति है। इससे पूर्व उनके तीन गीत संग्रह-गीत मेरे मीत, 'कारवां' अभी बाकी है' और 'काव्य कुमुदिनी' प्रकाशित हो चुके हैं। 'बच्चों की दुनिया मुस्काई' संग्रह में बालोपयोगी 36 गीत-कविताएं हैं। जिनमें फूलों की महक है तो शिवा-प्रताप बनने-बनाने का हौसला और प्रेरणा भी। चंदा मामा तो सदा से ही बच्चों के प्यारे रहे हैं। माताएं बच्चों को गोद में लिए उनका चंदा मामा से लाड़ लड़ाती रही हैं। इस संग्रह में भी अपने चंदा मामा को ढेर सारी टॉफियां लेकर धरती पर उतर आने की बच्चों की मीठी मनुहार है। प्रेम, उम्मीद, स्वप्न और संकल्प की इन कविताओं में एक जगह बचपन की यह उमंग-तरंग दृष्टव्य है - 'इंतजार है उन राहों का/जिनसे अम्बर पे जाऊं/खुशियां समेटूं सबकी खातिर/धरती पर मैं ले आऊं।' लगता है कवयित्री खुद भी इन कविताओं की रचना करते बचपन के मनोभाव में सराबोर रही हैं। बचपन के लम्हे जीवन की बड़ी पूंजी होते हैं, उन्हें सहेजने से आगे का रास्ता सहज हो जाता है। सहज, सरल और सपाट भाषा में रेनु ने गीतों की रचना कर निश्चय ही बाल साहित्य की श्री वृद्धि में अपना योगदान दिया है। साधुवाद!

पृष्ठ संख्या - 44
मूल्य - 60 रु.
प्रकाशक - पुस्तक सदन, उदयपुर

- विष्णु शर्मा हितैषी

स्मृतियां

तुमने ज़िद न छोड़ी....

पौ फटने पर
पुष्पा गतिशील हो
जाती थी
घर-गृहस्थी में
लीन हो जाती थी।
और उस दिन
आवाज लगाने
पर भी नहीं बोली
यह कैसी मूर्छा, कैसी खामोशी थी।

न हिली न डुली
आँखें भी नहीं खोली
लगा कि तुम रूठने का
अभिनय कर रही हो
और तुम्हें मनाने का
सामर्थ्य नहीं रहा हो हम में
हड़बड़-धवड़ में तुम्हें
हॉस्पिटल पहुंचाया
इस उम्मीद के साथ कि -
तुम हाइपोग्लीसिमिया से
उबर कर फिर
लौट आओगी, अपनों के पास

लेकिन तुम तो जीवन की
जंग लड़ रही थी
कई घंटे, कई दिन,
कई माह आईसीयू इंजेक्शन, वेंटीलेटर,
ऑक्सीजन, एमआरआई, एक्सरे,
दवाइयाँ, सिटी-स्केन
सेन्ट्रल लाईन तक
नियोजित कर दी गई थी।
कितनी शान्त थी
दीप्ति मय मुखमण्डल
अध खुली बड़ी आंखें

जिनमें अपनापन, प्यार
और पहचान की
निरन्तर होती कमी
बेहोशी में भी इतनी पीड़ा,
असहनीय दर्द,
दुःख के समंदर में डूबे
बच्चे-नाती और हम सब
सबके चेहरों पर तीव्र वेदना,
घोर-निराशा में डूबी
बेबस निगाहें
अनगिनत होठों पर दुआएं
मिलने वालों का तांता

देश-विदेश, मित्रों, रिश्तेदारों
के फोन - क्या कहते उनसे
हम ही समझ नहीं पा रहे थे
तुम भी आंख नहीं खोल रही थी।
हिलाने-डुलाने भौहों को दबाने
पिंडलियों पर दबाव का भी
कोई प्रतिकार नहीं
चेहरे पर पीड़ा या
मुस्कान का भाव भी नहीं

तुम्हारा घर-संसार दुखों
के पहाड़ के नीचे दबा था
सब इष्ट की प्रार्थना में थे -
माँ दुर्गा-भोले शंकर को
मनाने में जुटे थे।
भोले संकट हरण
मंदिर से भी यही संकेत
मिल रहा था कि तुम
सही सलामत घर आ जाओगी
इस सम्बन्ध में कुछ भी
समझ नहीं आ रहा था तो
मजबूरन मार्ग-दर्शक
सिद्धों के पास उपाय
पूछ कर उन्हें क्रियान्वित किया।

आचार्य व अन्य पंडितों ने
शिवमंदिर में पांच दिन
5 लाख महामृत्युंजय के मंत्र जपे
इक्षु रस और पंचामृत से
किया शिवा अभिषेक
सुबह-शाम आरती
इस आशा से कि -
पालनहार जीवन प्रदान कर दें।

गलता में वानरों को केले
और गायों को गुड़ खिलाया
दान किया, आमेर के
भैरों मन्दिर में
रुद्र पाठ कर
ढोक लगाई दीप दान किया।

लेकिन तुमने जिद न छोड़ी
चिर निद्रा में ही लीन रही
पूरा परिवार
तुम्हारे इर्द-गिर्द
सुना है निश्छल प्रार्थना
असरदार होती है
दुआएं दवाइयों से
अधिक कारगर होती हैं
लेकिन न प्रार्थना कबूल हुई,
न दुआ।
अचानक
तुम अन्तर्ध्यान हो गई
सबको
छोड़ बिलखता
अनन्त में विलीन हो गई।

- मुन्नालाल गोयल, जयपुर

कमल ज्वेलर्स

मैसर्स जमनालाल केशुलाल सोनी

जमनालाल सोनी
भगवान सोनी

सोने व चांदी के आभूषण निर्माता व विक्रेता

108, बड़ा बाजार, मोचीवाड़ा, उदयपुर (राज.), पिन 313001, फोन : 2414415

LAXMI ENGINEERING WORKS

FEW OF OUR OTHER PRODUCT

✦ Jaw Crusher ✦ Bucket Elevator ✦ Belt Conveyor ✦ 3,4 Roller Mill
✦ Hammer Mill ✦ Ball Mill ✦ Whizzer Classifier ✦ Screw Conveyor
✦ Microzine Plant for 15 & 20 ✦ Microns ✦ Material Handling Equipments

OUR SPECIALTY : CUSTOM BUILT PLANTS & MACHINERY

E- 176, Road No. 5, Mewar Industrial Area, Madri, Udaipur - 313003 Tel. : 0294-2490060, 2490735
E-mail : info@laxmiengineering.com | govind@laxmiengineeering.com Website : www.laxmiengineering.com

राजनीति और पार्टी में बढ़ा गहलोत का कद

-उमेश शर्मा

राहुल गांधी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने और उनके द्वारा राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को महासचिव (संगठन) पद पर नियुक्त करने से कांग्रेस में उत्साह और सकारात्मक हलचल देखने को मिल रही है।

अशोक गहलोत राजस्थान के पहले ऐसे नेता है जो वर्तमान में पार्टी में नंबर 2 के ओहदे पर आसीन है। कर्नाटक चुनाव से ठीक पहले कांग्रेस के इस सक्रिय और अनुभवी सेनापति को संगठन का कामकाज सौंपने के कई मायने थे।

सर्वविदित है कि पिछले साल अशोक गहलोत को पंजाब चुनाव के लिए स्क्रीनिंग कमेटी का प्रमुख बनाया गया, वहां कांग्रेस की जीत के दावे कम ही थे और माना जा रहा था कि पंजाब में कांग्रेस की हार प्रदेश भाजपा के डेरे में खुशी की खबर बनकर आएगी। लेकिन पंजाब में कांग्रेस ने न सिर्फ जीत हासिल की बल्कि त्रिशंकु विधानसभा के दावों को खारिज कर सरकार भी बनाई। इसके बाद अशोक गहलोत गुजरात के मुश्किल रण में सफल हुए। हाल ही में संपन्न कर्नाटक चुनाव में भी कांग्रेस की डूबती नैया को उन्होंने ही पार लगाई। कांग्रेस में जानफूंक कर गहलोत ने राहुल गांधी को और अधिक प्रभावित किया है। आलाकमान द्वारा गहलोत को दिल्ली में बड़ी जिम्मेदारी देने के बाद यह संकेत भी मिल गया है कि पायलट और गहलोत दोनों ही नवंबर-दिसंबर में होने वाले राजस्थान विधानसभा चुनाव में जीत की इबारत मिलकर लिखेंगे।

विश्वस्त छवि

राजस्थान के मुख्यमंत्री रह चुके अशोक गहलोत की छवि हमेशा से संगठन में विश्वस्त रही है। वे कांग्रेस के उन चुनिंदा नेताओं में शामिल हैं जो कांग्रेस के अनुषांगिक संगठनों से होते हुए कांग्रेस में आए। 1971 के भारत-पाक युद्ध के समय वे कांग्रेस सेवादल में थे और बंगाल के शरणार्थी कैम्पों में काम करते हुए उन्होंने सियासत का ककहरा पढ़ा।

कांग्रेस के छात्र मोर्चे के वे प्रदेश अध्यक्ष और लगातार कांग्रेस के केन्द्रीय नेतृत्व में रहे हैं। इधर राजस्थान में सचिन पायलट के कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद कार्यकर्ताओं में भारी उत्साह हैं। वे अब सक्रियता से प्रदेश संगठन के निर्देशानुरूप भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ आंदोलन को धार दे रहे हैं। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सचिन के पिता राजेश पायलट और अशोक गहलोत किसी दौर में एक-दूसरे के काफी करीब रहे हैं। पिछले महीनों में उप चुनाव के नतीजों ने गहलोत व पायलट को नजदीक लाने का काम किया है।

गुजरात चुनाव के नतीजे आने के एक महीने बाद राजस्थान में दो लोकसभा और एक विधानसभा सीट पर उप-चुनाव हुए। इन चुनावों की कमान राजस्थान कांग्रेस के अध्यक्ष सचिन पायलट के हाथ में थी। सचिन 2014 में अजमेर लोकसभा सीट से बीजेपी के नेता सांवर लाल जाट के खिलाफ चुनाव हार चुके थे। इससे पहले वो 2009 में इसी सीट से सांसद थे। इस चुनाव में उन्होंने पार्टी के नेता और पूर्व विधायक रघु शर्मा को जीत दिलाकर अपनी हार का बदला तो लिया ही वसुंधरा खेमे में सनसनी भी फैला दी। गहलोत और पायलट की जोड़ी निश्चित रूप से राजस्थान में होने वाले आगामी चुनाव में करिश्मा करेगी। वैसे भी गहलोत राजनीति के जादूगर यूं ही नहीं माने जाते है।

'चाणक्य' बनाएंगे रणनीति

गुजरात और कर्नाटक चुनाव में 'चाणक्य' बनकर उभरे गहलोत के समर्थक अब भी उनके सीएम बनने के दावे कर रहे हैं। लेकिन जानकारों का मानना है कि गहलोत को अब अधिकतर वक्त दिल्ली में बिताना होगा। इस साल राजस्थान के साथ, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में भी चुनाव होने हैं। ऐसे में गहलोत वहां सियासी और राजनीतिक समीकरण बनाने जैसे महत्वपूर्ण कामों को अंजाम देंगे। गहलोत संगठन के काम में व्यस्त रहेंगे और राजस्थान में कांग्रेस को मजबूत बनाने के लिए सक्रिय भूमिका निभाएंगे। गौरतलब है कि अभी तक इस पद पर पिछले कई साल से 10 जनपथ के विश्वासपात्र जनार्दन द्विवेदी विराजमान थे। द्विवेदी करीब डेढ़ दशक संगठन महामंत्री पद पर रहे ।

महादेव भोजनालय
महादेव डाइनिंग
एण्ड एसी हॉल
ढाबा स्टाइल भी उपलब्ध
हर हर महादेव
लालाराम गुर्जर
दीपक गुर्जर
पार्सल सुविधा उपलब्ध
• शुद्ध शाकाहारी • चाइनीज • साउथ इंडियन • गुजराती
• पंजाबी • राजस्थानी • नास्ता, लंच व डिनर
बलीचा बाईपास, उदयपुर, मोबाइल : 9602508505

एनिमल केयर में कॅरियर

अगर जानवरों से प्यार है और उनके इर्द-गिर्द रहने में सहज हैं तो आप वेटरनरी साइंस व एनिमल केयर में कॅरियर बना सकते हैं। जानवरों की सार-संभाल, इलाज से जुड़े फील्ड में कॅरियर बनाकर आप मन में सन्तुष्टि प्राप्त कर सकते हैं और अच्छा-खासा वेतन भी हासिल कर सकते हैं।

-रेणु शर्मा

जानवरों को पालने का शौक बहुत पुराना है लेकिन आधुनिक होते इस युग में यह चलन और बढ़ गया है। लोगों की पशुओं में बढ़ती दिलचस्पी को देखते हुए इस क्षेत्र में कॅरियर की संभावनाएं भी तेजी के साथ पनपी हैं। पशु चिकित्सकों के साथ-साथ कई और तरह के अवसर इस क्षेत्र में पैदा हुए हैं। यदि आप पशु चिकित्सक बनने का सपना देख रहे थे और वह पूरा नहीं हो पाया तो सिर्फ दो साल का डिप्लोमा करके आप अपना यह शौक पूरा कर सकते हैं। आप डिप्लोमा इन वेटरनरी फार्मेसी या डिप्लोमा इन वेटरनरी लाइव स्टॉक डवलपमेंट असिस्टेंट का दो साल का कोर्स करके वेटरनरी फार्मिस्ट बन सकते हैं। पशु-पक्षियों का बीमारी का पता लगाकर उनका इलाज वेटरनेरियन करता है।

कोर्स

इस क्षेत्र में कॅरियर बनाने के लिए अभ्यर्थी वेटरनरी साइंसेज में बैचलर डिग्री और प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा डिप्लोमा, मास्टर डिग्री और पीएचडी स्तर पर भी संबंधित विषय में कोर्स उपलब्ध हैं -

- बैचलर ऑफ वेटरनरी साइंस एंड एनिमल हसबैंड्री(5 वर्ष)
- डिप्लोमा इन वेटरनरी साइंस(2 वर्ष)
- मास्टर ऑफ वेटरनरी साइंस(2 वर्ष)
- मास्टर इन वेटरनरी साइंस(2 वर्ष)

जरूरी योग्यता

वेटरनरी साइंस में बैचलर डिग्री कोर्स करने के लिए अभ्यर्थी को विज्ञान विषयों(फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी) के साथ 12वीं की परीक्षा में पास होना चाहिए। साथ ही 12वीं में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक होने चाहिए। पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशील होना वेटरीनरी डॉक्टर का सबसे जरूरी गुण है। पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम होने पर ही डॉक्टर उनकी परेशानियों को उनके हाव-भाव से समझ सकता है, क्योंकि वह अपनी परेशानी खुद बता पाने में असमर्थ होते हैं।

सैलेरी

वेटरनरी डॉक्टरों की तनख्वाह उनके पद और अनुभव के आधार पर तय होती है। सरकारी वेटरनरी केन्द्रों में फ्रेश ग्रेजुएट को जूनियर वेटरनरी सर्जन के तौर पर नियुक्त किया जाता है। यहां वह 10 हजार से 15 हजार प्रति माह कमा लेते है। जैस-जैसे अनुभव होता है उसकी तनख्वाह उसी अनुपात में बढ़ती जाती है। इस फील्ड में विदेशों में भी खासी मांग रहती है।

क्यों चुने इस क्षेत्र को

भारत में विश्व के किसी भी देश के मुकाबले सबसे ज्यादा पशु है लेकिन वेटरनरी डॉक्टर्स की संख्या काफी कम है। पिछले कुछ सालों से जानवरों में होने वाली जानलेवा बीमारियों ने इस क्षेत्र की ओर ध्यान खींचा है। सरकार की ओर से भी इस दिशा में उपयोगी कदम उठाए जा रहे है, जिससे इस क्षेत्र में नौकरियां पैदा हुई है। वेटरनरी इंडस्ट्री के कॉमर्शियलाइजेशन तथा सरकार की उदार नीतियों के कारण यह इंडस्ट्री काफी तरक्की कर रही है। पशु चिकित्सकों को कई जगह पर जॉब्स के अवसर मिलने लगे है।

मनमोहक एवं सुगन्धित खुशबु जो आपके जीवन में लायें खुशहाली

250 Products Available

CHETAK HORSE

ISO 9001:2008 CERTIFIED

Archana®
Agarbatti

EXPORT QUALITY Since 1947 AGARBATTI

Registered Office :

ARCHANA AGARBATTI
NAVBHARAT INDUSTRIES

N.H. 76, Airport Road, Glass Factory Choraha,
UDAIPUR - 313001 (Rajasthan)
Customer Care Number : 0294-2492161, 2490899

Mob. : +91-77268 51913

E-mail : sales@archanaagarbatti.com
Website : www.archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

प्रत्यूष रथयात्रा

जगन्नाथपुरी : भाई-बहिन का नगर भ्रमण

उड़ीसा के श्रीजगन्नाथपुरी मन्दिर में वर्ष भर में 12 यात्राएं होती हैं, लेकिन आषाढ़ की रथयात्रा सबसे महत्वपूर्ण है, जो 'गुण्डिचा यात्रा' के नाम से विख्यात है। रथयात्रा महोत्सव प्रत्येक वर्ष आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष में द्वितीया तिथि को पूरे देश में बड़े धूमधाम से मनाई जाती है। इस वर्ष यह तिथि 14 जुलाई को पड़ रही है। माना जाता है कि श्रीजगन्नाथ अपने भाई बलभद्र बलराम और बहन सुभद्रा के साथ मन्दिर से निकल अलग-अलग रथों पर सवार होकर श्री गुण्डिचा-मन्दिर के लिए प्रस्थान करते हैं।

सुधीर जोशी

नंदी घोष पर यात्रा

रथयात्रा के लिए विशिष्ट रथों का निर्माण वंश परम्परा में प्रशिक्षित काष्ठशिल्पी ही करते हैं। श्रीजगन्नाथ, श्रीबलभद्र और सुभद्रा जी के विग्रहों के लिए पृथक रथ बनाए जाते हैं। लाल और हरे रंग का रथ श्रीबलभद्र का होता है। इसे तालध्वज कहा जाता है। सुभद्रा जी का रथ लाल और नीले रंग का होता है, जिसे देवदलन कहते हैं। भगवान जगन्नाथ के रथ में लाल और पीले रंग का प्रयोग होता है। यह रथ नंदी घोष के नाम से जाना जाता है।

करिश्माई मन्दिर

जगन्नाथ मन्दिर श्रेष्ठ मन्दिरों में से एक है, जो भगवान जगन्नाथ यानि श्रीकृष्ण को समर्पित है। चार धामों में से एक यह भारत का भव्य मन्दिर ओडिशा राज्य के तटवर्ती शहर पुरी में स्थित है। इस करिश्माई मन्दिर में कई ऐसी बातें है, जो आज के युग में जादू या चमत्कार जैसी ही लगेंगी। इस अद्भुत मन्दिर की सबसे खास बात यह है कि मंदिर पर लगी पताका हमेशा बयार की विपरीत दिशा में ही लहराती है। इसके पीछे क्या कारण है यह आज भी राज बना हुआ है। इस मंदिर के निकट पहुंचते ही बदल जाती है विमान की दिशा। मंदिर की एक और सबसे खास बात यह है कि पुरी के किसी भी स्थान पर आप चले जाएं मंदिर के शिखर पर लगा सुदर्शन चक्र दिखेगा जरूर। जगन्नाथ मंदिर के ऊपर से कोई भी पक्षी या विमान नहीं उड़ पाता। इस मंदिर की कई अद्भुत बातों में यह भी है कि सामान्य तौर पर समुद्र की ओर से हवा धरती की ओर आती है पर पुरी में ठीक इसके विपरीत होता है।

बहुडाजात्रा

गुण्डिचा मंदिर में नौ दिन के बाद भगवान जगन्नाथ मंदिर की ओर वापस प्रस्थान करते हैं। इस यात्रा को बहुडाजात्रा कहा जाता है। श्रीमंदिर के बाहर नौ दिन के दर्शन को उड़ीसा में आडपदर्शन कहा जाता है। वापस आने पर तीनों विग्रह मन्दिर के बाहर दर्शनों के लिए रखे जाते हैं। उनका विशेष शृंगार किया जाता है, जिसे स्थानीय भाषा में सुनाभेस कहा जाता है।

पोहंडी बिजे

पुरी की रथयात्रा में पारंपरिक रीति-रिवाजों को श्रद्धा से निभाया जाता है। घंटे-घड़ियाल, नगाड़ों की ध्वनि और भजन-कीर्तन के बीच भगवान के विग्रह को मंदिर से रथ पर लाना 'पोहंडी बिजे' कहलाता है।

छेरा पोहरा

जब तीनों विग्रह अपने-अपने रथ पर विराजमान हो जाते हैं। तब आचार्य पुरी के राज-परिवार के प्रमुख को निमंत्रण देते हैं। राजा पूर्ववर्ती परंपरा के अनुसार पालकी में आते हैं और मंदिर के प्रथम सेवक होने के नाते रथों के आगे मार्ग को सोने की झाड़ू से साफाई करते हैं। इसे 'छेरा-पोहरा' कहते हैं। रथयात्रा में हजारों भक्त और सेवक रथ खींचते हैं। पुरी में इसे रथटण कहते हैं। सबसे आगे बलराम जी का रथ होता है तो सबसे पीछे जगन्नाथ जी का। दोनों के बीच में इनकी बहन सुभद्रा जी का रथ होता है। लगभग तीन मील के मार्ग से होते हुए रथ शाम तक गुण्डिचा मन्दिर पहुंचते हैं।

गुण्डिचा मन्दिर में बने थे विग्रह

भगवान श्रीजगन्नाथ, श्रीबलभद्र और सुभद्रा जी के गुण्डिचा मन्दिर जाने के पीछे पौराणिक कथा है। इस कथा के अनुसार, एक बार द्वारकाधाम में रोहिणी माता रानियों को व्रज-लीला के प्रसंग सुना रही थीं और वर्जित होते हुए भी सुभद्रा श्रीकृष्ण और बलराम ने लीला सुन ली। भावातिरेक में द्रवित होकर तीनों बिना हाथ-पैर की प्रतिमाओं के समान दिखने लगे। देवर्षि नारद ने प्रभु से उसी रूप में पृथ्वी पर निवास करने का वरदान मांग लिया। उधर, कथा के अनुसार कलियुग में मालवा के राजा इन्द्रद्युम्न ने भगवान की मूर्ति बनवाने का निश्चय किया। तभी देवताओं के शिल्पी विश्वकर्मा एक बूढ़े बढ़ई का रूप धारण करके वहां आए और राजा से यह शर्त रखी कि वे एक भवन में बंद होकर प्रतिमा बनाएंगे, लेकिन जब तक प्रतिमा पूरी न हो जाए, दरवाजा न खोला जाए। लेकिन इन्द्रद्युम्न यह प्रतिज्ञा पूरी न कर सके। विश्वकर्मा अधूरी मूर्तियों को छोड़कर गायब हो गए। तभी आकाशवाणी हुई, हमारी इसी रूप में रहने की इच्छा है। तुम इन तीनों विग्रहों को प्रतिष्ठित करो। राजा इन्द्रद्युम्न ने एक भव्य मन्दिर बनवाकर वहां प्रतिमाओं को प्रतिष्ठित कर दिया। इस प्रकार हुआ श्री जगन्नाथ जी के मंदिर का निर्माण। जिस प्रकोष्ठ में मूर्तियां बनीं, वह गुण्डिचा मन्दिर कहलाया। स्कंदपुराण के अनुसार, भगवान जगन्नाथ ने इन्द्रद्युम्न को आश्वासन दिया था कि वे वर्ष में एक बार गुण्डिचा मन्दिर अवश्य आएंगे।

प्रत्यूष साधना

चातुर्मास : आत्मकल्याण का अवसर

- श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र

चातुर्मास : जैन धर्म में इसे सामूहिक वर्षायोग अथवा चातुर्मास के रूप में जाना जाता है। मान्यता है कि बारिश के मौसम में अनगिनत कीट और छोटे जीव उत्पन्न होते हैं जिन्हें आंखों से नहीं देखा जा सकता। ऐसे जीवों की उत्पत्ति इस मौसम में सर्वाधिक होने से उनकी सुरक्षा भी आवश्यक है। ये भी प्राकृतिक सन्तुलन का एक हिस्सा है। अतः वैदिक, बौद्ध और श्रमण परम्परा के साथ साधु-साध्वियां चातुर्मास के दौरान स्थिरावास कर इन्हें उन्मुक्त जीवन के लिए अभयदान प्रदान करते हैं। ये साधु, संत और साध्वियां वर्षा वाले चार माह एक ठिकाने पर स्थित होकर स्वकल्याण के साथ दूसरों के कल्याण के उद्देश्य से ज्यादा से ज्यादा स्वाध्याय, संवर, पोषद, प्रतिक्रमण, तप, प्रवचन तथा जिनवाणी के प्रचार-प्रसार को महत्व देते हैं।

यह सर्वविदित है कि जैन साधुओं का कोई स्थायी ठौर-ठिकाना नहीं होता तथा जन कल्याण की भावना संजोये वे वर्ष भर एक स्थल से दूसरे स्थल तक पैदल पहुंच कर श्रावक-श्राविकाओं को अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य का विशेष ज्ञान बांटते है तथा पूरे चातुर्मास अर्थात् 4 महीने तक एक क्षेत्र की मर्यादा में स्थाई रूप से निवासित रहते हुए जैन दर्शन के अनुसार मौन-साधना, ध्यान, उपवास, स्वअवलोकन की प्रक्रिया, सामयिक और प्रतिक्रमण की विशेष साधना, धार्मिक उद्बोधन, संस्कार शिविरों से हर शख्स के मन मन्दिर में जन-कल्याण की भावना जाग्रत करने का सुप्रयास जारी रहता है। तीर्थंकरों और सिद्ध पुरुषों की जीवनियों से अवगत कराने की प्रक्रिया इस पूरे वर्षावास के दौरान निरंतर गतिमान रहती है। जिससे श्रावक-श्राविका जीव मात्र के हित में कार्यों के लिए प्रेरित होते हैं। एक सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार पर्युषण पर्व की आराधना भी इसी दौरान होती है, पर्युषण के दिनों में जैनी की गतिविधि विशेष रहती है तथा जो जैनी वर्ष भर या पूरे चार माह तक कतिपय कारणों से जैन दर्शन में ज्यादा समय नहीं प्रदान कर पाते वे पर्युषण के 8 दिनों में अवश्य ही रात्रि भोजन का त्याग, ब्रह्मचर्य, ज्यादा स्वाध्याय, मांगलिक प्रवचनों का लाभ तथा साधु-संतों की सेवा में संलिप्त रह कर जीवन सफल करने की मंगल भावना दर्शाते हैं। चातुर्मास का सही मूल्यांकन श्रावकों और श्राविकाओं के द्वारा लिए गए स्थायी संकल्पों एवं व्रत प्रत्याख्यानों से होता है। यह समय आध्यात्मिक क्षेत्र में लगातार नई ऊँचाइयों को छूने की प्रेरणा प्राप्त करने के लिए है। अध्यात्म जीवन विकास की वह पगडण्डी है जिस पर अग्रसर होकर हम अपने आत्मस्वरूप को पहचानने की चेष्टा कर सकते हैं। साधु-साध्वियों के भरसक सकारात्मक प्रयासों की बदौलत कई युवा धर्म की ओर उन्मुख होकर नया ज्ञान-ध्यान सीखकर स्वयं के साथ दूसरों के कल्याण की सोच-हासिल करते हैं। कई श्रावक-सुश्राविकाएं पारंगत होकर स्वाध्यायी बनकर जिन क्षेत्रों में साधु-साध्वी विचरण नहीं कर रहे हैं, वहां जाकर स्वाध्याय तथा जन कल्याण की भावना का प्रचार-प्रसार कर अपना जीवन संवार लेते हैं। सैकड़ों जिज्ञासाओं को शांत करने का सुअवसर है, चातुर्मास। स्वधर्मी के कल्याण की अलख जगाता है चातुर्मास। जीव-दया की ओर उन्मुख करता है चातुर्मास। तपस्वी तथा आचार्य भगवन्तों के पावन दर्शन से लाभान्वित होने का मार्ग है चातुर्मास। सत्साहित्य से रूबरू होने का जरिया है, चातुर्मास। उपवास से कर्म निर्जरा का सन्मार्ग दिखाता है चातुर्मास। सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र का पाठपढ़ाता है चातुर्मास। कई धार्मिक शैक्षणिक शिविरों का स्रोत है चातुर्मास। कई सेवा कार्यों के आयोजनों का प्रेरक है, चातुर्मास।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

भारत टेंकर ट्रांसपोर्ट कम्पनी

प्रोपराईटर : पंडित लक्ष्मीनारायण गौड़

पण्डित एण्ड संस कोन्ट्रेक्टर्स

सभी प्रकार के एसिड व केमीकल के ट्रांसपोर्टेशन का कार्य टेंकरों द्वारा समस्त भारत में करते हैं।
भारी मशीनरी व एक्सीडेन्टल गाड़ियों को उठाने के लिये क्रेनें हर समय उपलब्ध रहती हैं।
हैवी अर्थमूविंग मशीनें (टाटा-हिटाची, एल. एण्ड टी.-सी.के.-90, पोकलेन, डोजर, डम्पर) किराये पर उपलब्ध हैं।

35–ए, सेन्ट्रल एरिया, आवरी माता मंदिर के सामने, उदयपुर (राज.)
दूरभाष : 2584501, 2583334 (ऑ.) 2584502 (नि.) केबल : पंडित जी
ब्रांच : बडौदा, वापी, अंकलेश्वर

We are grateful & thankful for keeping faith in us,
We will Create and Innovate Bright future for your ward.

30

A Name with Ample Opportunity in the Field of Education

ABHINAV
Senior Secondary School

Nursery to XII

(Hindi & English Medium)

SCIENCE COMMERCE ARTS

-: Campus :-
9, Adarsh Nagar, Behind Police Line,
Udaipur (Raj), 9413762552

www.udaipurabhinavschool.com

रेशम से भरेगा रीढ़ का जख्म

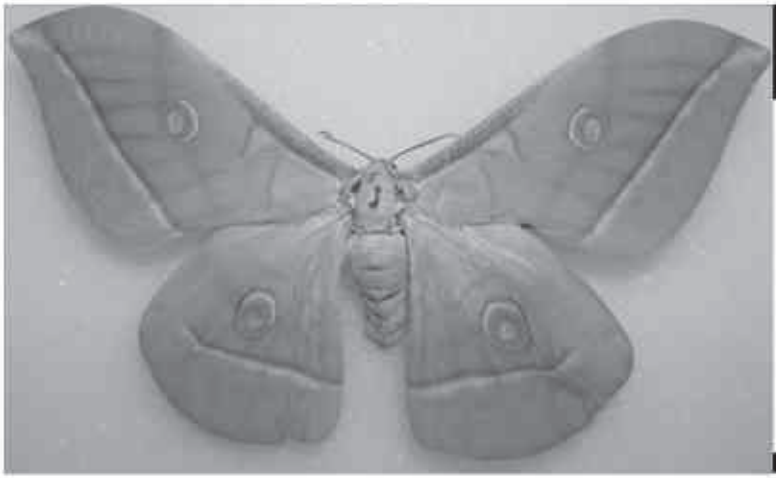

वैज्ञानिकों ने एशियाई कीट से प्राप्त रेशम में रीढ़ की हड्डी को जोड़ने की क्षमता पाई

2.5

से पांच लाख लोग दुनियाभर में रीढ़ की हड्डी में चोट से पीड़ित होते हैं।

रेशम यानी सिल्क को उम्दा कपड़ा तैयार करने की चीज माना जाता है। लेकिन शोधकर्ताओं ने एक नए अध्ययन में पाया कि रेशम की मदद से रीढ़ की हड्डी के गंभीर जख्मों को भी ठीक किया जा सकता है।

ब्रिटेन की ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी और अबेरदीन यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के अनुसार एशिया में मिलने वाले जंगली रेशम-कीट के रेशम में रीढ़ की हड्डी के जख्म को दुरुस्त करने के उपयुक्त गुण हैं। इस रेशम को साफ और बैक्टीरिया रहित बनाकर किसी हादसे में जख्मी रीढ़ की मरम्मत के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इस संशोधित रेशम का इस्तेमाल मस्तिष्क के जख्म को दुरुस्त करने में भी किया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने जिस प्रजाति के रेशम-कीट के रेशम में ये गुण पाए हैं, उसका वैज्ञानिक नाम 'एंथेराइया पार्नी (एपी)' है।

फिलहाल इलाज नहीं

रीढ़ की हड्डी में गंभीर चोट या जख्म का वर्तमान में कोई इलाज नहीं है। दरअसल रीढ़ की हड्डी का जख्म तभी दुरुस्त हो सकता है, जब उसके भीतर तंत्रिका कोशिकाओं का निर्माण हो। लेकिन जख्मी तंत्रिका कोशिकाएं चोट के कारण बने गड्ढे को पार कर अन्य तंत्रिका कोशिकाओं से नहीं जुड़ पाती। इस कारण तंत्रिका कोशिकाओं की बढ़त नहीं हो पाती, जिससे जख्म नहीं भर पाता।

नसों की बढ़त में सहारा

एंथेराइया पार्नी का संशोधित रेशम अर्थात् एपी रेशम रीढ़ की हड्डी के जख्मी हिस्से में तंत्रिका कोशिकाओं नसों को फैलने और बढ़ने के लिए सहारा देता है। यह दरअसल जख्म के गड्ढे के अलग-अलग छोरों के बीच किसी पुल की तरह काम करता है। उनके बीच मचान की तरह तनकर यह उन सिरों को एक-दूसरे से जोड़ देता है, जिससे नसों को जख्मी क्षेत्रों में बढ़ने और फैलने में सहयोग मिलता है।

जरूरत के अनुरूप सख्त

शोधकर्ताओं ने पाया कि यह रेशम उतना ही सख्त है, जितना जख्मी तंत्रिका कोशिकाओं को सहारा देने के लिए चाहिए। अगर यह इससे अधिक सख्त होता तो यह रीढ़ की हड्डी में आसपास मौजूद स्वस्थ ऊतकों को नुकसान पहुंचाता। अगर यह इससे काफी कोमल होता तो तंत्रिका कोशिकाएं इसके इर्द-गिर्द विकसित नहीं हो पातीं।

बड़ी उम्मीद

- एपी रेशम की सतह पर आरजीडी नामक विशेष रसायन की श्रृंखला होती है।
- यह श्रृंखला रेशम के ग्राहियों (रिसेप्टर) को तंत्रिका कोशिकाओं से बांधती है।
- ग्राहियों के सहारे तंत्रिका कोशिकाओं को बढ़ने व परस्पर जुड़ने की राह मिलती है।
- मरीज की रीढ़ की प्रतिरक्षा कोशिकाएं इस रेशम पर प्रतिकूल प्रतिक्रिया नहीं देती
- इस वजह से रीढ़ की जख्मी हड्डी में उपचार के दौरान सूजन काफी कम होती है।
- यह रेशम मस्तिष्क के जख्म भी दुरुस्त करने में मददगार हो सकता है।

एंथेराइया पार्नी
मामूली कीट, बेशकीमती गुण

- यह एक पतंगा है जिसका मूल स्थान दक्षिणी चीन है।
- चाइनीज तशर मौथ या टेंपरेचर तशर मौथ भी कहते हैं।
- पाले जाने वाले रेशम-कीटों के विपरीत वनों में रहता है।
- ईसा पूर्व 200 में इसके व्यावसायिक उपयोग के सबूत हैं।

प्रस्तुति : मदन पटेल

संघ-दिल दादा

प्रणब हुए मुखरजी, पिलाई 'राष्ट्रवाद' की घुट्टी

नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 'संघ शिक्षा वर्ग' में शिरकत करने पहुंचे कांग्रेस के वरिष्ठतम नेता एवं पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी

> भारत की राष्ट्रीयता एक भाषा और एक धर्म में नहीं है। हम वसुधैव कुटुंबकम में भरोसा करने वाले लोग हैं। भारत के लोग 122 से ज्यादा भाषा और 1600 से ज्यादा बोलियां बोलते हैं। यहां सात बड़े धर्म के अनुयायी हैं और सभी एक व्यवस्था, एक झंडा और एक भारतीय पहचान के तले रहते हैं।
>
> -प्रणब मुखर्जी, पूर्व राष्ट्रपति

इन चंद पंक्तियों के साथ प्रणब दा अपना उद्बोधन शुरू कर रहे थे और पूरे देश की नजरें टीवी पर टिकी थीं। कांग्रेस को यह भ्रम था कि प्रणब दा सारे मिथकों को तोड़कर संघ को ऐसा सबक सिखाएंगे कि फिर किसी कांग्रेसी विचारधारा से जुड़े नेता को संघ अपने कार्यक्रम में बुलाने की हिमाकत नहीं करेगा। दूसरी ओर भाषण से पूर्व संघ और भाजपा में भी अजीब तरह की घबराहट थी। लेकिन प्रणब दा के नपे-तुले शब्दों ने उस घबराहट को दरकिनार कर दिया। सारे भ्रम और मिथक तोड़ दिए। अंग्रेजी में दिए गए प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावी भाषण में मुखर्जी ने जिस देश के इतिहास, संस्कृति और उसकी पहचान पर रोशनी डाली वह नेहरू की मशहूर किताब 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' वाला ही भारत था। यहां तक कि उनके भाषण का प्रवाह भी वही था जो नेहरू की किताब में है। भाषण की शुरुआत बहुत सटीक थी। उन्होंने कहा, मैं यहां तीन चीजों के बारे में अपनी समझ साझा करने आया हूं, राष्ट्र, राष्ट्रवाद और राष्ट्रभक्ति। ये तीनों एक दूसरे से जुड़े हैं, इन्हें अलग नहीं किया जा सकता। इन्हीं दिल जीतने वाले शब्दों के साथ उन्होंने संघ को राष्ट्रवाद की ऐसी घुट्टी पिलाई की उनकी यह शिरकत संघ-भाजपा और कांग्रेस के लिए यादगार बन गई। उन्होंने यह भी कहा कि हम सहमत हो सकते हैं, असहमत हो सकते हैं, लेकिन हम वैचारिक विविधता को दबा नहीं सकते। प्रणब दा बोले मैं 50 सालों से ज्यादा के सार्वजनिक जीवन में रहते हुए कह रहा हूं कि बहुलतावाद, सहिष्णुता, मिलीजुली संस्कृति, बहुभाषिकता ही हमारे देश की आत्मा है। यूं कह सकते हैं कि उनका पूरा भाषण उसी नेता के राजनीतिक दर्शन का निचोड़ था जिसके सामने

आरएसएस और बीजेपी कभी पटेल, तो कभी बोस को खड़ा करने की कोशिश करते रहे हैं। इसके बाद उन्होंने शब्दकोश से 'नेशन' की परिभाषा पढ़कर बताई, यहीं से उनके पूरे भाषण का एजेंडा और टोन तय हो गया कि कुछ बुनियादी बातों के बारे में वे क्लास लेने के मूड में हैं। उन्होंने भाषण की शुरुआत महाजनपदों के दौर से यानी ईसा पूर्व छठी सदी से की, ये भारत का ठोस, तथ्यों पर आधारित और तार्किक इतिहास है। मुखर्जी ने बताया कि किस तरह 'उदारता' से भरे वातावरण में रचनात्मकता पली-बढ़ी, कला-संस्कृति का विकास हुआ और ये भी बताया कि भारत में राष्ट्र की अवधारणा यूरोप से बहुत पुरानी और उससे कितनी अलग है। ये बहुत अहम बात है जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि राष्ट्र के दो मॉडल हैं, यूरोपीय और भारतीय। यूरोप का राष्ट्र एक धर्म, एक भाषा, एक नस्ल और एक साझा शत्रु की अवधारणा पर टिका है। जबकि भारत राष्ट्र की पहचान सदियों से विविधता और सहिष्णुता से रही है। उन्होंने 'सेकुलरिज्म को आस्था' बताया और ये भी कहा कि भारत में 'संविधान के अनुरूप देशभक्ति ही सच्ची देशभक्ति है'। उन्होंने हिंदुत्व की संस्कृति की पुरजोर वकालत करने वालों के बीच 'कम्पोजिट कल्चर' यानी मिली-जुली संस्कृति की बात करते हुए कहा कि 'बहस में हिंसा खत्म होनी चाहिए, देश में गुस्सा और नफरत कम हो, प्रेम और सहिष्णुता बढ़े। कुल मिलाकर उनका पूरा भाषण उदार, लोकतांत्रिक, प्रोग्रेसिव, संविधान सम्मत, मानवतावादी भारत की बात करने वाला था जो गांधी-नेहरू का मिला-जुला राजनीतिक दर्शन है। कांग्रेस भी अब तालियां बजा रही हैं। प्रणब मुखर्जी ने साबित किया कि वे पिछली पीढ़ी के पढ़े-लिखे समझदार नेता हैं और उनके जैसे लोगों की बातों को आजकल कम ही सुना जा रहा है।

सेवाभाव बनाम राष्ट्रवाद की राजनीति

मुखर्जी को लेकर गैरभाजपाई दलों में बेचैनी बढ़ गई लेकिन सियासत के इतर समझना होगा कि आरएसएस की भूमिका केवल आजादी के आंदोलन तक सीमित नहीं है। बीते 70 वर्षों में हर प्राकृतिक विपदा, युद्ध की स्थिति, पॉलिटिकल वैक्यूम, इमरजेंसी, ट्रेन हादसे आदि हालातों में संघ की सकारात्मक भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। पूर्व राष्ट्रपति प्रबण मुखर्जी का नागपुर जाकर संघ के कार्यक्रम में हिस्सा लेना सेवाभाव का सम्मान भी माना जा सकता है। इसे राष्ट्रवाद की राजनीति के तराजू पर तौलना भले ही सियासी दलों को भा रहा हो पर यह इसका मुफीद मौका नहीं है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर चलने का दावा करने वाले दलों को भी सोचना होगा कि क्या गांधी ने वर्ष 1934 में संघ के कार्यक्रम में हिस्सा नहीं लिया था? आजादी के बाद तमाम ऐसे नेता जिन्होंने अपनी कार्यप्रणाली और ईमानदारी से जनता के दिल में जगह बनाई। उनमें से तमाम संघ के कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं तो राष्ट्रपति या पूर्व राष्ट्रपति के लिए क्या कोई अलग नियम बनाया गया है। यदि ऐसा नहीं है तो सियासत करना मुनासिब नहीं है।

नपा-तुला संबोधन

राजनीतिक तौर पर उनका भाषण नपा-तुला था इसलिए उनसे कोई न नाराज हुआ न किसी ने गुस्सा किया। मुखर्जी उन चंद नेताओं में से एक हैं जिन्होंने देश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विकास के साथ-साथ भारतीय जनसंघ का जन्म और बाद में उसी से बीजेपी का निर्माण होते देखा है। उन्होंने देखा है कि कैसे एक छोटे से राजनीतिक-सांस्कृतिक दल से बीजेपी आज देश की एक बड़ी राजनीतिक ताकत बनकर खड़ी है।

– शांतिलाल शर्मा

गृहस्थ संत ने की खुदकुशी

मॉडलिंग की दुनिया से मोक्ष पथ के राही बने भय्यूजी की मौत पर संशय का कोहरा

मॉडलिंग से आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करने वाले भय्यूजी महाराज ने गोली मारकर खुदकुशी कर ली। उन्हें इंदौर के बॉम्बे अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। भय्यूजी उस वक्त सुर्खियों में आए जब उन्होंने सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे का अनशन तुड़वाने में अहम रोल निभाया था। भय्यूजी महाराज का जीवन काफी दिलचस्प रहा। इनका वास्तविक नाम उदय सिंह शेखावत था, लेकिन मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में इन्हें लोग भय्यूजी महाराज के नाम से जानते थे। वे ऐसे आध्यात्मिक गुरु थे जिनकी गृहस्थी थी और पूर्व पत्नी माधवी से एक बेटी कुहू है। हाल ही में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इन्हें राज्यमंत्री का दर्जा दिया था, जिसे उन्होंने लेने से इनकार कर दिया।

राजनीति में न किसी से दोस्ती न किसी से बैर

मध्य प्रदेश की बीजेपी सरकार में मंत्री पद को ठुकराने वाले भय्यू महाराज का कहना था कि 'किसी संत के लिए पद कोई अहमियत नहीं रखता। जब कोई पद या स्टेटस आपके मन, विवेक और अंतरात्मा को ही न छू पाए – उसके बारे में क्या सोचना?' वैसे उनके इस बयान के साथ-साथ उनकी नाराजगी की भी खबर आई थी। भय्यूजी महाराज की सामाजिक सेवाओं और सलाहियत को शिरोधार्य करने वालों की फेहरिस्त में एक से एक बड़े नाम आते हैं। भारतीय राजनीति में अपना दबदबा रखने के कारण ही वे यूपीए सरकार में अन्ना हजारे का अनशन तुड़वाने और नरेंद्र मोदी के गुजरात में सीएम रहते सद्भावना व्रत को भी पूरा करवाने पहुंचे थे। इतने मजबूत पॉलिटिकल नेटवर्क के बावजूद किसी पार्टी विशेष से उनका नाम नहीं जोड़ा गया। यानि बैर किसी से भी नहीं और दोस्ती सभी से। खुद के संत होने के चलते मंत्री पद ठुकरा देने वाले भय्यूजी महाराज की कलाई रौलेक्स के बगैर कभी सूनी नहीं रही। इंदौर के आलीशान बंगले में रहने वाले भय्यूजी मर्सिडीज से चलते थे।

उदय सिंह कैसे बने थे भय्यूजी

भय्यूजी को फॉलोअर्स भगवान की तरह पूजते थे। उनका जन्म जमींदार परिवार में हुआ था। आध्यात्म की तरफ उनका झुकाव बचपन से ही था जो युवावस्था तक आते-आते बढ़ता गया। जब वे गांव से शहर आए तो सबसे पहले प्राइवेट नौकरी की, लेकिन उनका मन नहीं लगा। अपने फ्रेशचेहरे की वजह से उन्होंने मॉडलिंग की दुनिया में हाथ आजमाया। उन्हें बड़ी कंपनियों के विज्ञापन मिलने लगे लेकिन बाद में आध्यात्म के झुकाव ने उन्हें पूरी तरह अपनी ओर खींच लिया और वे भय्यूजी महाराज बन गए। उन्होंने इंदौर में सद्गुरु दत्त धार्मिक और परमार्थ ट्रस्ट की स्थापना की। इसके बाद वह पूरी तरह धार्मिक और सामाजिक कार्यों में जुट गए। उन्होंने कई संगठनों और सरकार के बीच मध्यस्थता का भी काम किया।

सुसाइड नोट पर सस्पेंस बरकरार

भय्यू महाराज के सुसाइड नोट के दूसरे पन्ने में उन्होंने पुराने सेवादार विनायक को संपत्ति के साथ-साथ सारे वित्तीय अधिकार सौंप दिए। इस बात से परिजन समेत ट्रस्ट के पदाधिकारी भी परेशान। हालांकि इस बात की पुष्टि अभी नहीं हो पाई है कि सुसाइड नोट असली है या नकली। पुलिस हैंडराइटिंग एक्सपर्ट की मदद से भय्यूजी की राइटिंग और सुसाइड नोट का मिलान कर रही है। इंदौर में समर्थकों के बीच 13 जून को भय्यूजी महाराज का अंतिम संस्कार संपन्न हुआ। दोपहर 2.30 के करीब 17 साल की बेटी कुहू ने चिता को अग्नि दी। भय्यूजी महाराज के पार्थिव शरीर के एक छोर पर उनकी बेटी कुहू तो दूसरे छोर पर उनकी सौतेली मां डॉ. आयुषी शर्मा बैठी थीं, लेकिन दोनों ने एक-दूसरे की ओर एक बार भी नहीं देखा।

नहीं दिखे मध्यप्रदेश सरकार के मंत्री

भय्यूजी की अंतिम यात्रा में केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले, महाराष्ट्र सरकार में मंत्री पंकजा मुंडे, गिरीश महाजन और एकनाथ शिंदे ने शिरकत की लेकिन शिवराज सरकार का कोई मंत्री दिखाई नहीं दिया। मध्य प्रदेश सरकार में राज्यमंत्री का दर्जा पाने वाले कम्प्यूटर बाबा और योगेंद्र महंत समेत कई साधु-संत भी अंतिम यात्रा में शामिल हुए। इंदौर के कलेक्टर निशांत वारवड़े ने सरकार का प्रतिनिधित्व किया।

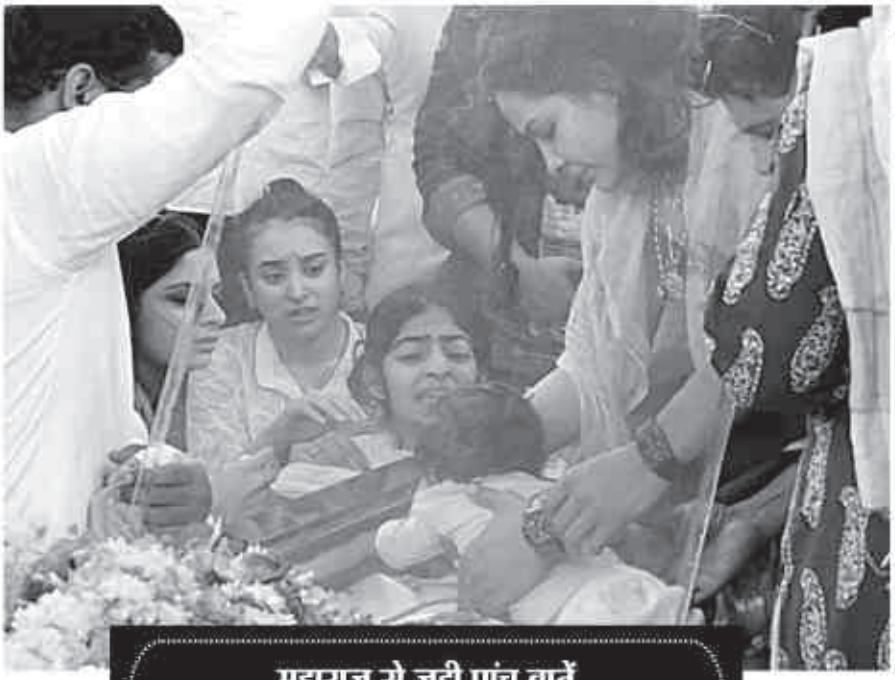

कभी सन्यासी, कभी गृहस्थ!

आध्यात्मिक गुरु भय्यूजी महाराज की मौत ने पूरे देश में हड़कंप मचा दिया है। हर कोई जानना चाहता है कि वो कौन सी वजह थी जिसने एक विनम्र और आध्यात्मिक छवि के व्यक्ति को आत्महत्या करने पर मजबूर कर दिया। हर जुबान पर यही सवाल है कि दूसरों को डिप्रेशन से निकलने का ज्ञान देने वाला शख्स आखिर खुद कैसे डिप्रेशन में आ गया। भय्यूजी की छवि एक ऐसे पारिवारिक शख्स की थी जो धार्मिक अनुष्ठानों में गहरी रुचि रखते थे। उनकी पहली पत्नी माधवी की मौत ने उन्हें बहुत अकेला कर दिया था। गृहस्थी त्यागकर उन्होंने घोषणा की थी कि अब वह कभी शादी नहीं करेंगे। भय्यूजी की हालत देखकर उनकी मां और बहन ने उन पर दूसरी शादी करने का दबाव बनाया था। बहन ने दो दिनों तक खाना न खाकर भय्यूजी को शादी के लिए राजी कर लिया था। इसके बाद भय्यूजी ने ग्वालियर में डॉ आयुषी के साथ दूसरी शादी की। अप्रैल 2017 में हुई इस शादी को लेकर सभी लोग हैरान थे। बताया जा रहा है कि भय्यूजी के डिप्रेशन की वजह बेटी कुहू और उसकी सौतेली मां आयुषी के बीच तकरार थी। दूसरी शादी के बाद परिवार का माहौल बहुत बिगड़ गया था। पहली पत्नी माधवी की बेटी कुहू के अपनी सौतेली मां आयुषी से अच्छे संबंध नहीं थे। कुहू अपनी सौतेली मां को पसंद नहीं करती थी।

पत्नी से चोरों की तरह मिलते थे महाराज : रानी

भय्यूजी महाराज पत्नी और पूर्व पत्नी से हुई बेटी के बीच जंग में बुरी तरह फंसे थे। बेटी के डर से उन्हें पत्नी से चोरों की तरह मिलने आना पड़ता था। यह खुलासा भय्यूजी महाराज की सास रानी शर्मा ने पुलिस के समक्ष किया है। उन्होंने यह भी बताया कि उनके पति अतुल शर्मा इस शादी के लिए राजी नहीं थे। महाराज ने भरोसा दिलाया था कि कुहू मान गई है। वह शादी में भी नहीं आई। शादी के 10 दिन बीते ही थे कि कुहू ने घर आकर हंगामा किया और आयुषी के साथ मारपीट की। रानी के मुताबिक आयुषी को पांच महीने का गर्भ था। इस दौरान कुहू इंदौर आई थी। उसने कार से उतरने से इंकार कर दिया। उसका कहना था कि वह घर में तभी प्रवेश करेगी जब आयुषी बाहर निकलेंगी। बाद में भय्यूजी ने आयुषी को पीहर भेज दिया। इस दौरान बेटी के डर से भय्यूजी रात 12 बजे दबे पांव आते थे। वे कुहू के जागने से पहले 6 बजे निकल जाते थे। आरोप है कि भय्यूजी के समझाने पर कुहू आत्महत्या करने लेने की धमकी देती थी। - मोहन गौड़

महाराज से जुड़ी पांच बातें

- भय्यूजी महाराज मॉडल रह चुके हैं। मॉडलिंग का करियर छोड़कर उन्होंने आध्यात्म का रास्ता चुना। वे सियाराम शूटिंग के लिए मॉडलिंग करते थे।
- वे दूसरे आध्यात्मिक गुरु से बिल्कुल अलग थे। वे कभी खेतों की जुताई करते देखे जाते थे तो कभी क्रिकेट खेलते, घुड़सवारी और तलवारबाजी भी करते।
- 29 अप्रैल 1968 में मध्य प्रदेश के शाजापुर जिले के शुजालपुर में जन्मे भय्यूजी के चहेतों के बीच धारणा थी कि उन्हें भगवान दत्तात्रेय का आशीर्वाद हासिल है। महाराष्ट्र में उन्हें राष्ट्र संत का दर्जा मिला हुआ है। वह सूर्योपासक थे। घंटों जल समाधि का उनका अनुभव और अंदाज भी निराला था।
- भय्यूजी के ससुर महाराष्ट्र कांग्रेस के अध्यक्ष रहे हैं। केंद्रीय मंत्री विलासराव देशमुख से उनके करीबी संबंध थे। बीजेपी अध्यक्ष नितिन गडकरी से लेकर संघ प्रमुख मोहन भागवत उनके भक्तों की सूची में शामिल हैं। महाराष्ट्र की राजनीति में राजनीतिक दल उन्हें संकटमोचक के तौर पर देखते थे।
- ग्लोबल वॉर्मिंग के चलते वे सदैव चिंतित रहते थे। इसीलिए गुरु दक्षिणा के रूप में एक पेड़ लगवाते थे। अब तक 18 लाख पेड़ उन्होंने लगवाए थे। आदिवासी जिलों देवास और धार में उन्होंने करीब एक हजार तालाब खुदवाए। वह नारियल, शॉल, फूलमाला भी नहीं स्वीकारते थे।

अमेरिका-नॉर्थ कोरिया ने मिलाया हाथ

काम आया 'ट्रंप कार्ड'

65 साल बाद दुश्मन बने दोस्त

-सुनील पंडित

11 जून 2018 को सिंगापुर के सेंटोसा द्वीप पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और नॉर्थ कोरिया के शासक किम जोंग उन की मुलाकात ने दुनिया को राहत की खबर दी। एक-दूसरे को आंखें दिखाने और आक्रामक भाषा का प्रयोग करने वाले ट्रंप और किम दोस्त की तरह मिले। पैंसठ साल की दुश्मनी की कड़वाहट 90 मिनट की बातचीत में खत्म हो गई। एक दस्तावेज पर भी हस्ताक्षर हुए जिसके अनुसार नॉर्थ कोरिया परमाणु निरस्त्रीकरण करेगा और बदले में अमेरिका उसका सुरक्षा कवच बनेगा। तानाशाह किम जोंग उन का परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए तैयार हो जाना अमेरिका की बड़ी सफलता माना जा रहा है। नॉर्थ कोरिया को एक गैर जिम्मेदार देश के रूप में माना जाता रहा है। जिसके पास बेहद खतरनाक परमाणु हथियार हैं। किम जोंग के रवैये में बदलाव तो तब ही साफ नजर आने लगा था, जब उन्होंने सीमा पार कर दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति से हाथ मिलाया था। किम के ताजा चीन दौरे को भी इसी सीरिज की कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। आर्थिक प्रतिबंधों ने नॉर्थ कोरिया की अर्थव्यवस्था को खोखला कर दिया था और किम की समझ में आने लगा था कि परमाणु हथियार होना ही सब कुछ होना नहीं है।

अमेरिका और नॉर्थ कोरिया के बीच ये बैठक शीत युद्ध के बचे खुचे अवशेषों की सफाई का भी लक्षण है। शीत युद्ध के दौर में दक्षिण कोरिया और नॉर्थ कोरिया की दुश्मनी पैनी होती गई। दक्षिण कोरिया के साथ अमेरिका था और नॉर्थ कोरिया के सिर पर सोवियत संघ का हाथ था, लेकिन अब ये परिदृश्य काफी कुछ बदल चुका है। न तो सोवियत संघ रहा और न शीत युद्ध। दुनिया के तमाम देशों के रिश्ते नए ढंग से परिभाषित हो चुके हैं। ऐसे में नॉर्थ कोरिया और साउथ कोरिया भी शीत युद्ध की छाया से बाहर आना चाहते हैं। अंतरराष्ट्रीय संबंधों में न तो कोई स्थाई दोस्त है और न स्थाई शत्रु। सिर्फ हित स्थाई होते हैं। ट्रंप और किम की मुलाकात इसका एक और सबूत है।

बड़ी डील अभी बाकी

ये बात भी खास रही की समिट के बाद अमेरिका लौटकर ट्रम्प ने प्रेस कांफ्रेंस में ये बताने की पूरी कोशिश की कि बातचीत बेहद गंभीर थी। किम पर ट्रम्प को कितना भरोसा है और क्या किम मुकर सकते हैं? इस सवाल के जवाब में ट्रम्प ने कहा- हां, बिलकुल, हो सकता है। मैं 6 महीने बाद यहां खड़ा हो कर कहूं कि मैं गलत था लेकिन मैं ऐसा नहीं कहूंगा, मैं कोई और बहाना सोचूंगा और फिर वो हंसने लगे। ऐसे में आप सोचिए कि इस डील पर कैसे भरोसा किया जा सकता है? हाल ही में अमेरिका की वादाखिलाफी को भुगत रहे ईरान ने उत्तर कोरिया को चेतावनी दी है कि अमेरिका पर भरोसा न करे। बड़ी मेहनत से ईरान के साथ की गई परमाणु डील से ट्रम्प ने अकेले ही हाथ खींच लिया। वैसे शिखर सम्मलेन के एक दिन बाद ये बात सामने आई कि अमरीका चाहता है कि उत्तर कोरिया अगले ढाई वर्ष के भीतर बड़े पैमाने पर परमाणु निरस्त्रीकरण करके दिखाए। बेशक शिखर सम्मेलन की तस्वीरें शानदार थीं लेकिन जानकार कह रहे हैं कि समझौते में ऐसा कुछ है ही नहीं जो 2005 के समझौते में नहीं था। अब भी उत्तर कोरिया की तरफ से कोई वादा नहीं है कि वो पूरी तरह से परमाणु निरस्त्रीकरण करेंगे। इस बात को ट्रम्प भले ही माने या नहीं मगर इस मुलाकात से किम ही बड़े नेता बन कर उभरे हैं। अमेरिका में कई जानकार यह भी कह रहे हैं कि ट्रम्प ने वार गेम यानी सैनिक अभ्यास खत्म करने का वादा कर बड़ी भूल की है। वो जितना हासिल नहीं कर पाए उतना दे आए हैं। दक्षिण कोरिया के दौरे पर अमरीकी विदेशमंत्री माइक पोम्पियो ने कहा कि उत्तर कोरिया के साथ 'एक बड़ी डील पर काम होना अभी बाकी' है। बड़ा सवाल है कि क्या किम अपने हथियार छोड़ेंगे? अगर उनके पास परमाणु हथियार न होते तो क्या ट्रम्प आज उन्हें वो इज्जत देते जो आज दे रहे हैं। उनसे मिलना अपना सौभाग्य बता रहे हैं और उन्हें व्हाइट हाउस आने का न्योता दे आए हैं ये जानते हुए कि किम जोंग के सिर पर लाखों लोगों का खून, रिश्तेदारों की हत्या और मानवाधिकारों के हनन के बड़े आरोप हैं।

दोनों की मुलाकात में जो एक बात साफ नहीं है वो ये कि परमाणु निरस्त्रीकरण किस तरह होगा? उत्तर कोरिया अपने परमाणु हथियार छोड़ने के लिए क्या कदम उठाएगा? इसकी समय सीमा भी तय नहीं की गई है। उत्तर कोरिया का अकेला सहयोगी चीन जो इस समिट तक पहुंचने की अहम कड़ी रहा उसका जिक्र तक नहीं। ये भी साफ नहीं है कि आगे की बातचीत किस स्तर पर होगी। जेफरी लेविस, जो ईस्ट एशिया नॉन प्रोलीफरेशन प्रोग्राम के डायरेक्टर हैं, ने इसे एक मजाक बताया। उनके मुताबिक, 'अब से पहले उत्तर कोरिया ने जितने भी समझौते किए हैं, ये समझौता उन सब से कमजोर है।

असली समझौते को हासिल करने की लंबी राह

अमेरिका के मौजूदा राष्ट्रपति भले ही पहली बार उत्तर कोरिया के शासक से मिले हों लेकिन अमेरिका और उत्तर कोरिया में हुआ ये समझौता पहला नहीं है। इससे पहले 1992 , 2005 और फिर 2012 में भी समझौते के हाथ बढ़े। हर बार उत्तर कोरिया के साथ कोई डील हुई तो यही मुद्दा रहा कि उत्तर कोरिया परमाणु हथियार छोड़े और इसके बदले में उसे आर्थिक और सैन्य सुरक्षा के लाभ देंगे। 1992 में 1953 के युद्ध विराम के बाद जब उत्तर कोरिया और अमेरिका ने एक बार फिर कूटनीतिक बातचीत शुरू की, तब भी प्योंगयॉन्ग इसी तरह अलग-थलग पड़ा था। उस पर ऐसा ही आर्थिक दबाव था।

चीन उत्तर कोरिया को वैसे ही आर्थिक सुधार लाने के सुझाव दे रहा था जैसा चीन में हो रहा था। किम जोंग उन के दादा किम सुंग को अपने वजूद का खतरा था। लेकिन फिर सामने आया कि उत्तर कोरिया खुफिया तरीके से बम बना रहा था, जिसके लिए यूरेनियम स्मगल किया जा रहा था। उस समय बुश प्रशासन में कई कट्टरपंथी थे जिसमें शामिल थे अभी के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जॉन बोल्टन। फौरन उत्तर कोरिया के साथ तय समझौते को खत्म कर दिया गया। इस एकॉर्ड के समर्थक ये भी कहते हैं कि यूरेनियम का संवर्धन उत्तर कोरिया की अमेरिका के खिलाफ एक ढाल थी ताकि अमेरिका डील को खत्म न कर दे। दो सालों के बाद एक बहुपक्षीय 6 पार्टी टॉक के फ्रेमवर्क तले बातचीत शुरू की गई। इस बातचीत से 2005 में एक साझा बयान आया, जिसमें कोरियाई प्रायद्वीप के परमाणु निरस्त्रीकरण के कई फेज में करने की बात थी। इससे भी उम्मीद जागी लेकिन जल्दी ही ये समझौता भी बिखरने लगा। हफ्तों के अंदर अमेरिका ने उत्तर कोरिया के मकाउ के बैंकों में 23 मिलियन डॉलर फ्रीज कर दिए। पैसे ज्यादा नहीं थे लेकिन इससे चीन और उत्तर कोरिया तिलमिला गए और इसे साझा बयान का उल्लंघन माना. इसके लिए भी बहुत सारे जानकर बुश प्रशासन के कट्टरपंथियों, जिनमें बोल्टन शामिल हैं, को जिम्मेदार मानते हैं।

अमेरिका से जैसे-जैसे रिश्ते बिगड़ते गए उत्तर कोरिया ने जुलाई 2006 में 7 बैलिस्टिक मिसाइल टेस्ट किए। अपना पहला परमाणु परीक्षण उसी साल अक्टूबर में किया। फिर अमेरिका ने उत्तर कोरिया को वो पैसे वापस किए जो मकाउ में फ्रीज किए गए थे। ईंधन भिजवाया गया और फिर जाकर योंब्यों रिएक्टर बंद हुआ और उसने अपने परमाणु कार्यक्रम की कुछ जानकारी दी। पर्यवेक्षकों को देश में आने की इजाजत तो दी लेकिन वो किन चीजों का निरीक्षण कर सकते हैं इस पर उत्तर कोरिया का नियंत्रण था। फिर फरवरी 2012 में भी उत्तर कोरिया और अमेरिका के बीच समझौता हुआ लेकिन फिर हफ्तों में डील खत्म हो गई और उत्तर कोरिया ने मिसाइल लांच का परीक्षण किया। किम वंश की तीन नस्लों और उनके दौर के अमेरिकी प्रशासन के सामने सबसे बड़ी बाधा रही है समझौते पर टिके रहना। ये सिर्फ उत्तर कोरिया द्वारा डील तोड़ने की वजह से नहीं बल्कि अमेरिकी प्रशासन के उलझे इशारों की वजह से भी हुआ है। जहां प्रशासन के अलग-अलग हिस्से पॉलिसी पर अपना नियंत्रण रखना चाहते हैं. । इसलिए अब ट्रम्प और किम के साझा बयान के शब्द कुछ भी हों, अमेरिका की उत्तर कोरिया से बातचीत का इतिहास बताता है कि कागज पर समझौता तो बस एक शुरुआत भर है, एक असली समझौते की राह तो काफी लंबी है।

– सुधीर जोशी

'हनुमान' ने भरी हुंकार

खींवसर से निर्दलीय विधायक हनुमान बेनीवाल ने कांग्रेस-भाजपा के खिलाफ खोला मोर्चा

राजस्थान में पिछले चार-साढ़े साल से भाजपा सरकार के खिलाफ मोर्चा खोलने और तीन बड़ी रैलियां आयोजित कर कांग्रेस-भाजपा की नींद उड़ाने वाले खींवसर के निर्दलीय विधायक हनुमान बेनीवाल ने चौथी रैली निकाली। 10 जून को सीकर मुख्यालय स्टेडियम पर किसान महारैली के रूप में 'हनुमान' ने हुंकार भर दी। हालांकि हनुमान की यह उड़ान कहां तक पहुंच पाती है, यह आगामी दिनों में जयपुर में होने वाले महासम्मेलन में ही चल पाएगा। फिलहाल राजनीति के गलियारों में हनुमान बेनीवाल के समर्थन में जुटी भारी भीड़ ने भूचाल ला दिया है। बेनीवाल ने यहां एक तरफ तीसरे मोर्चे का गठन किया वहीं दूसरी ओर जेएमएम (जाट, मुस्लिम, मेघवाल, माली, मीणा) की घोषणा कर दी। हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि जेएमएम की घोषणा व्यवस्था परिवर्तन की बयार है। इस पर मोहर जयपुर में लगेगी। ये भी कयास लगाए जा

ऐसे शुरू हुआ 'बेनीवाल' का सफर

बात 2008 की है। जब हनुमान बेनीवाल राजस्थान की खींवसर सीट से चुनाव जीते थे। उनकी पार्टी बीजेपी 200 सीटों वाली विधानसभा में महज 78 सीटों पर ही सिमट गई। उस वक्त प्रदेश बीजेपी में दो खेमे थे। पहले खेमे की कमान वसुंधरा राजे के पास थी और दूसरे खेमे में घनश्याम तिवाड़ी, जसवंत सिंह और गुलाबचंद कटारिया जैसे कद्दावर नेता। लेकिन हनुमान किसी खेमे में नहीं थे। विधायक बनने के बाद तो वसुंधरा से उनका छत्तीस का आंकड़ा था। वसुंधरा राजे के खास और मंत्री रहे यूनूस खान 2008 का चुनाव हार गए। लेकिन उनकी संगठन में दखल बरकरार रही। इधर, बेनीवाल वसुंधरा के खिलाफ खड़े हो गए थे। अब 2 दिसंबर 2011 का दिन आया। महाराजा कॉलेज का परिसर था और मौका था नए चुने गए छात्रसंघ कार्यालय के उद्घाटन का। यहीं से राजनीति की शुरुआत करने वाले बेनीवाल का इस दिन का भाषण काफी विवादों में रहा। अखबारों और खबरों की लीड बने इस भाषण ने भाजपा से उनका निकलना तय कर दिया। इस भाषण में इन्होंने वसुंधरा राजे को 'भ्रष्टाचार की देवी' तक कह दिया। इसके अलावा उन्होंने राजेंद्र राठौड़ और लालकृष्ण आडवाणी के बारे में तल्ख टिप्पणी की। बेनीवाल के बागी तेवर ने जब सारी सीमाएं लांघ दी तो, उन्हें भाजपा से बाहर का रास्ता दिखाया गया। सीकर जिले के खींवसर से विधायक बेनीवाल ने चार साल में प्रदेश की अपनी चौथी बड़ी रैली का आयोजन किया है। उन्होंने बीते साल नागौर व बीकानेर और इसी साल के शुरुआत में बाड़मेर में बड़ी रैलियां कर राजस्थान की बीजेपी सरकार के माथे पर पसीना ला दिया है। राजे सरकार द्वारा हालांकि किसानों के लिए 50-50 हजार रुपए कर्ज माफ करने का काम शुरू है लेकिन कर्जमाफी के लिए किसानों का साथ और रोजगार के लिए युवाओं के दम पर हनुमान बेनीवाल भीड़ जुटाने में हर बार सफल होते है। इससे पहले की तीनों रैलियों में भी विधायक हनुमान बेनीवाल ने दो से तीन लाख लोगों की भीड़ जुटाई जिससे भाजपा के लिए वह अब आंख की किरकिरी बन चुके है।

रहे हैं कि इस बीच अगर भाजपा बेनीवाल को मनाने में सफल हो जाती है तो यह मोर्चा फिर से भाजपा में विलय हो जाएगा। आपको बता दें कि बेनीवाल के साथ मिलकर तीसरे मोर्चे की कल्पना करने वाले डॉ. किरोड़ीलाल मीणा ने भाजपा का दामन थाम लिया है। इस बात को भी नहीं नकारा जा सकता है कि बेनीवाल सियासत में अकेले पड़ गए हैं। हालांकि अब तक की रैलियों में जुटी लाखों की भीड़ ने उन्हें कभी मायूस नहीं होने दिया लेकिन सियासत के अपने अलग-अलग मायने हैं। हुंकार रैली के मंच से जेएमएम का नाम लेकर सभी को साथ आने का आह्वान और भाजपा-कांग्रेस को सत्ता लोभी करार देना भी व्यवस्था परिवर्तन की संभावना को प्रबल बना रहा है। उन्होंने कहा कि जयपुर में अगली रैली कर भाजपा को सत्ता से उखाड़ फेंकेंगे। उन्होंने दावा किया कि वसुंधरा, गहलोत और पायलट ने आपस में समझौता कर रखा है। 2018 के चुनावों में भाजपा की 4 से अधिक सीटें नहीं आएगी। उसके विधायकों को विधानसभा जाने के लिए पार्टी को मात्र एक नैनो कार की दरकार होगी। बीकानेर, बाड़मेर, नागौर से डिब्बे तैयार हो चुके है। शेखावटी में इंजन तैयार हो जाने के बाद इंजन डिब्बो के साथ जयपुर कूच करेगा। यह भी कयास लगाए जा रहे हैं कि पहले उनके साथ रहे और अब भाजपा का दामन थामने वाले किरोड़ीलाल मीणा ने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष से मिलकर बेनीवाल के पक्ष में चौसर बिछा दी है। बेनीवाल का युवाओं और किसान वर्ग में अच्छा खासा प्रभाव है। बेनीवाल सोश्यल मीडिया का बखूबी इस्तेमाल करते है। उनके फेसबुक पेज पर करीब सवा दो लाख लाइक हैं। विधानसभा में उनके द्वारा पूछा गया हर एक सवाल और उसका जवाब आप सहज हासिल कर सकते हैं। 2013 से 2018 के बीच सबसे ज्यादा सवाल पूछने का रिकॉर्ड भी उन्हीं के नाम दर्ज है। माना जा रहा है कि अगर बेनीवाल जयपुर में होने वाली अपनी पांचवीं रैली में नई पार्टी की घोषणा करते हैं तो इससे भाजपा को नुकसान होगा ही जाट वोट बैंक में सेंध लगने से कांग्रेस को भी झटका लगेगा।

'मिर्धा' की परंपरा को आगे बढ़ा रहे

नागौर में एक नेता हुए नाथूराम मिर्धा। कुचेरा के रहने वाले मिर्धा 1957 में पहली बार नागौर के विधायक बने थे। 1971 से 1996 तक वो लगातार नागौर से सांसद रहे। उनके क्षेत्र के लोग आज भी उन्हें नाथू बाबा के नाम से याद करते हैं। उनके बारे में कहा जाता है कि अगर गरीब से गरीब किसान एक पोस्टकार्ड पर अपनी समस्या लिखकर उनके पते पर भेज देता था तो समस्या हल हो जाती थी। जनता से जुड़ाव की वजह से वे अपनी मौत के दो दशक बाद भी जनता की यादों में बसे है। 2009 में जब नाथूराम मिर्धा की पोती डॉ. ज्योति मिर्धा नागौर से लोकसभा का चुनाव जीतने आई थीं तो नारा दिया 'बाबा की पोती, नागौर की ज्योति'। ज्योति मिर्धा भले ही नाथूराम मिर्धा की सियासी वारिस हों लेकिन बेनीवाल नाथूराम मिर्धा की राजनीतिक परंपरा से ही आने वाले राजनेता हैं। नागौर में हनुमान बेनीवाल का घर स्टेडियम के एकदम सामने है। जब कभी यहां पर फौज की भर्ती दौड़ होती है तो वो गांव से आए प्रतिभागियों के लिए अपना घर खोल देते हैं। इलाके के हर आदमी के पास उनका नंबर है। वो खुद अपना फोन उठाते हैं। अगर नहीं उठा पाते तो पलटकर फोन करते हैं। पुलिस वाले ने रोक रखा है, पटवारी बदमाशी कर रहा है, तहसील में काम नहीं हो रहा है, बिजली-पानी का कनेक्शन नहीं मिल रहा है, लोग बिना झिझक के उन्हें फोन करते हैं और काम हो जाता है। जनता से उनका कनेक्ट कमाल का है। बेनीवाल उनसे मिलने आने वालों का नाम याद रखते हैं। हर बार मिलने पर हाल-चाल पूछते हैं। वे देहात से आने वाले नौजवान में यह भरोसा पैदा करने में कामयाब हुए हैं कि अगर कोई दिक्कत आती है तो वो अकेला नहीं है। उनके भाषणों का अंदाज खास तौर पर पसंद किया जाता है। लोगों के दिमाग में उनकी छवि धांसू नेता की है।

दिलचस्प क्यों और कैसे होगा?

बाड़मेर जिले में हुई रैली को तो राज्य सरकार की इंटेलिजेंस एजेंसियों ने रिफायनरी निर्माण कार्य शुरुआत की पीएम मोदी की रैली से भी बड़ी बताया। इससे विधायक बेनीवाल का कद और बढ़ गया, वहीं राज्य सरकार की भी नींद उड़ गई। तभी से भाजपा आलाकमान के पास बेनीवाल की गतिविधियों की पूरी अपडेट पहुंचाई जा रही है। ऐसे में माना जा रहा है कि वे बीजेपी में शामिल हो सकते है। यदि वे बीजेपी का दामन थाम लेते हैं तो फिर मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के खिलाफ बोलने वाले तीन बड़े नेताओं में केवल सांगानेर विधायक घनश्याम तिवाड़ी ही रह जाएंगे।

सदन में हुई तकरार

हनुमान बेनीवाल लगातार यह आरोप लगा रहे थे कि राज्य सरकार के कैबिनेट मंत्री यूनुस खान और आनंदपाल के बीच सांठ-गांठ है। उन्हीं के इशारे पर आनंदपाल को फरार करवाया गया है। इस वजह से दोनों के बीच की तल्खी और ज्यादा बढ़ गई। इस बीच यूनुस खान ने विधानसभा में बयान दिया कि वाहन के रजिस्ट्रेशन के समय इस बात की जानकारी नहीं होती है कि किस आदमी पर कितने मुकदमे चल रहे हैं। जिन लोगों पर 18-18 मुकदमे चल रहे हैं ऐसे लोग भी इस सदन में बैठे हुए हैं। यूनुस खां का इशारा बेनीवाल की तरफ था और इस बात से बेनीवाल तैश में आ गए। जवाब में उन्होंने यूनुस खान की ओर अपना पंजा आगे कर दिया। जवाब में यूनुस खान ने भी जूते का इशारा कर दिया। शोर-शराबे के चलते सदन की कार्रवाई एक दिन के लिए स्थगित करनी पड़ी। मदन राठौड़ और जीवनराम गोदारा का कत्ल जाट और राजपूत समाज के लिए अस्मिता का सवाल बन गया। गैंगस्टर आनंदपाल सिंह राजपूत युवाओं के बीच इसलिए हीरो बनकर उभरा क्योंकि उसने मदन राठौड़ की हत्या का बदला लिया था। इधर, जाट युवाओं के बीच हनुमान बेनीवाल इसलिए हीरों हैं क्योंकि वो अकेले आदमी हैं जो जीवनराम के हत्यारे आनंदपाल सिंह के खिलाफ खड़े हुए थे।

– भरत कुमावत

गुरुवंदना

तस्मै श्री गुरुवे नमः

भारतीय संस्कृति में गुरु का सर्वोच्च स्थान है। गुरु और गोविन्द दोनों खड़े हों तो पहले गुरु को नमन किया जाएगा क्योंकि गोविन्द से मिलाने का माध्यम वे ही बने।

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा ही व्यास पूर्णिमा कहलाती है। इसी पूर्णिमा को महर्षि वेदव्यास का जन्म हुआ था। अत: 27 जुलाई 2018 को गुरु पूर्णिमा पर गुरु महिमा का गुणगान अपेक्षित है। गुरुपूजन पूर्ण सात्विक, श्रद्धा व भक्तिभाव से किया जाना चाहिए। मानव समाज 'गुरु' का सदा-सर्वदा ऋणी रहेगा। मनुष्य जन्म ले लेता है, किन्तु उसका समाजोपयोगी व ईश्वरोन्मुखी रूपान्तरण गुरु द्वारा ही हो पाता है। गुरु ज्ञानदाता है। ज्ञान के अभाव में मनुष्य पशु तुल्य है। 'गुरु कृपा हि केवलम्' से तात्पर्य गुरु कृपा महत्वपूर्ण है। गुरु कृपा से ही ईश्वर कृपा की प्राप्ति हो सकती है। अत: गुरु दीक्षा अवश्य ही लेनी चाहिए। शिक्षा और दीक्षा में अन्तर समझने की जरूरत है। दीक्षा वह संस्कार है जो शिष्य को आजीवन सुसंस्कृत बनाए रखता है। संस्कार धारण से चरित्र निर्माण अवश्यम्भावी है। भारत प्राचीनकाल में विश्व का आध्यात्मिक गुरु रहा है। नालन्दा और तक्षशिला विश्वविद्यालय भारत में आध्यात्मिक शिक्षण के केन्द्र रहे हैं। वस्तुत: पहले शिक्षा नहीं, शास्त्र पढ़ाए जाते थे और संस्कार प्रदान किए जाते थे। गुरु द्वारा शिष्य के चरित्र में विद्या का समावेश किया जाता था। अध्यात्मिक विद्या में पूर्ण विज्ञान समाहित था। आत्मिक ज्ञान, अर्थात् आत्मा के गुणों का अंकुरण हर शिष्य में प्रस्फुटित होता था। व्यक्ति का सर्वांगीण विकास आत्म अन्वेषण पर केन्द्रित था। मानव जीवन व्यवस्थित पारदर्शी व दीर्घजीवी थी, अत: समाज में संयम व सौहार्द बना रहता था।

भगवान श्री राम एवं श्री कृष्ण ने भी गुरु आश्रम में ही विद्याध्ययन किया। राम अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र थे। किन्तु विद्या प्राप्ति के लिए वन स्थित गुरु विश्वामित्र आश्रम में रहना पड़ा। कृष्ण ने भी गुरु संदीपन के आश्रम में विद्या अध्ययन किया। सुदामा इसी गुरुकुल में उनके सहपाठी थे, दोनों प्रगाढ़ मित्र थे। गुरुवर वशिष्ठ भी सर्व विद्या गुण सम्पन्न थे। श्री कृष्ण योग विद्या ग्रहण करने से ही योगेश्वर बन पाए। श्रीमद्भागवत गीता में कृष्ण द्वारा शिष्य अर्जुन को दिया गया ज्ञान जब तक पृथ्वी पर कायम रहेगा वह मानव मात्र का मार्गदर्शी रहेगा। श्रीकृष्ण को जगद्गुरु कहा जाता है - 'कृष्णं वंदे जगद्गुरुं'। गुरु ही आध्यात्मिक जीवन का मार्गदर्शक है, पथप्रदर्शक है, जो अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करने के लिए सूर्य के समान है। गुरु का ध्यान व सम्मान करने से शिष्य की दृष्टि दिव्य हो जाती है। विश्व का वैभव प्राप्त हो जाता है। इसीलिए गुरु को साक्षात् परब्रह्म भी कहा गया है। वह जो संस्कार प्रदान करता है, वे आजीवन अक्षुण्ण रहते हैं।

गुरु पूर्णिमा का प्रतिवर्ष आयोजन समाज को आध्यात्मिकरण का बोध कराता है।

- रमेश गोस्वामी

पाठक पीठ

संविधान की अनदेखी ठीक नहीं

प्रत्यूष के पिछले अंक में कर्नाटक चुनाव व राज्यपाल द्वारा सरकार बनाने के आमंत्रण पर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को लेकर लिखी संपादकीय काफी गंभीर और पठनीय थी। पूरे लेख में नपे-तुले शब्दों में लोकतंत्र की वास्तविकता से रूबरू करवाया गया। वाकई ऐसे घटनाक्रम लोकतंत्र के स्तंभों को कमजोर करते हैं। संविधान लोकतंत्र की बुनियाद है। देश को चलाने वाले संविधान की अनदेखी लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है।

बी. प्रसाद, उद्योगपति

बेटियां नहीं मेहफूज

आसाराम मामले में कोर्ट का फैसला काबिले तारीफ था। पग-पग पर खतरा उठाने वाली पीड़िता और उसके परिवार के डगमगाते पैरों को इसलिए हिम्मत मिली की उसके साथ कई सच्चे और अच्छे लोग थे। अब समय आ गया है कि बेटियों को मेहफूज और मजबूत बनाने के लिए समाज को नजरिया भी बदलना होगा। साथ ही समाज को इस ओर भी पहल करनी होगी कि पीड़िता को ये न लगे कि वो अकेली है।

सुरेश उपाध्याय, उद्यमी व समाजसेवी

एक साथ समेटे है तमाम जानकारियां

देश-दुनिया की जानकारियों को प्रत्यूष ने एक साथ समेटकर रखा है। राजनीति के मुद्दे हो या धर्म-आध्यात्म की जानकारियां या फिर गृहसज्जा या पाककला सभी में रोचकता और ज्ञान का समावेश मिलता है। हर बार 'प्रत्यूक्ष' से नई जानकारी से रूबरू होने का मौका मिलता है। मेरी पसंदीदा मासिक पत्रिका होने के कारण इससे नई ताजगी और अपनेपन का अहसास होता है।

हरीश शर्मा, रा. विद्यापीठ

प्रत्यूष से हमारा भावनात्मक जुड़ाव

परिवार के लोग हर बार प्रत्यूष अंक का बेसब्री से इंतजार करते है। शहर के हर वर्ग से प्रत्यूक्ष का भावनात्मक जुड़ाव रहा है। फिर चाहे परिवार की खुशियां हो या दुख-दर्द, सभी में प्रत्यूक्ष की भागीदारी रहती है। पिछले अंक में कई ऐसे लेख थे जो दिल को छूने वाले थे। जहाजरानी रेशमा पर लिखा आलेख जज्बे और जुनून का जीवंत दस्तावेज थी।

डालचंद लोहार, व्यवसायी

NANDU TRAVELS

Regular A.C. Bus
With Toilet Facility &
Mobile Charging Points

For BIKANER

NON A.C. BUS FOR DELHI, AGRA, GANGANAGAR, HARIDWAR, GANDHIDHAM

Nandu Shrinath Travels

Udaipur Offices

(H.O.) 3, Town Hall Road Opp. Ashoka Cinema
Near Udaipur Filling Station, Udaipur.
Tel : 0294-2414841/42/43
Mob :- 96494-27777

(B.O.) 39, Laxmi Nagar, Sec.-8 Near Savina Circle
Bellow Hotel Relex Inn, Tel : 0294-2486868
Mob:- 80940-02424, 92141-77001, 92142-77001
Cargo Div:- 0294-2488999, 94602-86888

(B.O.) 3, Toran Bawadi
Billow Hotel Siddharht
Near Neelam Loudge, Udaipol, udaipur
Tel :- 0294-2414845/47, 76659-70007

FOR ONLINE TICKET BOOKING :- www.shrinathnandutravels.com

मानसून में फायदेमंद

टमाटर सूप

टमाटर का सूप जितना स्वादिष्ट होता है, उतना ही फायदेमंद भी। हर मौसम में लाल रसीले टमाटरों का सूप स्वास्थ्य के लिए वरदान है। मानसून ने दस्तक दे दी है। टप-टप के इस मौसम में गर्मा-गर्म टमाटर सूप शरीर को बीमारियों से बचाता हुआ देगा नई ताज़गी।

- निष्ठा शर्मा

टमाटर से बनाए जाने वाले व्यंजनों में टमाटर का सूप दुनिया भर में मशहूर है। फिर जब मानसून का मौसम हो तो टमाटर का गर्मागर्म सूप अपने खट्टे-मीठे स्वाद की वजह से सबका पसंदीदा हो जाता है। यह पूरक पोषण आहार है। यह पोषक तत्वों से तो भरपूर है ही, इस मौसम में अधिक फायदेमंद भी है।

सर्दी और वायरल से बचाव

टमाटर में मौजूद लाइकोपीन और बीटा केरोटीन शरीर की रोग-प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है, जो मानसून के दौरान होने वाली सर्दी या वायरल जैसी बीमारियों के खिलाफ सुरक्षा कवच का काम करती हैं।

पाचन तंत्र को करता है मजबूत

मानसून के मौसम में नियमित रूप से टमाटर का सूप पीने से पाचन तंत्र स्वस्थ रहता है। यह शरीर से विषाक्त पदार्थों को बहुत प्रभावी तरीके से बाहर निकाल कर पाचन शक्ति को बढ़ाता है।

कैंसररोधी

लाल टमाटर में मौजूद लाइकोपीन और कैरोटिनॉयड एंटीऑक्सीडेंट तत्व कैंसर कोशिकाओं को रोकने में मदद करते हैं। टमाटर का नियमित सेवन महिलाओं में प्रोस्टेट, गर्भाशय, स्तन कैंसर और पुरुषों में फेफड़े, गले, मुंह के कैंसर के जोखिम को कम करता है।

दिल को रखे सुरक्षित

टमाटर के सूप में मौजूद लाइकोपीन सीरम लिपिड ऑक्सीकरण को रोकता है, जो खराब कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित कर उच्च रक्तचाप की आशंका को कम कर देता है। इसका नियमित सेवन रक्त में एलडीएल कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स का स्तर कम करता है, जिससे हृदय को रक्त वाहिनियों में वसा का जमाव और हार्ट अटैक से बचाव हो सकता है।

वजन में कटौती

टमाटर के सूप में कैलोरी बहुत कम होती है और यह शरीर में एकत्रित अतिरिक्त वसा को गलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। फाइबर से समृद्ध सूप वजन कम करने के लिए आदर्श पेय है।

ऐसे बनाएं टमाटर सूप

सामग्री : करे लाल ताजे/टमाटर - 500 ग्राम, कटा प्याज-आधा कप, बारीक कटा लहसुन-1 चम्मच, कॉर्नफ्लोर-2 बड़े चम्मच, नमक-1 चम्मच, पिसी काली मिर्च-आधा चम्मच, मक्खन और जैतून का तेल, 1-1 बड़े चम्मच, चीनी-1 चम्मच, मिल्क क्रीम - 1 कप।

विधि : टमाटर को मिक्सी में बारीक पीस लें। कड़ाही में जैतून का तेल गर्म करके कटा प्याज और लहसुन हल्का भूनें। इसमें टमाटर प्यूरी मिलाकर हल्की आंच पर पकाएं। थोड़ा गाढ़ा होने पर कॉर्नफ्लोर को थोड़े-से पानी में घोल कर मिश्रण में मिलाएं। इसे बराबर हिलाते रहें। इसमें नमक, चीनी और काली मिर्च मिला कर एकसार होने तक पकाएं। पानी और नमक स्वाद के अनुसार मिला सकते हैं। आखिर में इसमें मक्खन मिला कर दो मिनट और पकाएं। गैस बंद करके मिल्क क्रीम मिलाएं। गर्मागर्म परोसें।

हड्डियों को बनाए मजबूत

टमाटर सूप में मौजूद विटामिन ए, सी और कैल्शियम हड्डियों के ऊतकों की मरम्मत करते हैं और हड्डियों को मजबूती प्रदान करते हैं। इसके नियमित सेवन से ब्रेन हेमरेज की आशंका काफी कम हो जाती है। इस सूप के नियमित सेवन से दृष्टि में सुधार और रतौंधी में फायदा होता है।

एसिडिटी में राहत

टमाटर का सूप रोजाना पीने से एसिडिटी की शिकायत दूर होती है। इसमें मौजूद क्लोरीन और सल्फर के कारण जिगर बेहतर ढंग से काम करता है और गैस की शिकायत दूर होती है।

त्वचा निखारें

टमाटर का सूप पानी की आवश्यक आपूर्ति कर नमी का स्तर बनाए रखता है, जिससे त्वचा पर मौसम का असर नहीं पड़ता। अपने एंटीऑक्सीडेंट तत्वों के कारण यह चेहरे पर झुर्रियां कम करने में अहम भूमिका निभाता है। त्वचा को गुलाबीपन और चमक प्रदान करता है। मानसून में त्वचा पर फोड़े-फुंसियां और पिंपल्स होने से रोकता है।

मधुमेह का प्रहरी

वर्षा के मौसम में खाए जाने वाले फ्राइड और चटपटे और मीठे व्यंजन मधुमेह रोगियों में रक्त शर्करा के स्तर बढ़ा देते हैं। क्रोमियम से भरपूर टमाटर सूप रक्त शर्करा को नियंत्रित और संतुलित करने में मदद करता है।

करधर नमः श्री नाथ नमः जय बजरंग बली पूर्वज बावजी नमः

श्याम साहू
9460908725

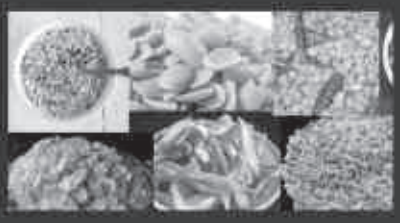

रामचन्द्र साहू
9928795328

श्री न्यू दुर्गा नाश्ता व चाट सेन्टर

विशेष तरह के पोहे

ऑर्डर पर कचौरी, समोसे, खमण, मेदे के गाठिये, नमकीन व सभी तरह की चाट आदि उपलब्ध है।

अशोक नगर, माया मिष्ठान के पास, रोड नंबर 12, उदयपुर

परतानी नाक कान गला अस्पताल

14, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, हंसा पैलेस के पास, सेक्टर 4, हिरणमगरी उदयपुर (राज.)
ई-मेल : lpartani@yahoo.com

डॉ. लोकेश परतानी
एम.एस. (ई.एन.टी.)

डॉ. सीमा परतानी
एम.डी. (एनेस्थिसिया)

डॉ. सुशांत जोशी
एम.एस. (ई.एन.टी.)

फोन :- 0294-2462150 मोबाइल :-9414162550 (For Appointment and Emergency)

सुविधाएं

- नाक, कान एवं गले के सभी प्रकार के रोगों की जाँच, इलाज व ऑपरेशन की सुविधा।
- सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा कान व गले के ऑपरेशन की सुविधा।
- मशीन द्वारा कान के सुनने की जाँच (ऑडियोमेट्री एवं इंपिडेंस ऑडियोमेट्री) की सुविधा।
- उच्च तकनीक के डिजिटल श्रवण यंत्र (Digital Hearing Aid)
- नाक, कान एवं गले की एंडोस्कोपी (कम्प्यूटर द्वारा) जाँच की सुविधा।

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

मेष : राजकीय एवं शासकीय मामलों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। माह के दौरान कार्य क्षेत्र में कुछ न कुछ परेशानियां रहेंगी, परन्तु हौसला रखते हुए काम करेंगे तो सफल रहेंगे। मानसिक सन्तुलन बना कर रखना होगा, अचानक स्थिति परिवर्तन के योग बनेंगे। स्वास्थ्य के प्रति भी सचेत रहें।

वृषभ

वृषभ : भाई-बहिनों से मतभेद दूर होंगे, माह का पूर्वार्द्ध अच्छे परिणाम देने वाला होगा। पारिवारिक मांगलिक कार्यक्रमों में व्यस्त रहेंगे, भाग्य साथ देगा, स्वास्थ्य में अकस्मात गिरावट, हर किसी पर भरोसा न करें, कार्य क्षेत्र सामान्य रहेगा।

मिथुन

मिथुन : विकास के अवसर बढ़ेंगे, साझेदारी लाभप्रद हो सकती है, जल्दबाजी में फैसला न लें, क्रोध एवं तनाव बना रहेगा। किसी वस्तु विशेष के प्रति चाह बढ़ेगी, लेकिन सावधान रहें। सन्तान पक्ष की ओर से शुभ समाचार की प्राप्ति संभव, शारीरिक पीड़ा विशेषकर कमर दर्द से परेशानी होगी।

कर्क

आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है, अनियोजित खर्च पर नियंत्रण ज़रूरी है। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां भी हो सकती हैं, नई योजनाएं नहीं बनाएं, कार्य क्षेत्र में उन्नति, दाम्पत्य जीवन में क्लेश संभव।

सिंह

माह का पूर्वार्द्ध अच्छे परिणाम देने वाला है। शादी योग्य युवक-युवतियों को खुशखबर मिलेगी। संतान एवं परिवार में असहयोगात्मक रवैया रहेगा, बनते हुए कार्यों में विघ्न आयेंगे, सिरदर्द या रक्त सम्बन्धी कोई विकार उत्पन्न हो सकता है, कार्य क्षेत्र सामान्य रहेगा।

कन्या

कार्य क्षेत्र में महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्क होंगे एवं लाभ भी मिलेगा, नवीन योजनाएं बनेंगी, परन्तु क्रियान्वयन में समय लगेगा, माह के उत्तरार्द्ध में आर्थिक उलझनें पैदा होंगी, विद्यार्थी विशेष रूप से सावधानी बरतें। कार्य क्षेत्र में सफलता, परन्तु मन में अशान्ति रहेगी।

तुला

लाभ के लिए किये गये प्रयास सार्थक होंगे, जुलाई के प्रथम सप्ताह बाद कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का माध्यम बनेगा। अवसर खोएं नहीं। हालांकि सरकारी क्षेत्र का कोई काम है तो उसमें सफलता के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। यात्रा प्रवास टालें, दुर्घटना संभव।

वृश्चिक

पारिवारिक एवं आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा, नियोजित योजनाओं में विघ्न बाधाएं आ सकती हैं, कठिन परिस्थितियों के बावजूद आपके नये संसाधन बनेंगे। अनैतिक कार्यों से दूर रहें, शत्रु आपके विरूद्ध षड़यन्त्र कर सकते हैं। स्वास्थ्य सामान्य, माह का पूर्वार्द्ध कष्ट कारक रहेगा।

धनु

यह माह कार्य क्षेत्र में सफलता दिलाएगा और संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शरीर में विकार, गुप्त रोग भी सम्भव है। बनते कार्यों में विघ्न की संभावना है, क्रोध मानसिक तनाव दे सकता है, आय पक्ष सुदृढ़ होगा।

मकर

किसी नवीन कार्य योजना पर विचार-विमर्श एवं क्रियान्वयन होगा। धार्मिक कार्यों के प्रति रूचि रहेगी। आर्थिक उलझनों से मन में खिन्नता, दूरगामी यात्राओं के योग बनेंगे। माह के उत्तरार्द्ध में सिर-दर्द या आँखों में कष्ट हो सकता है, गृहस्थी में तनाव, आय पक्ष सामान्य, संयम रखना श्रेयस्कर रहेगा।

कुम्भ

संतान-पक्ष से चिंता एवं व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। कुछ प्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल बनाये रखे, लाभ ही मिलेगा, स्थाई सम्पति सम्बन्धित मामले पेचीदा रूप ले सकते हैं। धार्मिक कार्यों पर खर्च होवे, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आय के स्थाई साधनों की तलाश रहेगी।

मीन

यह माह पुरुषार्थ एवं परिश्रम का है, निकट के मित्र या सम्बन्धी से सहयोग प्राप्त होगा एवं बिगड़े काम बनेंगे। संतान पक्ष से परेशानी, स्थान परिवर्तन के योग भी हैं। कर्म क्षेत्र में विस्तार, साझेदारी से बचें, दिवास्वप्न से ऊपर उठें, आय पक्ष कमजोर लेकिन स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

Purohit Cafe

A South Indian Food Joint

N. K. Purohit

आपका विश्वास ही हमारी पहचान

वर्ष 1970 से 1980 तक दुबई में तथा 1981 से 1986 तक लंदन-अमेरिका में सफल सेवाओं के बाद अब 1987 से उदयपुर शहर में

(तीन दशक से आपके विश्वास पर खरा सिद्ध)

❊ कैफे में पधारकर एक बार सेवा का मौका अवश्य देवें। ❊ आप व आपके परिवार की जायकेदार और लाजवाब पसंद, शुद्ध और स्वादिष्ट इडली, डोसा, मसाला और अन्य व्यंजन। ❊ सपरिवार बैठने की व्यवस्था। ❊ पूर्ण रूप से वातानुकूलित, शान्त एवं आरामदायक। ❊ सेवकों द्वारा विनम्र आवभगत।

"Anand Plaza" Nr. Ayad Bridge, University Road,
Udaipur (Raj.) 313 001 Ph. : 0294-2429635
Visit us : www.purohitcafe.com

सनाढ्य समाज की प्रतिभाएं सम्मानित

उदयपुर। सनाढ्य समाज-मेवाड़ एवं सनाढ्य समाज सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में 3 जून को पुष्प वाटिका में आयोजित समारोह में समाज की प्रतिभाओं का सम्मान व समाज की पत्रिका का विमोचन किया गया।

मुख्य अतिथि मेवाड़ विश्वविद्यालय के कुलप्रति प्रो. रमेश चन्द्र तिवारी, विशिष्ट अतिथि डॉ. सतीश चन्द्र तिवारी, त्रिभुवन नाथ पानेरी, प्रो. सतीश चन्द्र भारद्वाज, जयप्रकाश सनाढ्य, कमलनाथ पांडे, अरूणा शर्मा, पंकज कुमार शर्मा, रामजीवन दुबे, हरीश आर्य, अम्बालाल सनाढ्य एवं शकुन्तला सनाढ्य थे। अध्यक्षता दिनेश पानेरी ने की। स्वागत उद्बोधन आदित्य पांडे, मंडल प्रतिवेदन डॉ. अनिल शर्मा तथा वित्तीय प्रतिवेदन राजेन्द्र प्रसाद सनाढ्य ने प्रस्तुत किया। समारोह में डॉ. चन्द्रप्रभा शर्मा, महेन्द्र कुमार शर्मा, जयप्रकाश-फतह कुंवर सनाढ्य, जितेन्द्र नाथ पुरोहित, बसन्तबाला लवानिया, रामजीवन दुबे, नत्थीलाल-उषा शर्मा, त्रिलोक सनाढ्य, विनोद पांडे, मंजु शर्मा, दुर्गेश पुरोहित, अनिल शर्मा, नरेश सनाढ्य, संजय सनाढ्य, राजेन्द्र प्रसाद सनाढ्य, जोगेन्दर नाथ पुरोहित, गजेन्द्र सनाढ्य, आशा शर्मा को सम्मानित किया गया। अतिथियों ने सनाढ्य सरिता के उदयपुर विशेषांक का विमोचन किया। संचालन डॉ. नरेन्द्र सनाढ्य ने व धन्यवाद ज्ञापन भगवान शंकर सनाढ्य ने किया।

बिलोचिस्तान पंचायत पदाधिकारी सम्मानित

उदयपुर। शिवशक्ति सेवा समिति की ओर से बिलोचिस्तान पंचायत के निर्विरोध निर्वाचित पदाधिकारियों का सम्मान समारोह कृष्ण लीला रेजन्सी में हुआ। समिति अध्यक्ष दीपक बिलोची ने बताया कि बिलोचिस्तान पंचायत चुनाव में निर्वाचित पदाधिकारियों अध्यक्ष नानकराम कस्तूरी, महासचिव विजय आहुजा, उपाध्यक्ष सुरेश कटारिया, जितेन्द्र तलरेजा, कार्यकारिणी सदस्य नरेन्द्र तलरेजा का सम्मान किया गया। शिवशक्ति समिति के महासचिव हेमन्त गौड़ ने बताया कि अध्यक्ष व महासचिव ने अपने स्वागत भाषण में समाज उत्थान की जानकारी दी। कार्यक्रम में दिनेश खथुरिया, जितेन्द्र कालरा, नरेन्द्र तलरेजा, चिराग खथूरिया आदि उपस्थित थे।

द सक्सेस की छात्रा इण्डिया टॉपर

उदयपुर। 12वीं कक्षा के घोषित परीक्षा परिणाम में उदयपुर द सक्सेस पॉइंट की छात्रा शगुफ्ता लुकमानी ने ऑल इण्डिया टॉपर सूची में जनरल महिला वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। शगुफ्ता संस्थान की 12वीं कॉमर्स की नियमित छात्रा रही हैं। द सक्सेस पॉइंट संस्थान के निदेशक दिलीप सिंह यादव ने बताया कि शगुफ्ता को 4 जून को दिल्ली में मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित समारोह 'गुण गौरव- 2018' में मानव विकास संसाधन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर एवं राज्यमंत्री उपेन्द्र कुशवाह ने सम्मानित किया।

यूसीसीआई : चौधरी पुनः निर्वाचित

उदयपुर। उदयपुर चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री की वार्षिक साधारण सभा की बैठक यूसीसीआई भवन के पीपी सिंघल ऑडिटोरियम में 6 जून को 11 बजे हुई। जिसमें यूसीसीआई के वर्तमान अध्यक्ष हंसराज चौधरी आगामी सत्र 2018-19 के लिए भी पुनः यूसीसीआई के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए। वरिष्ठ उपाध्यक्ष, आशीष सिंह छाबड़ा भी पुनः निर्विरोध वरिष्ठ उपाध्यक्ष चुने गए।उपाध्यक्ष के पद पर शुभ मैनेजमेन्ट एकेडमी की डॉ. अंशु कोठारी के निर्वाचन

की घोषणा की गई। वरिष्ठ उपाध्यक्ष छाबड़ा ने चुनाव अरविन्द सिंघल, चेम्बर के सभी पूर्वाध्यक्षों एवं अधिकारी बी. आर. भाटी व चेम्बर के संरक्षक सभी गणमान्य सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

लाड़िया दम्पती का अभिनंदन

उदयपुर। लायन्स क्लब्स इंटरनेशनल(एन्डोर्सी) के अन्तर्राष्ट्रीय निदेशक बनने पर पिछले दिनों लायन्स सेवा सदन में प्रमुख समाज सेवी एवं उद्योगपति वी. के. लाडिया का लायन्स क्लब लेकसिटी व लायनेस क्लब लेकसिटी सदस्यों की ओर से आयोजित भव्य समारोह में सम्मान किया गया। उनके साथ श्रीमती पूनम लाड़िया का भी अभिनंदन किया गया। लायन्स क्लब अध्यक्ष सुरेश मेहता लायनेस क्लब अध्यक्ष आशा मेहता ने क्लब के माध्यम से लाडिया द्वारा किए गए समाजोपयोगी कार्यों की जानकारी दी। लायन्स क्लब इन्टरनेशनल के अध्यक्ष नरेश अग्रवाल ने लाडिया दम्पत्ती को सम्मानित किया। इस अवसर पर लायन्स आर. के. चतुर, वी. सी. व्यास, पीयूष धर्मावत आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

डॉ. सरीन को प्राइड ऑफ इंडिया अवार्ड

उदयपुर। इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली की ओर से उदयपुर के डॉ. देवेन्द्र सरीन को प्राइड ऑफ इंडिया अवॉर्ड-2018 से नवाजा गया। गीतांजली मेडिकल कॉलेज में कार्यरत डॉ. सरीन को यह अवार्ड चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा में बच्चों के स्वास्थ्य संबंधी शोध व सामाजिक कार्यों में अहम भूमिका के लिए दिया गया।

हिजिलि व इंटक में वेतन समझौता

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड एवं हिन्दुस्तान जिंक वर्कर्स फेडरेशन(इण्टक) के मध्य 10वां दीर्घकालीन वेतन समझौता पिछले दिनों उदयपुर में हुआ। मकान किराया, भूमिगत भत्ता, क्रशिंग भत्ता एवं पिट भत्ते व सामाजिक सुरक्षा के तहत मिलने वाले लाभ में भी बढ़ोतरी की गई जिससे श्रमिकों को प्रतिमाह दस से लेकर तीस हजार तक की बढोतरी 1 जुलाई 2017 से देय होगी। सरफेस पर कार्यरत संविदा श्रमिकों के लिए भी वेतन समझौता दिनांक 1 सितम्बर 2017 से पांच वर्ष के लिए किया गया। हेड-कॉरपोरेट कम्युनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि वार्ता में हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड प्रबन्धन की ओर से सुनील दुग्गल, मुख्य कार्यकारी अधिकारी अमिताभ गुप्ता, मुख्य वित्तीय अधिकारी लक्ष्मण सिंह शेखावत, मुख्य प्रचलन अधिकारी-माइन्स पंकज कुमार, मुख्य प्रचालन अधिकारी-स्मेल्टर संजय शर्मा, एचआर हेड एवं हेड-आईआर

समझौते का आदान-प्रदान करते सुनील दुग्गल व इण्टक नेता यू.एम. शंकरदास।

एम. एल. यादव, हिन्दुस्तान जिंक वर्कर्स फेडरेशन एवं फेडरेशन से सम्बन्धित यूनियन की ओर से यूएम शंकर दास, अध्यक्ष, के. एस. शक्तावत, महामंत्री, मांगीलाल अहीर, कार्यवाहक अध्यक्ष प्रकाश श्रीमाल, महामंत्री, जिंक स्मेल्टर मजदूर संघ, एम. के. लोढ़ा, महामंत्री हिन्दुस्तान जिंक केन्द्रीय कार्यालय श्रमिक संघ, घनश्याम सिंह राणावत, महामंत्री, एस.के. मोड, व. उपाध्यक्ष, रणजीत सिंह, उपाध्यक्ष चन्देरिया लेड जिंक स्मेल्टर मजदूर संघ, लालूराम मीणा, महामंत्री, जावर माइन्स मजदूर संघ, एम. के. सोनी, महामंत्री, विरेन्द्र मीणा, व. उपाध्यक्ष, आगूचा खान मजदूर संघ, राजेन्द्र कुमार मेनारिया, उपाध्यक्ष, अभयनाथ चौहान, सचिव, दरीबा खान मजदूर संघ एवं के. जी. पालीवाल, कार्यालय सचिव, हिन्दुस्तान जिंक वर्कर्स फेडरेशन की ओर से हस्ताक्षर किये।

इन्दिरा आईवीएफ बेंगलुरु में

उदयपुर। नि:संतानता के क्षेत्र में कार्यरत इन्दिरा आईवीएफ हॉस्पिटल प्रा. लि. ने बेंगलुरु के राजाजी नगर में अपने 41वें सेंटर का शुभारंभ किया। यह बेंगलुरु में ग्रुप का दूसरा सेंटर है। इन्दिरा आईवीएफ ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया ने कहा कि नि:संतानता की समस्या बढ़ रही है। आठ में से एक दम्पती नि:संतान है। सेंटर के आईवीएफ स्पेशलिस्ट डॉ. विनोद कुमार ने कहा कि उद्घाटन अवसर पर इन्दिरा आईवीएफ से इलाज पाकर अभी तक 28 हजार से ज्यादा नि:संतान दम्पती लाभान्वित हो चुके हैं।

राव बार कौंसिल सदस्य निर्वाचित

उदयपुर। बार कौंसिल ऑफ राजस्थान के हाल ही में सम्पन्न हुए चुनाव में उदयपुर बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष रतनसिंह राव विजयी घोषित हुए। इस अवसर पर राव ने कहा कि मेरी कार्यशैली में अधिवक्ता हित सर्वोपरि रहेगा। मेवाड़-वागड़ की प्रमुख मांग हाईकोर्ट बेंच की स्थापना के लिए वे सदैव संघर्षरत रहेंगे और उदयपुर में बेंच की स्थापना हो इसके लिए प्रयास करेंगे।

अग्रसेन बचत एवं साख समिति के चुनाव

के. एम. जिन्दल

सुरेश अग्रवाल

सी. पी. बंसल

उदयपुर। उदयपुर में विभिन्न पंचायतों के अग्रवाल परिवारों द्वारा बचत एवं ऋण के लिए वर्षों पूर्व बनाई गई महाराजा अग्रसेन बचत एवं साख समिति के द्विवार्षिक चुनाव लश्करी पंचायत अग्रवाल धर्मशाला में हुए। चुनाव अधिकारी आर के अग्रवाल ने बताया कि अध्यक्ष के एम जिंदल, उपाध्यक्ष खेमचंद अग्रवाल, सचिव सुरेश अग्रवाल तथा कोषाध्यक्ष सी पी बंसल निर्विरोध निर्वाचित हुए। समिति के निदेशक मंडल के लिए 6 निदेशकों के लिए मतदान कराया गया। जिसमें राजेश अग्रवाल, ज्ञानेश्वर बंसल, रमा मित्तल, नारायण अग्रवाल, मदनलाल अग्रवाल एवं राजदीप गोयल निदेशक मंडल के सदस्य निर्वाचित घोषित किए गए। चुनाव मैदान में कुल 10 प्रत्याशी थे।

सुधर्म विहार में अनुष्ठानपूर्वक पुरूषोत्तम मास की पूर्णाहुति

उदयपुर। पुरूषोत्तम मास अनुष्ठान के समापन पर कविता ग्राम स्थित सुधर्म विहार में समणी आनंदी का अभिनंदन किया गया। उन्होंने आदित्यनाथ मानव कल्याण समिति के संस्थापक सुधर्म सागर महाराज के सान्निध्य में श्रीमद्भागवत कथा के प्रतिदिन वाचन के साथ चन्द्रायन व्रत भी किया। जिसकी पूर्णाहुति पर 17 जून को उनका अभिनन्दन किया गया। संस्थान के उपाध्यक्ष रणजीत सिंह मेहता व सचिव काननबाला लोढ़ा ने उनका अभिनन्दन किया। सुधर्म सागर महाराज ने आशीर्वचन प्रदान किए। संचालन उमेश शर्मा ने किया। कार्यक्रम में 32 युगलों को प्रदान किए गए।

डॉ. महाजन को 'राइजिंग स्टार अवार्ड'

उदयपुर। जीबीएच मेमोरियल कैंसर हॉस्पिटल के मेडिकल ऑकोलॉजिस्ट डॉ. मनोज यू महाजन को इंडो अमेरिकन कैंसर एसोसिएशन और इंटरनेशनल एजेंसी ऑफ रिसर्च ऑन कैंसर ने अमेरिका में हुए कार्यक्रम में राइजिंग स्टार अवार्ड से नवाजा। ग्रुप डायरेक्टर डॉ. आनन्द झा ने बताया कि अवार्ड लेकर लौटने पर डॉ. महाजन का हॉस्पिटल में कैंसर मरीजों और उनके परिजनों ने अभिनन्दन किया। इस अवसर पर ग्रुप डायरेक्टर मेडिकल सर्विसेज डॉ. दिनेश शर्मा, डायरेक्टर डॉ. सुरभि पोरवाल, डिप्टी मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. राकेश अरोड़ा आदि भी मौजूद थे।

चित्तौड़ा उपाध्यक्ष मनोनीत

डूंगरपुर। सामाजिक सरोकार एवं मानव सेवा में सक्रिय ममता सेवा संस्थान, डूंगरपुर ने उदयपुर के जाने-माने शिल्पकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा को उदयपुर इकाई का उपाध्यक्ष मनोनीत किया है। संस्थान के अध्यक्ष डॉ. रजनीश जैन ने बताया कि चित्तौड़ा मानव सेवा एवं सामाजिक कार्यों में अपनी विशेष भूमिका अदा करेंगे।

सेल्फ ग्रुमिंग कार्यशाला

उदयपुर। रोटरी क्लब मीरा द्वारा पिछले दिनों एनआईसीसी पर महिलाओं के लिये सेल्फ ग्रुमिंग वर्कशॉप हुई। वर्कशॉप के दौरान उपस्थित क्लब अध्यक्ष ममता धुपिया व ग्रुमिंग विशेषज्ञ डॉ. स्वीटी छाबड़ा।

समर कार्निवल

जैन सोश्यल ग्रुप लेकसिटी द्वारा प्रतियोगियों को पुरस्कृत हुए चेयरमैन आर सी मेहता, पीआरओ अरूण मांडोत, ग्रुप सचिव महेन्द्र पोखरना, सुनील खोखावत, शुभम गांधी व अन्य।

प्रमोद अध्यक्ष, रमेश सचिव

उदयपुर। लायन्स क्लब लेकसिटी के वर्ष 2018-19 के अध्यक्ष के लिये वरिष्ठ सदस्य लायन प्रमोद चौधरी अध्यक्ष, के. वी. रमेश सचिव तथा राहुल जैन कोषाध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित हुए। नवीन कार्यकारिणी 1 जुलाई से कार्य आरंभ करेगी।

रोटरी उदयपुर को कई सम्मान

उदयपुर। रोटरी क्लब उदयपुर द्वारा यूसीसीआई के सिंघल सभागार में रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3054 के वर्ष 2017-18 का आभार प्रदर्शन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें गुजरात एवं राजस्थान के विभिन्न रोटरी क्लबों द्वारा वर्ष पर्यन्त जनहित में किये गये सेवा कार्यों को लेकर उन्हें प्रान्तपाल द्वारा सम्मानित किया गया। प्रान्तपाल मौलीन पटेल ने समारोह में विभिन्न सेवा कार्यों-गुजरात में गत वर्ष बाढ़ पीड़ितों की सहायता, सामुदायिक सेवा, वोकेशनल सर्विस, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता अभियान, रोटरी फाउण्डेशन में योगदान हैप्पी स्कूलों का निर्माण सहित रोटरी सेवा के पांचों एवेन्यू के तहत सर्वश्रेष्ठ सेवा कार्य करने वाले क्लबों एवं व्यक्तिगत स्तर पर सेवा कार्य करने वाले रोटरी सदस्यों को विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों से सम्मानित किया। रोटरी क्लब के अध्यक्ष डॉ. एन. के. धींग ने बताया कि अवार्ड समारोह में रोटरी क्लब उदयपुर को बेस्ट परमानेन्ट प्रोजेक्ट का अवार्ड प्रान्तपाल मौलीन पटेल एवं सोनल पटेल ने प्रदान किया।

महिला समृद्धि बैंक ने मनाया स्थापना दिवस

उदयपुर। दी उदयपुर महिला समृद्धि अरबन को-ऑपरेटिव बैंक के स्थापना दिवस पर ग्राहक जागरूकता एवं वित्तीय साक्षरता सप्ताह के तहत 13 जून को कार्यक्रम हुआ। बैंक अध्यक्ष विद्या किरण अग्रवाल ने बताया कि बैंक की सदस्यों को 30 जून तक एफडी पर 1 प्रतिशत अधिक ब्याज देने की घोषणा की गई। समारोह की मुख्य अतिथि डॉ. किरण जैन थी। मुख्य कार्यकारी अधिकारी विनोद चपलोत ने शिविर में डिजिटल बैंकिंग, वित्तीय लेन-देन की जानकारी दी। बैंक उपाध्यक्ष सुनीता मांडावत, निदेशक विमला मून्दड़ा, मीनाक्षी श्रीमाली, चंद्रकला बोल्या, नीता मूंदड़ा आदि मौजूद थीं।

यशवन्त मंगल बने विशेष सदस्य

उदयपुर। इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट्स ऑफ इंडिया नई दिल्ली के मूल्यांकन मानक बोर्ड में उदयपुर के सीए यशवन्त मंगल को विशेष आमंत्रित सदस्य मनोनीत किया गया है। मंगल को उनकी कार्य शैली एवं गत वर्षों में सामान और सेवा कर के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा तथा उत्कृष्ट योगदान को देखते हुए बोर्ड में उपयोगिता बढ़ाने के लिए सम्मिलित किया गया है।

पर्यावरण संरक्षण स्पर्द्धाएं

प्रतियोगी को पुरस्कार देते सांसद हर्षवर्द्धन सिंह डूंगरपुर। साथ में मुख्य वन संरक्षक राहुल भटनागर व अन्य।

उदयपुर। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को वन्य जीव मंडल एवं हिन्दुस्तान जिंक द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। वन्यजीव मंडल द्वारा सुखाड़िया विश्वविद्यालय सभागार में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यसभा सदस्य हर्षवर्धन सिंह डूंगरपुर थे। कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण आधारित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। मुख्य वन संरक्षक राहुल भटनागर व इन्द्रपाल सिंह मथारू ने वन एवं वन्यजीवों के संरक्षण पर विचार रखे। संचालन सहायक वन संरक्षक शैतान सिंह देवड़ा ने किया। हिन्दुस्तान जिंक के प्रधान कार्यालय में 'प्लास्टिक पोल्यूशन थीम' पर कार्यक्रम हुआ। मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने दैनन्दिन कार्यों में प्लास्टिक का उपयोग कम करने व उसके विकल्पों पर विचार की अपील की। उन्होंने बालिंग मशीन का भी उद्घाटन किया जो वेस्ट प्लास्टिक की बोतलों को रिसाइकिल ईंटों में परिवर्तित करेगी। प्रधान कार्यालय में हैड कॉर्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने कर्मचारियों के लिए ऑनलाइन पर्यावरण जागरूकता क्रॉसवर्ड लांच किया। जावर माइन्स में ऑपरेशन हेड एच. पी. कालावत व मजदूर संघ के महामंत्री लालूराम मीणा के सान्निध्य में कार्यक्रम हुए।

अनुष्का एकेडमी की नई ब्रांच शुरू

उदयपुर। डॉ. अनुष्का मेमोरियल एजुकेशनल सोसायटी की कांकरोली में नवीन शाखा का उद्घाटन 11 जून को संस्थापक डॉ. एस एस सुराणा ने किया।

इस अवसर पर प्रतियोगी परीक्षाओं की जानकारी देने के लिए सेमिनार भी हुई, इसमें निदेशक राजीव सुराणा व सह निदेशक भूपेश परमार ने वर्ष भर में आईबीपीएस, एसएससी, आईएएस, आरएएस जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के सूत्र साझा किए। डॉ. सुराणा ने बताया कि सेमिनार में नीलेश पानेरी व महेश चौधरी ने अंग्रेजी भाषा ज्ञान, जितेन्द्र मेनारिया ने रीजनिंग, दीपेश चौबीसा व राजसिंह ने गणित तथा सुदर्शन पालीवाल ने स्मार्ट स्टडी के गुर सिखाए। इस दौरान सैकड़ों विद्यार्थियों सहित उनके अभिभावक और अध्यापकों के अलावा संस्था अध्यक्ष कमला सुराणा एवं नवीन ब्रांच हेड मोहित बागोरा मौजूद थे।

सेवा सहयोगी सम्मानित

उदयपुर। इनरव्हील क्लब का सत्र 2017-18 के समापन समारोह में वर्ष पर्यन्त कार्यों में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सेवा सहयोगियों का सम्मान किया गया। अध्यक्ष शीला तलेसरा ने बताया कि वर्ष 2017-18 में 54 नए सदस्य बनाकर देश में इनरव्हील क्लबों में सबसे बड़ा क्लब बन गया। सचिव देविका सिंघवी ने वर्ष पर्यन्त किए सेवा कार्यों की जानकारी दी। इस अवसर पर क्लब की डायरेक्ट्री के कवर पेज का विमोचन भी हुआ। कार्यक्रम में डॉ. सीमासिंह, डॉ. स्वीटी छाबड़ा, लवली छाबड़ा, मंगला बापना, सुन्दरी छतवानी, रेखा भाणावत, अलका शर्मा, आशा तलेसरा, चन्दर खमेसरा, नरेन्द्र मारू, पीएस तलेसरा, रमेश सिंघवी, रीटा महाजन, रीटा बापना, दर्शना सिंघवी, कविता बड़जात्या, सुभाष सिंघवी, नक्षत्र तलेसरा और पूर्व प्रान्तपाल निर्मल सिंघवी सहित अन्य सहयोगियों को सम्मानित किया गया।

उदयपुर। एक्मे ग्रुप ऑफ कम्पनीज के संस्थापक-समाजसेवी **डॉ. मोहनलाल जी नागदा(जैन)** का 19 मई, 2018 को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा देवी, पुत्र आशीष व कविश नागदा, पुत्री अभिलाषा व भाई-भतीजों/पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। विभिन्न औद्योगिक संगठनों व सामाजिक संगठनों ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। श्री शांतिलाल जी गोदावत(चेतना मेडिकल्स) निवासी बेदला का 20 मई 2018 को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र संतोष कुमार, सुरेन्द्र कुमार व सुशील कुमार तथा पुत्री शशि दामावत, पौत्र-पौत्रियों वे दोहित्र-दोहित्रियों तथा भाइयों का वृहद एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

चित्तौड़गढ़। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं बेगूं के पूर्व विधायक स्व. पंकज पंचोली जी की धर्मपत्नी **श्रीमती शीला देवी जी** का 27 मई, 2018 को उनके निवास कुंभानगर में देहावसान हो गया। वे अपने पीछे पुत्र हर्षवर्धन(भाया), पुत्रिया रंजना व्यास, अर्चना अत्तरवाला, रमा शर्मा, अर्पिता तिवारी एवं कविता शर्मा सहित पौत्र एवं दोहित्र-दोहित्रियों का वृहद परिवार छोड़ गई हैं।

KTH

कमल भावसार
94141 57241
96360 50631

कमल टेन्ट हाऊस

बेस्ट वर्क, चुन्नी डेकोरेशन, टेन्ट, लाईट डेकोरेशन, केटरिंग मंडप

फ्लॉवर स्टेज एवं शादी-पार्टी सम्बंधित कार्य किए जाते हैं।

किराये पर गार्डन सुविधा उपलब्ध है।

Email- kamleshbhavsar25@gmail.com

आकार कॉम्पलेक्स के सामने, युनिवरसिटी मेन रोड, उदयपुर

With Best Compliments

ALLIED CONSTRUCTION

- Own Fleet of Buldozer's
- Hydraulic Excavators
- J.C.B.
- Dumpers
- Trailer
- Motor Grader
- Vibrator Soil Compactor
- Road Rollers and
- Breakers with Machines
  Tata - Hitachi Ex-200

ALLIED CONSTRUCTION

• Earth Movers • Civil Contractors • Fabricators

46, Moti Magri Scheme, Udaipur - 313001 INDIA
Tel .: (Off & Res) 2527306, 2560897 (W) 2640196
Fax : 0294-2523507 Email : allied_construction@rediffmail.com

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा

AADHAR PRODUCTS

डिसाइड®

हमारे अन्य उत्पाद

- डिसाइड वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर 4कि.ग्रा. जार
- डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
- एडवाइस वाशिंग पाउडर
- एडवाइस डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड डिशवाश बार
- डिसाइड डिशवाश टब
- डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड नमक
- डिसाइड बाथ सोप

AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
RIICO Industrial Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India

FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at aadharproducts@rediffmail.com

www.aadharproducts.in

THE SUCCESS GROUP OF INSTITUTIONS

"SUCCESS CAMPUS" Rudraksh Complex, University Road, Udaipur

SCHOOL'S	MIRANDA SR. SEC. SCHOOL	Hiran Magri Sec.5 Udaipur (Rajasthan) Ph: 0294-2464056,9414546333
	THE PRAYAS PUBLIC SCHOOL	Tekri Udaipur (Rajasthan) Mob: 9462514121
	SWAMI VIVEKANAND Sr. Sec. School	Mali Colony, New Anand Vihar, Udaipur (Rajasthan), Mob: 9462514102
	ROYAL ACADEMY Secondary School	Opp North Sunderwas, Pratap Nagar, Udaipur, Mob: 9116091101
COACHING	THE SUCCESS POINT	"SUCCESS CAMPUS" University Road, Udaipur (Rajasthan) Ph: 0294-2470087-88
COLLEGE	THE SUCCESS COLLEGE	"SUCCESS CAMPUS" University Road, Udaipur (Rajasthan) Ph: 0294-2470087-88
VOCATIONAL	THE SUCCESS POINT Institue Of Vocational Studies	"SUCCESS CAMPUS" University Road, Udaipur (Rajasthan) Ph: 0294-2470087-88

Founded on Trust. Envisioning Infinite Possibilities.

Becoming a leading Agri Chem company took us foresight, acumen and ability. But it all started with our foundation of trust. Our principles of complete business transparency and an adherence to the highest standards have made us global experts and a partner of choice in our business. We are confident that our belief in trust will lead us to infinite possiblities by leveraging our capabilities across the Agri Sciences value chain by providing integrated and innovative services & solutions by partnering with the best.

OUR BUSINESS PRINCIPLES

ADAPTABILITY
Constantly transforming ourselves like water, we are nimble footed and highly responsive to change.

TRUST
We work with integrity of purpose, honesty in action and fairness in all our dealings.

SPEED
Blazing ahead, we constantly strive to work with speed in the way we observe, think and act.

INNOVATION
The constant quest for horizon, the never ending search for a better, newer way to do things. Innovation is a way of life for us.

Inspired by Science

PI Industries Ltd

www.piindustries.com | info@piindustries.com